रजिस्ट्री सं० डी- 222

REGISTERED No. D-222

भारत का राजपत्र
The Gazette of India

प्राधिकार से प्रकाशित

PUBLISHED BY AUTHORITY

सं० 7] नई दिल्ली, शनिवार, फरवरी 12, 1972 (माघ 23, 1893)

No. 7] NEW DELHI, SATURDAY, FEBRUARY 12, 1972 (MAGHA 23, 1893)

इस भाग में भिन्न पृष्ठ संख्या दी जाती है जिससे कि यह अलग संकलन के रूप में रखा जा सके

(Separate paging is given to this Part in order that it may be filed as a separate compilation)

नोटिस

(NOTICE)

नीचे लिखे भारत के असाधारण राजपत्र 8 फरवरी 1971 तक प्रकाशित किये गये हैं :—

The undermentioned *Gazettes of India Extraordinary* were published up to the 8th February 1971 —

अंक (Issue No.)	संख्या और तिथि (No. and Date)	द्वारा जारी किया गया (Issued by)	विषय (Subject)
1	2	3	4

शून्य

—NIL—

ऊपर लिखे असाधारण राजपत्रों की प्रतियां प्रकाशन प्रबन्धक, सिविल लाइन्स, दिल्ली के नाम मांग-पत्र भेजने पर भेज दी जाएंगी। मांग-पत्र प्रबन्धक के पास इन राजपत्रों के जारी होने की तिथि से दस दिन के भीतर पहुंच जाने चाहिएं।

Copies of the *Gazettes Extraordinary* mentioned above will be supplied on indent to the Manager of Publications, Civil lines Delhi. Indents should be submitted so as to reach the Manager within ten days of the date of issue of these Gazettes.

विषय-सूची

	पृष्ठ
भाग I—खंड 1—(रक्षा मंत्रालय को छोड़कर) भारत सरकार के मंत्रालयों और उच्चतम न्यायालय द्वारा जारी की गई विधितर नियमों विनियमों तथा आदेशों और संकल्पों से सम्बन्धित अधिसूचनाएं . . .	157
भाग I—खंड 2—(रक्षा मंत्रालय को छोड़कर) भारत सरकार के मन्त्रालयों और उच्चतम न्यायालय द्वारा जारी की गई सरकारी अफसरों की नियुक्तियों, पदोन्नतियों, छुट्टियों आदि से सम्बन्धित अधिसूचनाएं	247
भाग I—खंड 3—रक्षा मंत्रालय द्वारा जारी की गई विधितर नियमों, विनियमों, आदेशों और संकल्पों से सम्बन्धित अधिसूचनाएं	—
भाग I—खंड 4—रक्षा मंत्रालय द्वारा जारी की गई अफसरों की नियुक्तियों, पदोन्नतियों, छुट्टियों आदि से सम्बन्धित अधिसूचनाएं,	227
भाग II—खंड 1—अधिनियम, अध्यादेश और विनियम	—
भाग II—खंड 2—विधेयक और विधेयकों संबंधी प्रवर समितियों की रिपोर्टें . .	—
भाग II—खंड 3 उपखंड (i)—(रक्षा मंत्रालय को छोड़कर) भारत सरकार के मंत्रालयों और (संघ-राज्य क्षेत्रों के प्रशासनों को छोड़कर) केन्द्रीय प्राधिकारों द्वारा जारी किए गए विधि के अन्तर्गत बनाए और जारी किए गए साधारण नियम (जिनमें साधारण प्रकार के आदेश, उप-नियम आदि सम्मिलित हैं) . .	383
भाग II—खंड 3 उपखंड (ii)—रक्षा मंत्रालय को छोड़कर) भारत सरकार के मंत्रालयों और (संघ-राज्य क्षेत्रों के प्रशासनों को छोड़कर) केन्द्रीय प्राधिकारों द्वारा विधि के अन्तर्गत बनाए और जारी किए गए आदेश और अधिसूचनाएं . .	593
भाग II—खंड 4—रक्षा मंत्रालय द्वारा अधिसूचित विधिक नियम और आदेश .	37
भाग III—खंड 1 महालेखा परीक्षक, संघ लोक-सेवा आयोग, रेल प्रशासन, उच्च न्यायालयों और भारत सरकार के अधीन तथा संलग्न कार्यालयों द्वारा जारी की गई अधिसूचनाएं	233
भाग III—खंड 2 एकस्व कार्यालय, कलकत्ता द्वारा जारी की गई अधिसूचनाएं और नोटिस	51
भाग III—खंड 3—मुख्य आयुक्तों द्वारा या उनके प्राधिकार से जारी की गई अधिसूचनाएं	15
भाग III—खंड 4—विधिक निकायों द्वारा जारी की गई विविध अधिसूचनाएं जिनमें अधिसूचनाएं, आदेश, विज्ञापन, और नोटिसें शामिल हैं	847
भाग IV—गैर-सरकारी व्यक्तियों और गैर-सरकारी संस्थाओं के विज्ञापन तथा नोटिसें .	37
पूरक संख्या 7—	
29 जनवरी, 1972 को समाप्त होने वाले सप्ताह की महामारी संबंधी साप्ताहिक रिपोर्ट	233
8 जनवरी, 1972 को समाप्त होने वाले सप्ताह के दौरान भारत में 30,000 तथा उससे अधिक आबादी के शहरों में जन्म तथा बड़ी बीमारियों से हुई मृत्यु सम्बन्धी आंकड़ें	243

CONTENTS

PART I—SECTION 1.—Notifications relating to Non-Statutory Rules, Regulations, Orders and Resolutions issued by the Ministries of the Government of India (other than the Ministry of Defence) and by the Supreme Court	157
PART I—SECTION 2.—Notifications regarding Appointments, Promotions, Leave etc. of Government Officers issued by the Ministries of the Government of India (other than the Ministry of Defence) and by the Supreme Court	247
PART I—SECTION 3.—Notifications relating to Non-Statutory Rules, Regulations, Orders and Resolutions issued by the Ministry of Defence	—
PART I—SECTION 4.—Notifications regarding Appointments, Promotions, Leave etc. of Officers issued by the Ministry of Defence	227
PART II—SECTION 1.—Arts, Ordinances and Regulations	—
PART II—SECTION 2.—Bills and Reports of Select Committees on Bills	—
PART II—SECTION 3.—SUB.-SEC. (i)—General Statutory Rules (including orders, bye-laws etc. of general character) issued by the Ministries of the Government of India (other than the Ministry of Defence) and by Central Authorities (other than the Administrations of Union Territories)	383
PART II—SECTION 3.—SUB.-SEC. (ii)—Statutory Orders and Notifications issued by the Ministries of the Government of India (other than the Ministry of Defence) and by the Central Authorities (other than the Administrations of Union Territories) ..	593
PART II—SECTION 4.—Statutory Rules and Orders notified by the Ministry of Defence ..	37
PART III—SECTION 1.—Notifications issued by the Auditor General, Union Public Service Commission, Railway Administration, High Courts and the Attached and Subordinate Offices of the Government of India ..	233
PART III—SECTION 2.—Notifications and Notices issued by the Patent Offices, Calcutta ..	51
PART III—SECTION 3.—Notifications issued by or under the authority of Chief Commissioners	15
PART III—SECTION 4.—Miscellaneous Notifications including Notifications, Orders, Advertisements and Notices issued by Statutory Bodies	847
PART IV—Advertisements and Notices by Private Individuals and Private Bodies ..	37
SUPPLEMENT No. 7—	
Weekly Epidemiological Reports fo rweek ending 29nd January, 1972.	
Births and Deaths from Principal diseases in towns with a population of 30,000 and over in India during week end 8th January, 1972	

भाग I—खण्ड 1

(PART I—SECTION 1)

रक्षा मंत्रालय को छोड़कर भारत सरकार के मंत्रालयों और उच्चतम न्यायालय द्वारा जारी की गई विधिवत नियमों, विनियमों, तथा आदेशों और संकल्पों से सम्बन्धित अधिसूचनाएं

[Notifications relating to Non-Statutory Rules, Regulations, Orders and Resolutions issued by the Ministries of the Government of India (other than the Ministry of Defence) and by the Supreme Court]

राष्ट्रपति सचिवालय

नई दिल्ली, दिनांक 20 जनवरी 1972

सं० 16-प्रेज०/72—राष्ट्रपति निम्नांकित व्यक्तियों द्वारा प्रदर्शित अति असाधारण विशिष्ट सेवा के उपलक्ष्य में उनको "परम विशिष्ट सेवा मैडल" प्रदान करने का अनुमोदन करते हैं :—

मेजर जनरल स्टेनली लेज़लो मेनेजिज, एस० सी० (आई० सी०-540), ग्रेनेडीयर्स।

मेजर जनरल वाल्टर एन्थोनी गुस्टेव पिन्टो (आई० सी०-605), गार्ड्स ।

मेजर जनरल विजय मोहन भट्टाचार्य (आई० सी०-1338), एम० बी० सी०, गढ़वाल राईफल्स ।

मेजर जनरल अरुण कुमार विस्वास (आई० सी०-1185), ए० ओ० सी०।

मेजर जनरल वेद प्रकाश (एम० आर०-177), ए० एम० सी०।

एयर वाइस मार्शल देबिश्रा सूबिया, वीर चक्र।

कोमोडोर दोराब रतनशा मेहता, आई० एन०।

कमोडोर जौन थौमस गौसलिन पेरीरा, ए० वी० एस० एम०, आई० एन०।

सीमा सुरक्षा दल

श्री गोलक मजुमदार, इन्स्पैक्टर जनरल, सीमा सुरक्षा दल।

सं० 17-प्रेज०/72—राष्ट्रपति निम्नांकित व्यक्ति द्वारा प्रदर्शित अति असाधारण विशिष्ट सेवा के उपलक्ष्य में उसको "परम विशिष्ट सेवा मैडल का बार" प्रदान करने का अनुमोदन करते हैं :—

रियर एडमिरल बंग राज सिंह, पी० वी० एस० एम०, आई० एन०।

सं० 18-प्रेज०/72—राष्ट्रपति निम्नांकित व्यक्तियों को पाकिस्तान के विरुद्ध हाल की संक्रियाओं में उत्कृष्ट वीरता के लिए "महावीर चक्र" प्रदान करने का सहर्ष अनुमोदन करते हैं :—

1. ब्रिगेडियर अनन्त विश्वनाथ नाटू, आई० सी० 4703),

(पुरस्कार की प्रभावी तिथि—3 दिसम्बर, 1971)

ब्रिगेडियर अनन्त विश्वनाथ नाटू पश्चिमी मोर्चे पर पूंछ सेक्टर में एक इन्फैन्टरी ब्रिगेड की कमान कर रहे थे। 4 दिसम्बर 1971 की रात को उनकी ब्रिगेड के रक्षित क्षेत्र पर दुश्मन ने दो इन्फैन्टरी ब्रिगेडों से भारी हमला किया जिन्हें तीन आर्टिलरी रेजिमेंट मदद दे रही थीं । इसके बाद शत्रु ने चार दिन और चार रात तक गुरपुर और बनवात के स्थानों पर एक के बाद एक लगातार हमले किये, जो इस ब्रिगेड के कब्जे में थे। ब्रिगेडियर नाटू ने बड़ी कुशलता और व्यावसायिक दक्षता से बचाव की योजना बनाई, उनका गठन किया और संचालन किया। बड़े धैर्य और स्थिरता से इन्होंने अपनी जान की तनिक भी परवाह न करते हुए उत्कृष्ट साहस से अपनी कमान को प्रोत्साहित किया और शत्रु के हमले को पीछे धकेल दिया। पूंछ सैक्टर की बहादुरी से रक्षा करते हुए उनकी ब्रिगेड ने शत्रु को भारी जानी नुक्सान पहुंचाया।

इस पूरी कार्यवाही में ब्रिगेडियर अनन्त विश्वनाथ नाटू ने अनुकरणीय साहस, उत्कृष्ट नेतृत्व और सराहनीय कर्त्तव्य-परायणता का परिचय दिया।

2. ब्रिगेडियर एन्टोनी हेरौल्ड एडवर्ड मिशीगन, (आई० सी०—4190)

ब्रिगेडियर एन्टोनी हेरौल्ड एडवर्ड मिशीगन पाकिस्तान के विरुद्ध हाल की संक्रियाओं के दौरान पूर्वी मोर्चे पर एक माउंटेन ब्रिगेड की कमान कर रहे थे। उन्होंने उठाली और दर्सना पर शत्रु के सुदृढ़ रक्षित स्थानों पर कब्जा करने का काम सौंपा गया था। उठाली पर हमले में जब उनके जवान शत्रु के स्वाचालित गनों और टैंकों की गोलाबारी से तीन तरफ से घिर गये तो शत्रु की धुआंधार गोलाबारी में उन्होंने परिस्थिति का खुद नियंत्रण संभाला. हमले का उट कर मुकाबला किया और अपने जवानों को ऐसे स्थानों में लगाया जहां से शत्रु पर आक्रमण किया जा सके। इन्होंने अपना

जान की तनिक भी परवाहन करते हुए अडिग साहस के साथ युद्ध संचालन किया और अपने जवानों को इतना प्रेरित किया कि वे शत्रु पर तूफान की तरह टूट पड़े और लक्ष्य हासिल कर लिया। बाद में, दर्सना के मजबूत ठिकानों पर कब्जा करने के लिए उन्होंने अपनी सेना को फिर से एकजुट किया और छोटे हथियारों और तोपखाने की गोलाबारी का मुकाबला करते हुए इलाके की खुद टोह करके प्राथमिक संक्रिया की और शत्रु के ठिकानों का बाहरी बाड़ा तोड़ दिया। बाद में इन्होंने मुख्य हमला किया और एकमात्र आक्रामक जोश और जवानों को बढ़ावा देते हुये घने सुरंग क्षेत्र में से होकर शत्रु के सुदृढ़ रक्षात्मक ठिकानों पर विनाशकारी हमला किया। वे एक बार फिर घमासान लड़ाई के बीच पहुंच गये और निजी उदाहरण से जवानों को प्रेरित करके मशीनगन, आर्टिलरी और मार्टर गोलाबारी की भयानक बाढ़ को तोड़ दिया और इस तरह निर्णायक विजय प्राप्त की। दर्सना पर कब्जा करने के बाद वे झेहिन्दा की ओर बढ़े और 48 घंटे में 50 किलोमीटर चल कर उन्होंने झेहिन्दा पर कब्जा कर लिया। इन्होंने शत्रु को भौंचक्का करके पूरी तरह धर लिया और आगे बढ़ने की तेज रफ्तार के कारण ही कई पुलों को ज्यों का त्यों सही हालत में ले लिया।

इन कार्यवाहियों में ब्रिगेडियर एन्टोनी हैरौल्ड एडवर्ड मिशीगन ने बड़े सैन्य कौशल से अपने ब्रिगेड का कमान किया और सेना की सर्वोच्च परम्पराओं के अनुकूल उत्कृष्ट वीरता और अनुकरणीय नेतृत्व का परिचय दिया।

3. ब्रिगेडियर हरदेव सिंह क्लेर,
(आई० सी०-493), सिगनल्स

ब्रिगेडियर हरदेव सिंह क्लेर पूर्वी मोर्चे पर पाकिस्तान के खिलाफ हाल की संक्रियाओं के दौरान माउन्टेन ब्रिगेड की कमान कर रहे थे। उन्होंने कमालपुर से तुरग नदी तक आगे बढ़ने के संचलन का नेतृत्व किया। इस दौरान इन्हे शत्रु की अनेक रुकावट डालने वाली गतिविधियों से मुकाबला तो करना ही पड़ा परन्तु कमालपुर, बक्शीगंज, जमालपुर, तंगाइल, मिर्जापुर और तुरग नदी के पश्चिमी किनारे पर दुश्मन के ठिकानों को भी तहस नहस करना था। इन सब कार्यवाहियों के दौरान ब्रिगेडियर क्लेर नेतृत्व करने वाला सैन्य टुकड़ियों के साथ रहे और अपनी जान की तनिक भी परवाह न करते हुए इन्होंने संक्रियाओं का निर्देशन किया। जमालपुर की लड़ाई के दौरान सेनाओं के संचालन में उन्होंने महान सैनिक कुशलता का परिचय दिया और घुंआधार लड़ाई में स्वयं कूद कर उन्होंने अपनी उन सैन्य टुकड़ियों को महान प्रेरणा दी जिन्होंने जमालपुर के दक्षिण में शत्रु के मोर्चों पर घेरा डाल रखा था। भारी जानी नुकसान होने के बावजूद उन्होंने संक्रियाओं का निर्देशन इतनी समझदारी और साहस के साथ किया कि शत्रु के निकलने की सारी कोशिशें नाकामयाब हो गई। उन्होंने शत्रु का भारी जानी नुकसान किया और उस के 379 सैनिक बन्दी बनाये। साथ ही भारी मात्रा में हथियार और गोलाबारूद भी उनके हाथ लगा।

इन सारी कार्यवाहियों के दौरान ब्रिगेडियर हरदेव सिंह क्लेर ने सेना की उच्चतम परम्पराओं के अनुकूल विशिष्ट साहस और प्रेरणादायक नेतृत्व का परिचय दिया और शत्रु का मुकाबला करते समय अपनी सुरक्षा की तनिक भी परवाह न की।

4. ब्रिगेडियर जोगिन्दर सिंह बख्शी,
(आई० सी०-4870),

(पुरस्कार की प्रभावी तिथि—7 दिसम्बर, 1971)

ब्रिगेडियर जोगिन्द्र सिंह बख्शी पूर्वी मोर्चे पर पाकिस्तान के विरुद्ध संक्रमक कार्यवाही के दौरान एक माउन्टेन ब्रिगेड की कमान कर रहे थे। 7 दिसम्बर और 16 दिसम्बर 1971 के बीच इस ब्रिगेड ने इनके नेतृत्व में कई बार सफल आक्रमण किए और शत्रु के अच्छी तरह मोर्चाबन्दी किए हुए कई इलाकों पर कब्जा कर लिया, जिससे "बोगरा" पर कब्जा करने में बड़ी आसानी हुई। ब्रिगेडियर बख्शी ने ऊंचे दर्जे की सैनिक दक्षता का परिचय दिया और उनकी साहसपूर्ण कार्यवाही ने शत्रु के होश-हवास उड़ा दिये और उसके प्रतिरोध को छिन्न-भिन्न कर दिया। परिणाम यह हुआ कि भारी संख्या में शत्रु के सैनिक हाथ आये जिसमें पाकिस्तानी सेना की 205 ब्रिगेड का कमांडर भी था।

इस संक्रिया के दौरान, ब्रिगेडियर जोगिन्दर सिंह बख्शी ने उत्कृष्ट वीरता दृढ़ निश्चय और सैन्य कौशल का परिचय दिया।

5. ब्रिगेडियर जोगिन्दर सिंह धराया,
के० सी०, वी० एस० एम०,
(आई० सी०-1984),

(पुरस्कार की प्रभावी तिथि—6 दिसम्बर, 1971)

ब्रिगेडियर जोगिन्दर सिंह धराया पूर्वी मोर्चे पर एक इंफैन्टरी ब्रिगेड की कमान कर रहे थे। ब्रिगेड कमान्डर के रूप में उन्होंने बहुत ही कुशलता से लड़ाई की योजना बनाई और सराहनीय तेजी के साथ जैसोर सैक्टर में अपनी ब्रिगेड की कार्यवाही शुरू की। उनकी ब्रिगेड पर लगातार चार बार हमला हुआ, लेकिन भारी जानी नुक्सान के बावजूद उनके सैनिक मोर्चे पर डटे रहे, जिसका मुख्य कारण था—सेनाओं का उत्तम सामरिक प्रयोग, अदम्य साहस और लगातार स्वयं मोर्चे पर रहकर नेतृत्व करना। उनके इस प्रकार कार्यवाही करने से शत्रु का भारी नुक्सान हुआ और वह पीछे हटने के लिये मजबूर हो गया। इसके बाद की आक्रामक कार्रवाइयों में भी ब्रिगेडियर धराया आगवाली टुकड़ियों के साथ रहे और तभी शत्रु की गोलाबारी से बुरी तरह जख्मी हुए। चूंकि हमारी सेनाओं के बंगला देश में आगे बढ़ने के लिए इस हमले का कामयाब होना बहुत जरूरी था, इसलिए कहने पर भी वे पीछे न हटे और पीछे हटने पर तब ही राजी हुए जब हमला कामयाब हो गया।

इस पूरी कार्रवाई में ब्रिगेडियर जोगिन्दर सिंह धराया ने असाधारण साहस का परिचय दिया और अपने निजी उदाहरण से सैनिकों में ऐसा जोश और आत्मविश्वास पैदा किया कि मुश्किल संक्रियाओं में भी हमें पूरी जीत हासिल हुई।

6. ब्रिगेडियर कृष्ण स्वामी गौरी शंकर,
(आई० सी०–3999),

(पुरस्कार की प्रभावी तिथि—5 दिसम्बर, 1971)

ब्रिगेडियर कृष्ण स्वामी गौरी शंकर एक इन्फैन्टरी ब्रिगेड की कमान कर रहे थे जिसे पश्चिमी मोर्चे पर डेरा बाबा नानक की रक्षा का भार सौंपा गया था। पूरी तरह तैयार और मजबूत किलाबन्द शत्रु के एक ऐसे इलाके पर कब्जा करने का काम इतनी ब्रिगेड को सौंपा गया था जहां शत्रु भारी संख्या में था। उन्होंने हमले की योजना बनाने में बड़ी दिलेरी, निर्भीकता और मौलिकता दिखाई। हमले के दौरान शत्रु के भारी टैंकों मझली मशीन गनों और तोपखाने की गोलाबारी की परवाह न करते हुए वे कार्यवाही का स्वयं संचालन और नियंत्रण करते हुए हमेशा सबसे आगे रहे। आगे वाले सैनिकों के साथ रह कर और उनकी मुश्किलों और खतरों में उनका साथ देकर इन्होंने न केवल उनका हौसला ही बढ़ाया बल्कि हमले की गति और ताव बनाये रखने के लिए वे अपनी योजनाओं में भी तबदीलियां कर सके। इनकी कुशलता और प्रेरणादायक मौजूदगी से हमले में सफलता मिली और शत्रु को भारी नुकसान पहुंचा ।

इस कार्यवाही में ब्रिगडियर कृष्ण स्वामी गौरी शंकर ने उत्कृष्ट वीरता, असाधारण नेतृत्व और दृढ़ संकल्प का परिचय दिया।

7. ब्रिगेडियर मोहिन्दर लाल विग
(आई० सी०–3940)

(पुरस्कार की प्रभावी तिथि—6 दिसम्बर, 1971)

ब्रिगडियर मोहिन्दर लाल विग, पश्चिमी मोर्चे पर कारगिल सैक्टर में इन्फैन्टरी ब्रिगड ग्रुप के कमांडर थे। इनकी ब्रिगेड को शत्रु की उन महत्वपूर्ण चौकियों पर जहां से वह कारगिल को देख सकता था कब्जा करने और "ओलथिंग थांग" तक आगे बढ़ने का काम सौंपा गया था। ये सभी पिकेट काफी ऊंचाई पर थीं और शत्रु ने तारें लगा कर और सुरंगें बिछा कर इन्हें अच्छी तरह सुरक्षित कर रखा था। ब्रिगडियर मोहिन्दर लाल विग ने सैनिक चातुर्य और कुशलतापूर्वक कार्रवाई की योजना तैयार की। 12000 फुट से भी अधिक ऊंचाई और शून्य से 20 डिग्री नीचे तक के तापमान होने के बावजूद इन्होंने दृढ़ता और खुद मौजूद रह कर धीरजपूर्ण साहस से अपने सैनिकों को शत्रु की गोलाबारी और छोटे हथियारों की गोलियों का मुकाबला करने के लिए प्रोत्साहित किया और 10 दिन के थोड़े से समय के भीतर ही शत्रु को भारी जानी नुकसान पहुंचा कर उसकी 36 चौकियों समेत भारी तादाद में हथियार और गोलाबारूद पर कब्जा कर लिया।

इस कार्रवाई में ब्रिगेडियर मोहिन्दर लाल विग ने भारतीय सेना की उच्चतम परम्परा के अनुकूल विशिष्ट वीरता और असाधारण नेतृत्व का परिचय दिया।

8. कर्नल उदय सिंह,
पी(आई०–4868), जी० आर०

(पुरस्कार की प्रभावी तिथि—8 दिसम्बर, 1971)

कर्नल उदय सिंह एक ऐसी सेना के इंचार्ज थे जिसमें लद्दाख स्काउट्स की तीन कम्पनियां और मार्टर और मझली मशीन गनों का एक-एक सैक्शन था। इसे पश्चिमी मोर्चे पर कारगिल सैक्टर के चालुंका से टींक तक के इलाके पर कब्जा करने का काम सौंपा गया था। यह काम ऐसा था जिसमें बगैर टोह किये हुए इलाके में से होकर 18000 फुट तक की ऊंचाई पर शून्य से भी नीचे के तापमान में अधिकतर रात में सामान या तो खुद लादकर या जानवरों पर लाद कर ले जाना था। कर्नल उदय सिंह ने इस की योजना बड़ी बारीकी से और सैनिक कुशलता से बना कर पूरी की। इन्होंने अपनी जंगी चालों से शत्रु को पूरी तरह मात दी जो तादाद में इनसे बहुत ज्यादा थे। इन्होंने बहुत थोड़ा नुकसान उठा कर शत्रु को भारी जानी नुकसान पहुंचाया और उस के बहुत सारे जवान, हथियार और उपस्कर पकड़ लिए। संचार लाइन और तोपखाने की सहायता के न होने के बावजूद इन्होंने शत्रु का पीछा किया। और उस के मजबूत मोर्चों पर अपने हमले का इतना दबाव डाला कि टर्टोक और उससे आगे का भी काफी इलाका हमारे हाथ म आ गया। इस पूरे समय में कर्नल उदय सिंह अपने जवानों

मश्किलों और खतरे में साथ रह कर आगे रहे। पास मौजूद रह कर और धीरजपूर्ण साहस से इन्होंने अपने जवानों को हमला करने के लिए उत्साहित किया और कई मजबूत चौकियों के सिलसिलों को कड़ी लड़ाई और अक्सर संगीनों की लड़ाई लड़ कर अपने कब्जे में किया।

इस पूरी कार्रवाई में, जो दस दिनों तक चली, कर्नल उदय सिंह ने शत्रु के मुकाबले में अपूर्व शौर्य, असाधारण नेतृत्व, धीरजपूर्ण साहस और ऊंचे दर्जे का सैनिक चातुर्य दिखलाया, जो भारतीय सेना की उच्चतम परम्पराओं के अनुकूल है।

9. लेफ्टिनेंट कर्नल सवाई भवानी सिंह,
(आई० सी०–9015), पेराशूट रेजिमेंट

(पुरस्कार की प्रभावी तिथि—5 दिसम्बर, 1971)

5-6 दिसम्बर की रात को लेफ्टिनेंट कर्नल सवाई भवानी सिंह पेराशूट रेजिमेंट (कमांडोज) को एक बटालियन की कमान करते हुए अपने सैनिकों के साथ पाकिस्तान इलाके में काफी भीतर घुस गये और चार रात और दिन तक अपनी सुविधा और सुरक्षा की परवाह न करते हुये इन्होंने चाचरू और बीरवाह के इलाके में दुश्मन की चौकियों पर युक्तिशील व निर्मम हमला करने में अपने जवानों का नेतृत्व किया। इन्होंने दृढ़ निश्चय और उत्साह दिखाया और साहस और विश्वास के साथ दुर्गम इलाके से शत्रु के छोटे हथियारों की गोलाबारी का मुकाबला करने में अपने जवानों का मार्ग दर्शन किया। लेफ्टिनेंट कर्नल भवानी सिंह के प्रेरणादायक नेतृत्व और साहस के कारण शत्रु के इलाके का बहुत बड़ा हिस्सा हमारे कब्जे में आ गया और शत्रु डर गया और बौखला कर बहुत बड़ी संख्या में अपने सैनिकों और उपस्करों को छोड़कर पीछे भागने के लिए मजबूर हो गया।

इस कार्रवाई में लेफ्टिनेंट कर्नल सवाई भवानी सिंह ने व्यक्तिगत साहस, नेतृत्व की असाधारण योग्यता और भारतीय सेना की उच्चतम परम्परा के अनुसार कर्त्तव्यपरायणता का उदाहरण प्रस्तुत किया।

10. लेफ्टिनेंट कर्नल चितूर वेनूगोपाल,
(आई सी-5096), गोरखा राइफल।

(पुरस्कार की प्रभावी तिथि—7 दिसम्बर, 1971)

लेफ्टिनेन्ट कर्नल चितूर वेनूगोपाल युद्ध में पूर्वी मोर्चे पर गोरखा राइफल की बटालियन की कमान कर रहे थे। 4 दिसम्बर, 1971 को बटालियन का मुकाबला उतराली और दरसाना में शत्रु के किलाबंद मोर्चे से हुआ। इस मोर्चे पर मजबूत पिल-बाक्सों की एक श्रृंखला थी और ये पिल बाक्स बड़ी-बड़ी यातायात खाइयों के जरिये एक दूसरे से जुड़े हुये थे। लेफ्टिनेन्ट कर्नल चितूर वेनूगोपाल ने बहुत ही फौजी दक्षता से हमले की योजना बनाई। अपनी हिफाजत की तनिक भी परवाह न करते हुये उन्होंने हमले का नेतृत्व और अपनी मौजूदगी से सैनिकों को बढ़ावा देकर लक्ष्य प्राप्त कर लिया। इन दोनों मोर्चों पर कब्जा कर लेने के बाद इनकी बटालियन ने पीछे भागते हुए शत्रु का लगातार पीछा किया और तीन दिनों बाद जब तक झेनिडा पर कब्जा न कर लिया गया, उसे आराम करने या दलबन्दी करने का समय न दिया।

इस पूरी कार्यवाही में लेफ्टिनेन्ट कर्नल चितूर वेनूगोपाल ने भारतीय सेना की उच्चत्तम परम्पराओं के अनुकूल उत्कृष्ट वीरता और कर्त्तव्यपरायणता का परिचय दिया।

11. लेफ्टिनेन्ट कर्नल हनूत सिंह,
(आई सी-6126), 17 हार्स।

(पुरस्कार की प्रभावी तिथि—16 दिसम्बर, 1971)

लेफ्टिनेन्ट कर्नल हनूत सिंह पश्चिमी मोर्चे पर "शकरगढ़" सैक्टर में 17 हार्स की कमान कर रहे थे। 16 दिसम्बर को उनकी रेजिमेन्ट को "बंसतर" नदी के पुल-पदाधार पर लगाया गया और इसने इन्फैन्ट्री से आगे का मोर्चा संभाल लिया। 16 और 17 दिसम्बर, 1971 को शत्रु ने भारी संख्या में बख्तर से कई हमले किए। दुश्मन की मीडियम आर्टिलरी और टैंकों की गोलाबारी से तनिक भी विचलित हुए बिना लेफ्टिनेन्ट कर्नल हनूत सिंह अपनी जान की जरा भी परवाह न करके जिस सैक्टर पर भी खतरा बढ़ा, वहां जा पहुंचे। उनकी उपस्थिति और शान्त चित साहस से उनके जवान भी मुस्तैदी से डटे रहे और उन्होंने अपनी बहादुरी के जौहर दिखाए।

इस पूरी संक्रिया में लेफ्टिनेन्ट कर्नल हनूत सिंह ने सैना उच्चत्तम परम्पराओं के अनुकूल उत्कृष्ट वीरता तथा नेतृत्व का परिचय दिया।

12. लेफ्टिनेन्ट कर्नल हरिश्चन्द्र पाठक,
(आई० सी०-7114) सिख लाइट इन्फेन्ट्री।

लेफ्टिनेन्ट कर्नल हरिश्चन्द्र पाठक सिख लाइट इन्फैन्ट्री बटालियन की कमान संभाले हुए थे। उनकी बटालियन को पश्चिमी मोर्चे पर शत्रु की चौकी "पाक फतेहपुर" पर कब्जा करने का कार्य सौंपा गया था। इस चौकी पर शत्रु ने पूरी मोर्चाबन्दी कर रखी थी और वहां शत्रु काफी बड़ी संख्या में मौजूद था। हमले के दौरान शत्रु हमारे हमला करने वाले सैन्यदलों पर तोपखाने से भारी और अचूक गोलाबारी कर रहा था जिसके कारण हमारे सैनिक भारी संख्या में हताहत हो रहे थे। लेफ्टिनेंट कर्नल पाठक ने अपनी निजी सुरक्षा की तनिक भी परवाह न करते हुए अनोखे साहस दिखाते हुए धावा बोल दिया और शत्रु से भयंकर लड़ाई के बाद लक्ष्य पर कब्जा कर लिया, लक्ष्य पर हमारा कब्जा होते ही, शत्रु ने अलग अलग दिशाओं से दो जवाबी हमले बोल दिये। शत्रु द्वारा भारी गोलाबारी और छोटे हथियारों से गोलियों के बावजूद लेफ्टिनेंट कर्नल पाठक एक स्थान से दूसरे स्थान पर पहुंचे मोर्चे पर डटे रहने और शत्रु को भारी जानी नुकसान पहुंचाते हुए उसके हमले को विफल करने के लिए अपने जवानों की हिम्मत बढ़ाते रहे।

इस कार्यवाही में लेफ्टिनेन्ट कर्नल हरिश्चन्द्र पाठक ने उत्कृष्ट वीरता और अनुकरणीय नेतृत्व और भारतीय सेना की उच्चतम परम्पराओं के अनुकूल कर्त्तव्यपरायणता का परिचय दिया।

13. लेफ्टिनेंट कर्नल कश्मीरी लाल रतन,
(आई० सी० 7661), सिख रेजिमेंट।

(पुरस्कार की प्रभावी तिथि—3 दिसम्बर, 1971)

लेफ्टिनेन्ट कर्नल कश्मीरी लाल रतन जम्मू और कश्मीर सेक्टर के पुंछ इलाके में सिख रेजिमेंट की बटालियन की कमान सम्हाले हुए थे। उनकी बटालियन को एक स्थल पर जो इस सैक्टर में हमारे बचाव मोर्चों की कुंजी थी अधिकार बनाए रखने का कार्य सौंपा गया था। उन्होंने सैनिक कुशलता और दक्षता से मोर्चों को संगठित किया। 3 दिसम्बर से 6 दिसम्बर तक शत्रु ने इस रक्षित क्षेत्र पर कई एक भयन्कर हमले किये। हर बार लेफ्टिनेन्ट रतन ने वहां स्थिति सम्हाली, जहां शत्रु की ओर से सब से ज्यादा खतरा पैदा हो गया था और भारी गोलाबारी और छोटे हथियारों की गोलियों की तनिक परवाह न करते हुए वे एक बंकर से दूसरे बंकर जाकर अपने जवानों का हौसला बढ़ाते रहे और शत्रु के हमलों को विफल करने और उसे भारी नुकसान पहुंचाने की प्रेरणा देते रहे।

पूरी कार्यवाही में लेफ्टिनेन्ट कर्नल कश्मीरी लाल रतन ने उत्कृष्ट वीरता और अनुकरणीय नेतृत्व का परिचय दिया।

14. लेफ्टिनेंट कर्नल कुलवन्त सिंह पन्नू,
(आई० सी० 6213), पैराशूट रेजिमेंट

(पुरस्कार की प्रभावी तिथि—11 दिसम्बर, 1971)

लेफ्टिनेन्ट कर्नल कुलवन्त सिंह पन्नू पूर्वी मोर्चे पर पैराशूट रेजिमेंट की बटालियन की कमान कर रहे थे। 11 दिसम्बर 1971 को इनकी बटालियन तांगेल के पास हवाई छत्रियों से नीचे उतारी गई और उन्हें दुश्मन के पीछे हटने के भागों को काटने और तांगेल पर उसे जमा न रहने देने का काम सौंपा गया। ऐसा करने के लिए उन्हें पूंगली के एक महत्वपूर्ण पुल पर शत्रु के एक मोर्चे पर कब्जा करना था। बटालियन काफी फैले हुए इलाके में उतारी गई जिससे लेफ्टिनेन्ट कर्नल पन्नू को अपने प्लाटून इकट्ठा करने के लिए शत्रु के छोटे हथियारों की गोलियों की बौछार में एक ठिकाने से दूसरे ठिकाने पर जाना पड़ा। इनके शांतचित साहस और अपनी

जान की तनिक भी परवाह न करते हुए समय पर और होशियारी से आदेश देने के कारण ही इनकी बटालियन पूंगली पर शत्रु के मोर्चे पर कब्जा कर सकी। पूंगली के इस मोर्चे पर फिर से कब्जा पाने के लिए शत्रु ने भारी तादाद में कई बार जवाबी हमले किए, लेकिन हर बार इनके कुशल नेतृत्व में बटालियन ने हमलों को नाकामयाब कर दिया और शत्रु को भारी जानी नुकसान पहुंचाया।

इस कार्यवाही में लेफ्टिनेन्ट कर्नल कुलवंत सिंह पन्नू ने उत्कृष्ट वीरता उदाहरणीय नेतृत्व और दृढ़ संकल्प और सेना की उच्चत्तम परम्पराओं के अनुकूल कर्त्तव्यपरायणता का परिचय दिया।

15. लेफ्टिनेंट कर्नल प्रेम कुमार खन्ना,
(आई० सी० 7380), सिख रेजिमेंट।

(पुरस्कार की प्रभावी तिथि—3 दिसम्बर, 1971)

लेफ्टिनेन्ट कर्नल प्रेम कुमार खन्ना सिख रेजिमेन्ट की एक बटालियन की कमान कर रहे थे और छम्भ सैक्टर के रक्षित खण्ड में मोर्चा संभाले हुए थे। छम्भ की लड़ाई में 3 और 6 दिसम्बर 1971 के बीच शत्रु की इन्फैन्ट्री और बख्तरबंद दस्तों ने भारी संख्या और पूरी शक्ति के साथ दिन रात लगातार हमले किए। लेफ्टिनेन्ट कर्नल खन्ना ने अपनी बटालियन का संचालन शांतचित रहकर बड़े साहस से किया। उन्होंने बड़ी सूझ बूझ से काम लिया और स्थिति को संभालने में अद्भुत आक्रमक जोश का परिचय दिया।

इस पूरी कार्यवाही में लेफ्टिनेन्ट कर्नल प्रेम कुमार खन्ना ने उत्कृष्ट वीरता और अनुकरणीय नेतृत्व का परिचय दिया।

16. लेफ्टिनेंट कर्नल राजमोहन वोहरा,
(आई० सी०- 6121), 4 हार्स।

लेफ्टिनेन्ट कर्नल राजमोहन वोहरा पश्चिमी मोर्चे के "शकरगढ़" सैक्टर में अपने सैनिकों की कमान कर रहे थे। इनकी रेजिमेन्ट अग्रसरण में सबसे आगे रही और उसने भेरोनाथ, ठाकुर-द्वारा, बाड़ीलागवाल, चमरोला, दरमान, चक्रा और देहलरा पर कब्जा कर लिया। इनमें से हर एक मोर्चे को टैंकों, मिसाइलों और सुरंग-क्षेत्रों से किलाबन्दी कर रखा था। अपनी जान की जरा भी परवाह न करते हुए लेफ्टिनेन्ट कर्नल वोहरा बहुत आगे बढ़ गए और अपनी रेजिमेन्ट का प्रेरणादायक नेतृत्व किया। "बसंतर" नदी की लड़ाई के दौरान इनकी रेजिमेन्ट, इनके व्यक्तिगत उदाहरण और साहस से प्रेरित होकर शत्रु के लगातार बख्तरबन्द हमलों के विरुद्ध डटी रही और शत्रु के 27 टैंक नष्ट कर दिये। इस कार्यवाही में इनके बहुत कम जवान हताहत हुए।

इस पूरी कार्यवाही में लेफ्टिनेन्ट कर्नल राजमोहन वोहरा ने सेना की उच्चत्तम परम्पराओं के अनुकूल विशिष्ट शौर्य और प्रेरणादायक नेतृत्व का परिचय दिया।

17. लेफ्टिनेंट कर्नल राजकुमार सिंह,
(आई० सी०-7113), पंजाब रेजिमेंट।

लेफ्टिनेंट कर्नल राजकुमार सिंह पंजाब रेजिमेंट की एक बटालियन की कमान में थे जिसे पूर्वी मोर्चे पर गरीबपुर-जगन्नाथपुर क्षेत्र में एक रक्षित मोर्चे पर कब्जा बनाए रखने का काम सौंपा गया ताकि शत्रु भारतीय क्षेत्र में न घुस पाए। उन्होंने बड़ी कुशलता और व्यवसायिक दक्षता के साथ अपनी बटालियन के मोर्चों की योजना तैयार की और उनका गठन किया। शत्रु ने बटालियन के रक्षित क्षेत्र पर दो इन्फैन्ट्री बटालियनों और टैंकों की एक स्क्वाड्रन से हमला किया। इस कड़ी रक्षात्मक लड़ाई में लेफ्टिनेंट कर्नल राज-कुमार सिंह ने अपने सैनिकों का बड़े साहस और आत्म विश्वास से निर्देशन किया। अपनी जान की तनिक भी परवाह न करते हुए वे एक कम्पनी इलाके से दूसरे कम्पनी इलाके में जाकर अपने छोटे कमांडरों और सैनिकों का हौसला बढ़ाते रहे। शत्रु ने जम कर तीन हमले किए, लेकिन तीनों ही भारी जानी नुकसान के साथ विफल बना दिये गए।

इस सारी कार्यवाही में लेफ्टिनेंट कर्नल राजकुमार सिंह ने उत्कृष्ट साहस, अनुकरणीय नेतृत्व और व्यवसायिक कुशलता का परिचय दिया।

18. लेफ्टिनेंट कर्नल रतननाथ शर्मा
(आई० सी०--5270), पंजाब रेजिमेंट

(पुरस्कार की प्रभावी तिथि---10 दिसम्बर 1971)

लेफ्टिनेंट कर्नल रतन नाथ शर्मा जम्मू-कश्मीर सैक्टर के पुंछ इलाके में पंजाब रेजिमेंट की एक बटालियन की कमान कर रहे थे। उनकी बटालियन को शत्रु की एक महत्वपूर्ण चौकी पर कब्जा करने का काम सौंपा गया था। यह एक सोचीसमझी चौकी थी जहां शत्रु भारी तादाद में था। प्रहार के दौरान, शत्रु ने तोपखाने और छोटे हथियारों से भारी गोलाबारी की जिससे हमारे जवान भारी संख्या में हताहत हुए। निर्भयता से और अपनी जान की तनिक भी पर-वाह न करते हुए लेफ्टिनेंट कर्नल शर्मा ने अपने जवानों को उत्साहित किया और बराबर उनके बीच रह कर शांत चित साहस से उन्हें लक्ष्य प्राप्त करने की प्रेरणा दी।

इस कार्यवाही के दौरान लेफ्टिनेंट कर्नल रतननाथ शर्मा ने अनुकरणीय साहस और उत्कृष्ट नेतृत्व का परिचय दिया।

19. लेफ्टिनेंट कर्नल सुरिन्द्र कपूर
(आई०सी० 7684), जम्मू और कश्मीर राइफल्स

लेफ्टिनेंट कर्नल सुरिन्द्र कपूर, पूर्वी मोर्चे पर, जम्मू कश्मीर राइफल्स की एक बटालियन की कमान कर रहे थे। इनकी बटालियन को "जेसोर सैक्टर" में शत्रु के हमले की तेजी को कम करने और उसे ज्यादा से ज्यादा जानी नुकसान पहुंचाने के लिए रक्षात्मक मोर्चा संभालने का काम सौंपा गया था। शत्रु के तोपखाने और छोटे हथि-यारों से गोलाबारी होने पर भी लेफ्टिनेंट कर्नल कपूर ने अपनी बटालियन को नियोजित करने में उच्च-सैनिक कुशलता और नेतृत्व का परिचय दिया। उनकी बटालियन पर शत्रु ने भारी तादाद में तीन दिन में पांच बार हमला किया। शत्रु के हर हमले के दौरान लेफ्टिनेंट कर्नल कपूर ने अपनी जान की परवाह न करते हुए एक इलाके से दूसरे इलाके में जाकर अपने जवानों को डटे रहने के लिए प्रोत्साहित किया। इनकी मौजूदगी और शामन्वित साहस से प्रेरित होकर इनकी बटालियन ने शत्रु के सभी हमलों को पीछे धकेल दिया और उसे भारी जानी नुकसान पहुंचाया।

इस पूरे समय में लेफ्टिनेंट कर्नल सुरिन्द्र कपूर ने अनुकरणीय साहस और उत्कृष्ट नेतृत्व का परिचय दिया।

20. लेफ्टिनेंट कर्नल सुखजीत सिंह,

(आई० सी०-6704), सिन्धहार्स ।

(पुरस्कार की प्रभावी तिथि—11 दिसम्बर, 1971)

हाल ही में पाकिस्तान से हुई लड़ाई में लेफ्टिनेंट कर्नल सुखजीत सिंह पश्चिमी मोर्चे पर एक आमर्ड रेजिमेंट की कमान कर रहे थे। 10 दिसम्बर 1971 को जब उनकी रेजिमेंट नैना-कोर्ट के पश्चिमी भाग पर तैनात थी, शत्रु ने मीडियम आर्टिलरी और भारी मार्टर के तेज गोलाबारी की आड़ में बड़ी तादाद में टैंकों से हमला किया। अपनी जान की जरा भी परवाह न करते हुए लेफ्टिनेंट कर्नल सुखजीत सिंह ने अपना टैंक उस जगह खड़ा कर लिया जहां सबसे ज्यादा खतरा था और अदम्य साहस और कुशलता से अपने टैंकों से गोलाबारी करवाते रहे। यद्यपि शत्रु भारी गोलाबारी और टैंकों से गोलाबारी कर रहा था फिर भी उन्होंने अपने टैंक की बुर्जी खोल दी ताकि वे देख कर अपने टैंकों से कारगर गोलाबारी करवा सकें। उनकी मौजूदगी और उनके प्रेरणादायक नेतृत्व ने अपने जवानों को कोई नुकसान नहीं पहुँचाते हुए शत्रु के हमले को विफल कर दिया। 11 दिसम्बर 1971 को लेफ्टिनेंट कर्नल सुखजीत सिंह ने बाजू से होकर आगे बढ़ने वाली फौज की कमान खुद संभाली और शत्रु के टैंकों को घेरने की कोशिश की। नतीजा यह हुआ कि शत्रु की मीडियम आर्टिलरी और मार्टर ने उनकी फौज पर भारी फायर डालना शुरू कर दिया। यही नहीं शत्रु के टैंक अच्छी तरह तैयार मोर्चों से फायर डालने लगे। जरा भी विचलित हुए बिना वे शत्रु के और नजदीक पहुँचे और उसके 8 टैंकों को तबाह कर दिया और एक अफसर, दो जूनियर कमीशंड अफसरों और दो दूसरे जवानों को पकड़ लिया।

इस पूरी कार्यवाही में शत्रु का सामना करने में लेफ्टिनेंट कर्नल सुखजीत सिंह ने जिस अनुकरणीय नेतृत्व, अद्वितीय साहस, और दृढ़ संकल्प का परिचय दिया वह भारतीय सेना की सर्वोच्च परम्पराओं के अनुकूल है।

21. लेफ्टिनेंट कर्नल वेद प्रकाश ऐरी,
(आई० सी०-7750), ग्रेनेडियर्स।

लेफ्टिनेंट कर्नल वेद प्रकाश ऐरी पश्चिमी मोर्चे के "शाकरगढ़" क्षेत्र में भैरो नाथ और बसन्तार नदी की लड़ाइयों में ग्रेनेडियर्स की एक बटालियन की कमान कर रहे थे। उन्होंने अडिग उत्साह से बटालियन का नेतृत्व किया और हमेशा आगे-आगे रहकर अपने जवानों को उत्साहित और प्रेरित किया। बसन्तार नदी की लड़ाई में, उनके योग्य नेतृत्व में, उनकी बटालियन ने न केवल घमासान लड़ाई लड़कर शत्रु के ठिकानों पर अधिकार किया, बल्कि शत्रु द्वारा जबर्दस्त जवाबी हमलों के बावजूद वह वहां पर डटी रही। लेफ्टिनेंट कर्नल ऐरी ने अपनी जान की तनिक भी परवाह न की और शत्रु की तोपों और छोटे हथियारों की भारी गोलाबारी के बीच एक-एक खाई में जाकर अपने जवानों का हौसला बढ़ाया। उनके व्यक्तिगत उदाहरण और साहसपूर्ण नेतृत्व के कारण, उनकी बटालियन दृढ़ता से डटी रही।

इस पूरी कार्यवाही में लेफ्टिनेंट कर्नल वेद प्रकाश ऐरी ने, थलसेना की श्रेष्ठ परम्पराओं के अनुरूप, उत्कृष्ट वीरता, दृढ़ संकल्प और प्रेरणादायक नेतृत्व का परिचय दिया।

22. लेफ्टिनेंट कर्नल वेद प्रकाश घई,

(आई० सी०-7119), मद्रास रेजिमेंट **(मरणोपरान्त)**

(पुरस्कार की प्रभावी तिथि—15 दिसम्बर, 1791)

लेफ्टिनेंट कर्नल वेद प्रकाश घई, पश्चिमी मोर्चे पर शकरगढ़ क्षेत्र में, मद्रास रेजिमेंट की एक बटालियन की कमान कर रहे थे। बसन्तार नदी की लड़ाई के दौरान, शत्रु के भारी विरोध के बावजूद जब इनकी बटालियन ने नदी और सुरंग की रुकावटों को पार करके पुलपदाधार पर कब्जा कर लिया तब शत्रु ने इन पर भयंकर जवाबी हमला किया। शत्रु ने उस रात कई बार हमले किए लेकिन लेफ्टिनेंट कर्नल घई ने अपने जवानों को इकट्ठा करके उन हमलों को विफल कर दिया। पौ फटते ही शत्रु ने टैंकों की सहायता से एक बार जवाबी हमला किया। रात में शत्रु की लगातार भारी गोलाबारी के कारण इनकी बटालियन पूरी तरह पुनर्गठित नहीं हो सकी थी, लेकिन जैसे ही शत्रु के हमले की दिशा स्पष्ट हो गई लेफ्टिनेंट कर्नल वेद प्रकाश घई अपनी सुरक्षा की तनिक भी परवाह न करके उस इलाके में चले गए जिसमें उनकी कम्पनी मौजूद थी। वे निर्भय होकर अपने जवानों को निर्देशित और उत्साहित करते हुए एक मोर्चे से दूसरे मोर्चे में गये। इनकी मौजूदगी, वीरता और नेतृत्व से प्रेरणा लेकर इनकी बटालियन ने टैंकों की सहायता से शत्रु को भारी नुकसान पहुँचाते हुए उसके जवाबी हमलों को पीछे धकेल दिया। स्थिति को मजबूत बना कर जब लेफ्टिनेंट कर्नल वेद प्रकाश घई अपने मुख्यालय वापिस लौट रहे थे उस समय शत्रु के गोले से वे बुरी तरह जख्मी हो गये, लेकिन फिर भी वे युद्ध का संचालन करते रहे। उन्होंने इस समय न अपनी चिकित्सा की ओर ध्यान दिया और न ही अपनी सुरक्षा की परवाह की। परिणाम यह हुआ कि घावों की वजह से युद्ध के मैदान में ही इन्होंने वीरगति प्राप्त की।

इस कार्यवाही में, लेफ्टिनेंट कर्नल वेद प्रकाश घई ने सेना की उच्चतम परम्पराओं के अनुकूल विशिष्ट शौर्य दिखाया और कर्तव्य की पूर्ति में सर्वोच्च बलिदान दिया ।

23. मेजर अमरजीत सिंह बल,

(आई० सी०-13377), 17 हार्स

(पुरस्कार की प्रभावी तिथि—15 दिसम्बर, 1971)

मेजर अमरजीत सिंह बल, पश्चिमी मोर्चे के "शकरगढ़" सेक्टर में "बसन्तार" नदी की लड़ाइयों के दौरान 17 हार्स के "बी" स्क्वाड्रन की कमान कर रहे थे। 15 और 16 दिसम्बर 1971 को शत्रु ने "जारपाल" पर कई बार बख्तरबन्द जवाबी हमले किए। हालांकि शत्रु बड़ी भारी संख्या में था, फिर भी मेजर अमरजीत सिंह बल ने अनुकरणीय साहस, दृढ़ निश्चय और आक्रामक जोश का परिचय दिया और इनकी निजी मिसाल से उनके जवानों को डटे रहने की प्रेरणा मिली। उन्होंने बहादुरी से शत्रु के सभी हमलों को पीछे धकेल दिया जिससे वह भारी संख्या में हताहत हुआ।

इस पूरी कार्यवाही में, मेजर अमरजीत सिंह बल ने सेना की उच्चतम परम्पराओं के अनुकूल उत्कृष्ट वीरता, विशिष्ट नेतृत्व और असाधारण कर्तव्यपरायणता का परिचय दिया।

24. मेजर अनूप सिंह गहलोट,

आई० सी -13798), डोगरा रेजिमेंट । **(मरणोपरान्त)**

पुरस्कार की प्रभावी तिथि—3 दिसम्बर, 1971)

मेजर अनूप सिंह गहलोट को पूर्वी मोर्चे के लवसम क्षेत्र में शत्रु के इलाके में दूर तक घुस कर सड़क पर रुकावट खड़ी करने का कार्य सौंपा गया। वे अपनी कंपनी के साथ शत्रु की रक्षा पंक्तियों में घुसपेठ कर गये, उन्होंने सड़क पर रुकावट खड़ी की और जब शत्रु ने उन्हें रुकावट से हटाने का प्रयत्न किया तो शत्रु को भारी जानी नुकसान पहुँचाया गया। इसके बाद जब उनकी बटालियन की एक कंपनी पर शत्रु ने भारी दबाव डालना शुरू किया तो मेजर गहलोट ने उस कंपनी की मदद पर जाने के लिए अपनी सेवायें अर्पित कीं। इस कार्य में उन्होंने एक प्लाटून का नेतृत्व किया और छोटे हथियारों की प्रभावी गोलाबारी द्वारा शत्रु की एक कंपनी को सफलतापूर्वक उसी स्थान पर दबाए रखा। परन्तु उनके मोर्चे पर शत्रु ने दूसरी दिशा से हमला किया। भारी संख्या में शत्रु का हमला होने पर भी उन्होंने अपने सैनिकों को ढाढ़स बन्धा कर मुकाबला किया और शत्रु के हमले को विफल कर दिया। शत्रु से आमने-सामने की लड़ाई में घातक रूप से घायल होने के कारण इस शूरतापूर्ण मुठभेड़ के थोड़ी देर बाद वे वीरगति को प्राप्त हुए।

इस पूरी कार्यवाही में मेजर अनूप सिंह गहलोट ने विशिष्ट साहस और अनुकरणीय नेतृत्व का परिचय दिया।

25. मेजर वासदेव सिंह मनकोटिया,

(आई० सी०-14221), पंजाब रेजिमेंट ।

(पुरस्कार की प्रभावी तिथि—3 दिसम्बर, 1971)

मेजर वासदेव सिंह मनकोटिया, पश्चिमी मोर्चे के राणियां क्षेत्र में गुप्त पर्यवेक्षण स्थान पर जमे हुए नियमित पैदल सेना और सीमा सुरक्षा दल के मिले जुले समूह की कमान कर रहे थे। 3 दिसम्बर और 5 दिसम्बर, 1971 के बीच शत्रु ने इस ठिकाने पर बड़ी संख्या में सात बार हमला किया। लेकिन शत्रु को सातों बार पीछे धकेल कर भारी जानी नुकसान पहुँचाया गया। जब पर्यवेक्षण स्थान के एक हिस्से पर शत्रु ने कब्जा कर लिया तब इन्होंने उस पर जवाबी हमला करके अपनी जमीन वापस छीन ली। हालांकि 3 दिसम्बर 1971 को इनका कंधा बुरी तरह जख्मी हो गया था फिर भी इन्होंने गुप्त पर्यवेक्षण स्थान पर जमे रहने के महत्व को समझते हुए वहां से हटने से इन्कार कर दिया। इस तरह अपनी जान की परवाह न करते हुए व्यक्तिगत साहस का उदाहरण प्रस्तुत करके, अपने अधीनस्थ सैनिकों में इतना जोश पैदा किया कि वे सराहनीय शूरवीरतापूर्ण अनेक कार्य कर सके।

इस पूरी कार्यवाही में, मेजर वासदेव सिंह मनकोटिया ने विशिष्ट शूरवीरता, अनुकरणीय नेतृत्व और दृढ़ संकल्प का परिचय दिया।

26. मेजर दलजीत सिंह नारंग,

(आई० सी०-8140), केवलरी । **(मरणोपरान्त)**

मेजर दलजीत सिंह नारंग केवलरी की एक स्क्वाड्रन की कमान कर रहे थे जो इन्फैन्ट्री बटालियन के साथ थी। उन्हें शत्रु को जो पूर्वी मोर्चे पर भारतीय क्षेत्र में बढ़ रहा था, रोकने का काम सौंपा गया। जब शत्रु को दो बटालियनों ने, जिसमें शेफी टैंकों का एक स्क्वाड्रन भी था, हमला किया तो उन्होंने बहुत ही सूझबूझ और बहादुरी से शत्रु की भारी गोलाबारी के बावजूद युद्ध की चालें चलीं और शत्रु के टैंकों पर गोलाबारी करके उन्हें तबाह कर दिया। अपने प्राणों की तनिक भी परवाह न करते हुए और शत्रु की गोलाबारी से जरा भी विचलित हुए बिना वे टैंक की टरेंट पर खड़े होकर अपनी स्क्वाड्रन से गोलाबारी करवाते रहे। जब उनके स्क्वाड्रन का एकटैंक नष्ट हो गया तो वे तुरन्त अपनी जान जोखिम में डाल, उस टैंक तक गए और उसके चालक को निकाल लाकर फिर वे अपने टैंक पर आ गए और अपने स्क्वाड्रन को कारगर ढंग से निर्देश देने लगे। उनके साहस और निर्भयता ने इतना जोश पैदा किया कि उनकी कमान ने शत्रु के शैफी टैंकों के स्क्वाड्रन को कामयाबी से तबाह कर दिया और शत्रु का आगे बढ़ना रोक दिया। मेजर नारंग स्क्वाड्रन का नेतृत्व करते हुए मशीनगन की गोलाबारी का शिकार हुए और टैंक के ऊपर ही खड़े खड़े वीरगति को प्राप्त हुए।

इस पूरी कार्यवाही में मेजर दलजीत सिंह नारंग ने असाधारण नेतृत्व और दृढ़ संकल्प का परिचय दिया। उनकी उत्कृष्ट वीरता, कर्तव्यपरायणता और सर्वोच्च बलिदान देना भारतीय सेना की उच्चतम परम्पराओं के अनुकूल है।

27. मेजर धर्मवीर सिंह,

(आई० सी०-14123), ग्रेनेडियर्स ।

(पुरस्कार की प्रभावी तिथि—10 दिसम्बर, 1971)

ग्रेनेडियर्स की बटालियन को पश्चिमी मोर्चे पर चक्रा में स्थित शत्रु की चौकी पर कब्जा करने का काम सौंपा गया था। अच्छी तरह तैयार की गई इस चौकी पर शत्रु काफी संख्या में थे और बचाव के इस चौकी के चारों तरफ 800 मीटर की गहराई तक तार की रुकावटें और सुरंगें लगी हुई थीं। हमले के दौरान शत्रु ने अपनी आर्टिलरी और छोटे हथियारों से भारी गोलाबारी की जिससे हमला करने वाली हमारी फौज के कई जवान हताहत हुए। मेजर धर्मवीर सिंह ने जो बाईं ओर स्थित अगली कम्पनी की कमान कर रहे थे, शत्रु की गोलाबारी और अपनी कम्पनी की शक्ति क्षीण होने पर भी अपनी कम्पनी को सुरंग क्षेत्र के बीच से गुजारा। स्वयं आगे रह कर और अनुकरणीय साहस से अपने जवानों में उन्होंने इतना जोश भरा कि वे लक्ष्य पर झपटे और घमासान मुठभेड़ के बाद उन्होंने स्थान पर कब्जा कर लिया। 11 दिसम्बर 1971 को शत्रु ने इस स्थान पर आर्टिलरी से भारी गोलाबारी की और बड़ी तादाद से जवाबी हमला किया। अपनी जान की जरा भी परवाह न करते हुए मेजर धर्मवीर सिंह एक खाई से दूसरी खाई में जाकर अपने जवानों का हौसला बढ़ाते रहे और उन्हें अपनी जगह पर डटे रहने की प्रेरणा देते रहे। फलस्वरूप शत्रु का हमला नाकामयाब हुआ और उसे भारी जानी नुकसान पहुँचा। इससे पहले भी 5 दिसम्बर 1971 को मेजर धर्मवीर सिंह ने धीरज, विश्वास और साहस से चमन खुर्द में शत्रु की एक किलाबन्द चौकी पर कामयाबी से हमारे हमले का नेतृत्व किया।

इस पूरी कार्यवाही में मेजर धर्मवीर सिंह ने विशिष्ट वीरता, असाधारण नेतृत्व और कर्तव्यनिष्ठ का परिचय दिया जो भारतीय सेना की उच्चतम परम्पराओं के अनुकूल है।

28. मेजर जयवीर सिंह,
(आई० सी०-14509), सिख रेजिमेंट।

(पुरस्कार की प्रभावी तिथि–3 दिसम्बर, 1971)

मेजर जयवीर सिंह सिख रेजिमेंट बटालियन की राइफल कम्पनी की कमान कर रहे थे और पश्चिमी मोर्चे पर छम्ब सैक्टर फागला टेकरी पर बटालियन रक्षित खंड में मोर्चा संभाले हुए थे। 3 और 4 दिसम्बर 1971 की रात को शत्रु ने भारी और सुसमन्वित आर्टिलरी गोलाबारी के साथ बटालियन से तीन हमले किए। सराहनीय साहस, और दृढ़ संकल्प दिखाते हुए यह अपनी जान की तनिक भी परवाह न करते हुए एक रक्षित इलाके से दूसरे में जाकर जोश दिलाते रहे और शत्रु को मार भगाने के लिए बढ़ावा देते रहे। 4 दिसम्बर, 1971 को इनकी कम्पनी के इलाके पर शत्रु का दबाव बुरी तरह बढ़ गया। शत्रु ने टैंक और आर्टिलरी के साथ बार-बार हमले किए परन्तु मेजर जयवीर सिंह के प्रेरणादायक नेतृत्व में उनकी कम्पनी मोर्चे पर डटी रही और भारी जानी नुकसान पहुँचा कर शत्रु को पीछे धकेल दिया। 4 दिसम्बर 1971 की रात को शत्रु ने फिर एक बटालियन से हमला किया और रक्षित मोर्चे में घुस आया। मेजर जयवीर सिंह ने तुरन्त ही जवाबी हमला किया और मुठभेड़ की लड़ाई लड़कर शत्रु को पीछे धकेल दिया। शत्रु अपने 12 सैनिकों को मृत अवस्था में छोड़ पीछे हट गया। 5 दिसम्बर 1971 को जब शत्रु का दूसरा हमला हुआ तो उनकी कम्पनी के बहुत से सैनिकों के हताहत होने के बावजूद बिना विचलित हुए उन्होंने उसका जमकर मुकाबला किया। इस पूरी लड़ाई के दौरान उन्होंने अपनी कमान ही लगातार न बनाए रखी वरन् पड़ोस की एक चौकी पर भी पुनः कब्जा किया जिस पर पहले शत्रु ने कब्जा कर लिया था।

मेजर जयवीर सिंह ने जो अनुकरणीय वीरता, दृढ़ संकल्प, नेतृत्व और कर्त्तव्यपरायणता दिखाई वह भारतीय सेना की उच्चतम परम्पराओं के अनुकूल थी।

29. मेजर कुलदीप सिंह चांदपुरी,
(आई० सी०-18067), पंजाब रेजिमेंट।

पुरस्कार की प्रभावी तिथि –11 दिसम्बर, 1971

मेजर कुलदीप सिंह चांदपुरी पंजाब रेजिमेंट की एक बटालियन की एक कम्पनी की कमान कर रहे थे और राजस्थान क्षेत्र के लोंगवाला का एक रक्षित इलाका संभाले हुए थे। 5 दिसम्बर के तड़के सुबह शत्रु ने इस क्षेत्र पर पैदल सेना और टैंकों से भारी हमला किया। मेजर चांदपुरी ने अपने सैनिकों का जोर दार नेतृत्व किया और कमान पूरी तरह संभाले रख कर वहीं डटे रहे। असाधारण साहस और दृढ़ संकल्प दिखाते हुए वह अपने जवानों को जोश दिलाने के लिए बंकर-बंकर जाते रहे और उस वक्त शत्रु को मार भगाने का जोश दिलाते रहे जब तक कि कुमुक न आ गई। बचाव की इस वीरतापूर्ण कार्यवाही में उन्होंने शत्रु को भारी नुकसान पहुँचाया और उन्हें अपने 12 टैंक छोड़ कर पीछे हटने को मजबूर किया।

इस कार्यवाही में मेजर कुलदीप सिंह चांदपुरी ने विशिष्ट शूरवीरता और नेतृत्व का परिचय दिया।

30. मेजर विजर रतन चौधरी,
(आई० सी०-11004), इंजीनियर रेजिमेंट (मरणोपरान्त)

(पुरस्कार की प्रभावी तिथि–5 दिसम्बर ,1971)

मेजर विजय रतन चौधरी, पश्चिमी मोर्चे पर "चक्का" में सुरंग क्षेत्रों की सफाई करनेवाले दल के इंचार्ज थे। चक्का में शत्रु के टैंकों के तुरन्त जवाबी हमले का बड़ा खतरा था। इसलिए सुरंग क्षेत्र में तेजी से सुरक्षित गलियारे बनाना बड़ा जरूरी था, जिनसे होकर हमारे टैंक और टैंकमार हथियार चक्का पहुँच सकें। मेजर चौधरी ने अपनी जान की तनिक भी परवाह न करते हुए खुद मौजूद रह कर कार्यवाही की निगरानी की और अपने जवानों को पूरी तेजी से काम करने के लिए प्रेरित किया। इस दौरान में शत्रुअपने तोपखाने, मोर्टर और स्वचालित हथियारों से भारी गोलाबारी करता रहा, लेकिन मेजर चौधरी वहां चौबीसों घंटे तब तक काम करते रहे जब तक गलियारे साफ नहीं हो गये और टैंक और टैंक-मार हथियार "चक्का" न पहुँच गए। 5 दिसम्बर के बाद आगे बढ़ने के दौरान मेजर चौधरी ने अनुकरणीय कर्तव्यपरायणता दिखाई और "ठाकुर द्वारा", "लोहरा" और "बसन्तार नदी" के क्षेत्र में 1000-1500 गज गहरे सुरंग क्षेत्रों में से सुरंगें साफ की। "बसन्तार नदी" के पास सुरंग क्षेत्र में गलियारे बनाने के काम की निगरानी करते समय यह बहादुर अधिकारी शत्रु के तोपखाने की गोलाबारी का शिकार हुए।

मेजर चौधरी की कर्त्तव्यपरायणता, असाधारण वीरता, प्रेरणादायक नेतृत्व और महान बलिदान भारतीय सेना की उच्चतम परम्पराओं के अनुकूल है।

31. कैप्टेन देविन्द्र सिंह अहलावत,
(आई०सी०-19161), डोगरा रेजिमेंट (मरणोपरान्त)
(पुरस्कार की प्रभावी तिथि—5 दिसम्बर, 1971)

5 और 6 दिसम्बर, 1971 की रात को "डेरा बाबा नानक" पुल पदाधार पर अधिकार करने के लिए किए गए आक्रमण के दौरान कैप्टेन देविन्द्र सिंह अहलावत डोगरा रेजिमेंट की बटालियन की एक कम्पनी का नेतृत्व कर रहे थे। उनकी बटालियन को पुल के पूर्वी सिरे पर अधिकार करने का कार्य सौंपा गया था। इस स्थान पर कंकरीट-बांध पर कई जगह टैंक-भेदी और भारी तथा हल्की स्वचालित तोपों के साथ शत्रु की रक्षात्मक फौजों का जमाव था। कैप्टेन अहलावत द्वारा संचालित कम्पनी को कंकरीट पिल-बाक्स से हो रही भारी मीडियम मशीन गन की गोलाबारी का सामना करना पड़ा। अपने जीवन की बिल्कुल परवाह न करते हुए कैप्टेन अहलावत ने पिल-बाक्स पर आक्रमण कर दिया और मशीन गन के करम बैरल पर दायें हाथ से झपट पड़े तथा पिल-बाक्स के अन्दर एक हथगोला फेंक कर तोप को शान्त कर दिया। इस प्रकार उन्होंने आक्रमण की गति जारी रखी और लक्ष्य पर हावी हो गये। इस कार्यवाही में कैप्टेन अहलावत ने वीरगति पाई। उनकी लाश पर 6 गोलियों के घाव पाए गए और अन्त समय में वे मशीन गन की बैरल को मुट्ठी में पकड़े हुए थे।

इस संक्रिया में कैप्टेन देविन्द्र सिंह अहलावत ने स्थल सेना की उच्च परम्पराओं के अनुकूल विशेष वीरता, उत्कृष्ट नेतृत्व और दृढ़ संकल्प का परिचय दिया।

32. कैप्टेन प्रदीप कुमार गौड़,
(आई०सी०-16177),
आर्टिलरी। **(मरणोपरान्त)**

(पुरस्कार की प्रभावी तिथि—14 दिसम्बर 1971)

कैप्टेन प्रदीप कुमार गौड़, पश्चिमी मोर्चे पर तैनात हवाई प्रेक्षण चौकी स्क्वाड्रन में हवाई प्रेक्षण चौकी पाइलट थे। ये पूरी कार्यवाही के दौरान शत्रु के छोटे हथियारों की भारी गोलाबारी और तोपखाने के हवाई विस्फोट-गोलाबारी के बावजूद उस के इलाकों में दूर तक जाकर चौबीसों घंटे उड़ते रहे। उन्होंने अपनी जान की तनिक परवाह न करके तोपखाने की गोलाबारी का निर्देशन करते हुए शत्रु के बारे में आवश्यक खबरें हासिल कीं। 14 दिसम्बर, 1971 को कैप्टेन प्रदीप कुमार गौड़ को शत्रु के प्रदेश में दूर तक उस के लक्ष्यों का पता लगाने और पहचानने का काम सौंपा गया। यह एक महत्वपूर्ण प्रयास था और हमारे सैन्यदलों के होने वाले हमलों की सफलता बहुत कुछ इस पर निर्भर करती थी। इस प्रयास के दौरान कैप्टेन गौड़ ने उस क्षेत्र में शत्रु के तीन सैबर जेट हवाई जहाजों को उड़ते हुए देखा। उन्हें देख कर अड्डे पर लौटने और खतरे से बचने के बजाए इन्होंने अपने प्रयास के महत्व को समझते हुए उड़ान जारी रखी।

इस बहादुर अधिकारी ने सैबर जेटों की गोलाबारी से बचकर अपना काम पूरा किया लेकिन अंत में शत्रु के सैबर जेटों ने हमला करके उनके जहाज को गिरा दिया।

इस कार्यवाही में कैप्टेन प्रदीप कुमार गौड़ ने उत्कृष्ट वीरता, असाधारण कर्त्तव्यपरायणता दिखाते हुए अपना जीवन न्यौछावर कर दिया।

33. कैप्टेन शंकर शंखपण वाल्कर,
(आई सी०-23473), मद्रास रेजिमेंट **(मरणोपरान्त)**

(पुरस्कार की प्रभावी तिथि—16, दिसम्बर 1971

कैप्टेन शंकर शंखपण वाल्कर पश्चिमी मोर्चे पर पाकिस्तान के विरुद्ध हाल की संक्रियाओं के दौरान मद्रास रेजिमेंट की एक बटालियन के मार्टर अफसर थे। 16 दिसम्बर 1971 को जब उनकी बटालियन 42 मील आगे चलकर हिंगूरी तार पहुँची तो शत्रु ने अपने ठिकानों से इस पर भारी गोलाबारी शुरू कर दी। अपनी सुरक्षा की तनिक भी परवाह न करते हुए कैप्टेन वाल्कर हर राइफल कम्पनी के ठिकानों पर रक्षात्मक फायर-कार्य को मजबूत करने के लिए गए। ऐसा करते समय उन्हों दो बार किर्चें लगीं और वे घायल हो गये परन्तु फिर भी उन्होंने वहां से हटने से इन्कार कर दिया और उत्कृष्ट वीरता और कर्तव्यपरायणता का परिचय देते हुए अपना कार्य करते रहे। सारी रात शत्रु भारी गोलाबारी करता रहा और अगली सुबह जल्दी ही शत्रु ने दो कम्पनी ठिकानों पर हमला बोल दिया। घायल होते हुए भी कैप्टेन शंकर शंखपण वाल्कर अपने काम में जुटे रहे और शत्रु पर एक दम सही मार्टर फायर डालते रहे और उसे भारी जानी नुकसान पहुँचाया। बाद के हमले के दौरान कैप्टेन शंकर शंखपण वाल्कर ने अपने सैनिकों को डटे रहने की प्रेरणा दी, उन्होंने स्वयं शत्रु के कम से कम 4 सैनिकों को मारा और शत्रु को पीछ हटने पर मजबूर कर दिया। लेकिन इस कार्यवाही में वे बुरी तरह घायल हो गए। अंतिम राउण्ड फायर करने के बाद भारी घावों के कारण उनकी मृत्यु हो गई।

इस सारी कार्यवाही में कैप्टेन शंकर शंखपण वाल्कर ने विशिष्ट शूरवीरता, प्रेरणादायक नेतृत्व और अनुकरणीय कर्त्तव्यपरायणता का परिचय दिया। वे अंतिम क्षण तक बहादुरी से लड़ते रहे।

34. सैकिन्ड लेफ्टिनेंट शमशेर सिंह सामरा,
(एस०एस०-22826), गार्डस **(मरणोपरान्त)**

सैकिन्ड लैफ्टिनेंट शमशेर सिंह सामरा ब्रिगेड आफ दी गार्डस की बटालियन के प्लाटून कमांडर थे। इनकी बटालियन पूर्वी मोर्चे पर हमारी रक्षात्मक कार्यवाही के तौर पर लगी हुई थी। कार्यवाही के दौरान शत्रु ने अपने स्वचालित (आटोमैटिक) हथियारों से हमारे जवानों पर बड़ी मात्रा में दुरुस्ती से गोलाबारी की। भारी गोलाबारी के बावजूद सैकिन्ड लैफ्टिनेंट शमशेर सिंह सामरा ने अपने जवानों को और भी जोर से हमला करने का बढ़ावा दिया। ठिकाने से लगभग 25 गज की दूरी पर पहुँचते ही मीडियम मशीनगन की गोलियों की बौछार इनकी छाती में लगी। फिर भी बिना घबराए उन्होंने हमला किया और ग्रेनेड फैंक कर मीडियम मशीनगन के बंकर को तबाह कर दिया। इस के बाद वे दूसरे बंकर की तरफ तेजी से बढ़ने लगे। इसी बीच उन्हें गोलियों की दूसरी बौछार आ लगी जिसकी वजह से हाथ में ग्रेनेड पकड़े-पकड़े उनकी मृत्यु हो गई। उनके इस साहसपूर्ण कृत्य ने उनकी कमान को प्रेरणा दी और उन्होंने अन्त में अपना लक्ष्य हासिल कर लिया।

इस कार्यवाही में सैकिन्ड लफ्टिनेंट शमशेर सिंह सामरा ने उत्कृष्ट वीरता और दृढ़ संकल्प का परिचय देते हुए महान वलिदान किया।

35. जे० सी० 39248 सूबेदार मलकीयत सिंह,
पंजाब रेजिमेंट। **(मरणोपरान्त)**

जे० सी० 39248 सूबेदार मलकीयत सिंह पंजाब रेजीमेंट की बटालियन की एक प्लाटून की कमान कर रहे थे। यह प्लाटून पूर्वी मोर्चे पर एक महत्वपूर्ण सुरक्षित इलाके पर अपना कब्जा बनाए हुए थी। इनके ठिकानों पर शत्रु की इन्फेन्ट्री और टैंकों ने मिल कर बड़ी दाताद में हमला किया। सूबेदार मलकीयत सिंह एक खाई से दूसरी खाई में जाकर अपने जवानों का हौसला बढ़ाते रहे। इसी बीच शत्रु 50 गज की दूरी पर रह गया और आड़ वाले ठिकानों से उसने इनके ठिकानों पर लाइट मशीनगनों से कारगर गोलाबारी करना और ग्रेनेड फेंकना शुरू किया। अपनी जान की जरा भी परवाह न करते हुए यह शत्रु पर वार करने के लिए रेंगते हुए आगे बढ़े और जख्मी होने पर भी उन्होंने शत्रु के दो मशीनगनरों को मार डाला। लेकिन तभी शत्रु के टैंक का एक गोला लगा जिसकी वजह से इनकी मृत्यु हो गई।

इस पूरी कार्यवाही में सूबेदार मलकीयत सिंह ने उत्कृष्ट वीरता और नेतृत्व का परिचय दिया।

36. जे० सी०-33029 सूबेदार मोहिन्दर सिंह,
पंजाब रेजिमेंट।

(पुरस्कार की प्रभावी तिथि—7 दिसम्बर, 1971)

कारगिल क्षेत्र में शुत्र की एक अच्छी तरह मोर्चाबन्दी चौकी पर, हमले में सूबेदार मोहिन्दर सिंह, पंजाब रेजिमेंट की एक बटालियन की एक प्लाटून की कमान कर रहे थे।

शत्रु की इस चौकी को मीडियम मशीनगन से मदद मिल रही थी। शत्रु की मीडियम मशीनगनें भारी कारगर गोलाबारी कर रही थीं। जिसकी वजह से हमारा आगे बढ़ना रुक गया। निजी उदाहरण के द्वारा इन्होंने अपने सैनिकों को हमले की गति बनाये रखने के लिए प्रोत्साहित और प्रेरित किया। अपनी जान की जरा भी परवाह किये बिना वे आगे की तरफ तेजी से झपटे, शत्रु की मीडियम मशीनगन का एक बंकर तबाह किया और करीब से लड़ते हुए शत्रु को भारी जानी नुकसान पहुंचाया। अपनी निजी मिसाल और बहादुरी से अपने सैनिकों में इतना जोश पैदा किया कि हमला कामयाब हुआ। पूरी कार्यवाही में सूबेदार मोहिन्दर सिंह ने उत्कृष्ट वीरता और प्रेरणादायक नेतृत्व का परिचय दिया।

37. 5032571 हवलदार बीर बहादुर पुन,
गोरखा राइफल्स।

(पुरस्कार की प्रभावी तिथि—4 दिसम्बर, 1971)

पहली गोरखा राइफल्स को पूर्वी मोर्चे पर, दरसाना में शत्रु के ठिकानों पर कब्जा करने का काम सौंपा गया था। शत्रु, ऐसे ठिकानों पर जमा हुआ था जिस की अच्छी तरह मोर्चाबन्दी कर ली गई और जिसे मशीनगन लगाकर और मजबूत कर लिया था तथा उसके चारों ओर लम्बा-चौड़ा सुरंग क्षेत्र था। हवलदार बीर बहादुर पुन उस कम्पनी में थे जिसे दरसाना के पूर्व में चांदपुर ग्राम को हथियाने का काम सौंपा गया था। 4 दिसम्बर, 1971 को जब प्रहार सैन्यदल अपने लक्ष्य की ओर बढ़ रहा था। उस समय शत्रु ने अपने पूरे अनुभाग से तोपखाने और छोटे हथियारों से फायर डालकर हमारे सैन्यदलों को जवानों को भारी संख्या में हताहत किया। हवलदार बीर बहादुर पुन अपनी प्लाटून से आग बढ़े और जवानो को लक्ष्य की ओर आगे बढ़ने के लिए प्रेरित करते हुए बढ़ावा देने लगे। शत्रु की भारी मशीनगन चौकी को देखते ही, जिसकी गोलाबारी से हमारे बहुत सारे जवान हताहत हुए थे, वे एक नाले में से होकर उसकी ओर लपके, शत्रु की भारी गोलाबारी के बीच 100 गज तक रेंगकर आगे बढ़े और बंकर के पास पहुंच कर उसमें दो हथगोले फैंककर चौकी को खामोश कर दिया। इस कार्य से उनके जवानों को इतनी अधिक प्रेरणा और स्फूर्ति मिली कि उन्होंने मिनटों में लक्ष्य पर कब्जा कर लिया।

इस कार्यवाही में हवलदार बीर बहादुर पुन नें सैना की उच्चस्तम परम्पराओं के अनुरूप शत्रु के सामने अपनी जान की तनिक भी परवाह न करते हुए उत्कृष्ट वीरता और अद्वितीय कर्त्तव्य-परायणता का परिचय दिया।

38. 2550166 हवलदार थामस फिलिपोस,
मद्रास रेजिमेन्ट।

(पुरस्कार की प्रभावी तिथि—15 दिसम्बर, 1971)

हवलदार थामस फिलिपोस 15/16 दिसम्बर, 1971 की रात्रि को बसन्तार के युद्ध के दौरान मद्रास रेजिमेंट की एक बटालियन में प्लाटून हवलदार थे। हमले के दौरान जब इनके प्लाटून कमांडर गोली से घायल हो गये और आगे न बढ़ सके, तब हवलदार थोमस फलिपोस ने प्लाटून की कमान संभाली। प्लाटून में इतनी भारी संख्या में जवान हताहत हुए कि लक्ष्य पर कब्जा करने के बाद कम्पनी की तादाद काफी कम हो चुकी थी। ऐन उसी समय, शत्रु की इन्फेन्ट्री ने उन पर जवाबी हमला किया। प्लाटून की कम संख्या की परवाह न करते हुए हवलदार थामस फिलिपोस ने विशिष्ट शौर्य, कर्त्तव्य परायणता और सर्वोच्च नेतृत्व का परिचय दिया। इन्होंने बड़ी बहादुरी से अपने थोड़े से जवानों के साथ संगीनों से धावा बोल दिया। इन्होंने अपनी इस छोटी सी सैन्यदल को प्रोत्साहित और प्रेरित किया। गोली से गहरा घाव लगने के बावजूद इन्होंने शत्रु पर इतना जोरदार धावा किया कि वह हतोत्साहित होकर भाग खड़ा हुआ।

इस पूरी कार्यवाही में हवलदार थामस फिलिपोस ने प्रतिकूल परिस्थितियों में दृढ़ नेतृत्व का परिचय दिया और सेना की सर्वोच्च परम्पराओं के अनुकूल उत्कृष्ट वीरता और कर्त्तव्यपरायणता का आदर्श प्रस्तुत किया।

39. 2960050 लांस नायक ब्रिग पाल सिंह,
राजपूत रैजिमेंट **(मरणोपरान्त)**

(पुरस्कार की प्रभावी तिथि—13 दिसम्बर, 1971)

पश्चिमी मोर्चे पर शत्रु की एक चौकी पर हमले के दौरान लांस नायक ब्रिग पाल सिंह राजपूत रैजिमेंट की बटालियन के एक सेक्शन की कमान कर रहे थे। बटालियन द्वारा चौकी पर कब्जा कर लेने के बाद भी पिल-बक्सों में लगी शत्रु की दो मीडियम मशीनगनें हमारी पुनर्गठन की कार्यवाही में अड़चन डाल रही थीं और हमारे सैनिकों को जानी नुकसान पहुंचा रही थीं। लांस नायक ब्रिग पाल सिंह ने महसूस किया कि इन गनों को खामोश करना जरूरी है। उन्होंने दो और जवानों को अपने साथ लिया और अपनी जान और पुरक्षा की बिल्कुल भी परवाह न करते हुए वे पहले बंकर तक 200 गज रेंग कर गये और उन्होंने बंकर में एक ग्रेनेड फेंक कर एक मीडियम मशीनगन को खामोश कर दिया। इसके बाद उन्होंने दूसरे बंकर की तरफ रेंगना शुरू किया, लेकिन इस दौरान मशीनगन से गोलियों की एक बौछार उनके बायें कंधे पर लगी। बेहद खून बहने के बावजूद वे दूसरे बंकर के 6 फुट के फासले तक रेंग कर पहुंच गये थे और ग्रेनेड भीतर फेंकने वाले ही थे कि अचानक स्वचालित हथियार से गोलियों की दूसरी बौछार उन की छाती पर लगी जिससे उनकी वही मृत्यु हो गयी। लेकिन उनके बहादुरी के इस कारनामे से शत्रु घबरा गया और वह मशीनगन तथा भारी मात्रा में गोलाबारूद छोड़ कर उस बंकर से भाग गया।

इस कार्यवाही से लांस नायक ब्रिग पाल सिंह ने उत्कृष्ट वीरता और दृढ़ संकल्प का परिचय दिया और भारतीय सेना की सर्वोच्च परम्पराओं के अनुकूल सर्वोत्तम बलिदान दिया।

40. 13664646 लांस नायक नर बहादुर छेत्री,
गार्डस

(पुरस्कार की प्रभावी तिथि—4 दिसम्बर, 1971)

लांस नायक नर बहादुर छेत्री ब्रिगेड आफ गार्डस की एक बटालियन की एक प्लाटून का अंग थे, जो पश्चिमी मोर्चे पर "मुनब्बर तवी" के पार छम्ब में तैनात थी।

4 दिसम्बर 1971 को इन्फन्ट्री और बक्तर की मिली जुली सेना के साथ शत्रु ने बहुत भारी हमला किया। लांस नायक नर बहादुर छेत्री के ठिकानों पर आर्टिलरी मार्टर और स्वचालित गनों से शत्रु भारी गोलाबारी कर रहा था। अपनी सुरक्षा की तनिक भी परवाह न करते हुए लांस नायक छेत्री ने दुश्मन पर गोलाबारी की और शत्रु के पांच टैंकों को बर्बाद कर दिया।

इस कार्यवाही में लांस नायक नर बहादुर छेत्री ने सेना की सर्वोच्च परम्पराओं के अनुकूल विशिष्ट शूरवीरता और कर्त्तव्यपरायणता का परिचय दिया।

41. 13657079 लांस नायक राम उग्र पाण्डे
गार्डस (मरणोपरान्त)

13657079 लान्स नायक राम उग्र पाण्डे, ब्रिग्रेड आफ गार्डस की एक बटालियन के एक सैक्शन की कमान कर रहे थे, जो कि पूर्वी मोर्चे पर हमारी रक्षात्मक कार्यवाही के तौर पर शत्रु की चौकी पर हमला करने में व्यवस्थ थी। शत्रु अपने सुदृढ़ मोर्चों से सही और भारी गोलाबारी कर रहा था, जिस के कारण प्रहार करने वाल सैन्यदलों की प्रगति रुक गई थी। लांस नायक पाण्डे जमीन पर रेंगते हुए आगे बढ़े और उन्होंने हथगोलों से एक के बाद एक शत्रु के दो बंकर नष्ट कर दिये। इसके बाद उन्होंने एक राकट लांचर लेकर तीसरा बंकर बरबाद कर दिया। लेकिन यहां वे बुरी तरह जख्मी हुए और और उन्होंने घटना-स्थल पर ही वीरगति पाई।

लांस नायक राम उग्र पाण्डे ने अनुकरणीय वीरता और नेतृत्व दिखाया और महान बलिदान दिया।

42. 3355332 लांस नायक संघारा सिंह
सिख रेजिमेंट (मरणोपरान्त)

(**पुरस्कार की प्रभावी तिथी**—17 दिसम्बर, 1971)

पुलकंजरी के ठिकाने पर शत्रु की एक मजबूत स्थान के गिर्द नरनाशी और टैंकरोधी सुरंगों का जाल बिछा हुआ था और इसे बहुत सी मशीनगनों से मदद मिल रही थी। इस पर 17 दिसम्बर, 1971 को हमले के दौरान इनकी प्लाटून पर जमीन और आर्टिलरी से भारी गोलाबारी होने लगी, खास तौर पर बांए बाजू की दो मशीनगनें भारी गोलाबारी कर रही थीं। लांस नायक संघारा सिंह बाएं बाजू के सैक्शन के सहायक कमान्डर थे और शत्रु की इन मशीनगनों के लगातार गोलाबारी से इनका सैक्शन जरा भी आगे नहीं बढ़ पा रहा था। अपनी जान की जरा भी परवाह न करते हुए लांस नायक संघारा सिंह सुरंग क्षेत्रों में से शत्रु की मशीनगन चौकी की तरफ लपके और उन्होंने बंकर में ग्रेनेड फैंक कर गन को बिल्कुल खामोश कर दिया। इसके बाद वे दूसरी मशीनगन चौकी की तरफ दौड़े और लूपछेद पर कूदते हुए उन्होंने गन को छीन लिया। ऐसा करते समय इनके पेट पर गोलियों की एक बौछार पड़ी, लेकिन उन्होंने अडिग रह कर मशीन गन को पकड़े रखी। शत्रु बुरी तरह घबरा गया और लांस नायक संघरा सिंह के हाथों में मशीनगन छोड़कर बंकर से भाग गया। इन मशीनगनों को बर्बाद कर देने से हमारे सैनिक शत्रु की चौकी को रौदने में सफल हुए, लेकिन लांस नायक संघारा सिंह ने घावों के कारण वीरगति पाई।

बहादुरी के अपने इस कारनामे में लांस नायक संघारा सिंह ने उत्कृष्ट वीरता और शत्रु का मुकाबला करते हुए अनुकरणीय कर्त्तव्यपरायणता का परिचय दिया। उनका यह महान बलिदान भारतीय सैना की उच्चत्तम परम्पराओं के अनुकूल है।

43. 9212865 सिपाही अनसूया प्रसाद
महार रेजिमेंट (मरणोपरान्त)

सिपाही अनसूया प्रसाद एक युवा सैनिक थे जिन्होंने भरती के बाद प्रशिक्षण पूरा करके हाल ही में महार रेजिमेंट की एक बटालियन में प्रवेश किया था। उनकी बटालियन को पूर्वी मोर्चे पर शत्रु के एक ठिकाने पर कब्जा करने का काम सौंपा गया था। शत्रु पूरी तरह किलेबंदी की गई एक इमारत में था जहां से वह पूरे इलाके पर हावी हो रहा था। आक्रमण के दौरान, आक्रमणकारी सैनिकों को शत्रु की आटोमेटिक मशीनगनों की भारी गोलाबारी ने रोक दिया। शीघ्र ही यह स्पष्ट हो गया कि जब तक उस इमारत को नष्ट नहीं किया जाता तब तक हमारे सैनिक उसके आसपास के शत्रु के बंकरों पर घेरा नही डाल सकेंगे। इसलिए शत्रु के मोर्चों के भीतर एक दस्ता भेजने का फैसला किया गया ताकि वह वहां जाकर उस इमारत को आग लागा दें। सिपाही अनसूया प्रसाद ने अपने आपको इस काम के लिए समर्पित किया और अपने साथ कुछ गोले लेकर, अपनी जान को हथेली पर रख, शत्रु के मोर्चों की ओर रेंगते हुए बढ़े। इस बीच उनकी दोनों टांगों मे गोली लगी, परन्तु वे रुके नहीं। रेंगते हुए वे इमारत तक पहुंच गए और इमारत के पीछे वाले एक कमरे में उन्होंने गोलाबारूद का ढेर पड़ा देखा। उन्होंने इसे उड़ाने की ठानी और इसकी तरफ रेंगने लगे। इसी बीच उनके कन्धे में मशीन गन की गोली आ लगी। अपने घावों की तनिक भी परवाह न करते हुए, खून में लथपथ, वे बड़ी कठिनाई से उस कमरे तक पहुंचे और घावों के कारण दम तोड़ने से पहले उन्होंने वे गोले लुढ़का कर इमारत को आग लगा दी। उनके इस कारनामे से शत्रु को उस इमारत को छोड़ना पड़ा और हमारे सैनिक उस मोर्चे पर अधिकार करने में सफल हुए।

इस कार्यवाही में, सिपाही अनसूया प्रसाद ने उत्कृष्ट वीरता, दृढ़ सकल्प का परिचय दिया और कर्तव्य निभाने में अपना सर्वस्व न्योछावर कर दिया।

44. 5439887 राइफलमैन दिल बहादुर छेत्री
गोरखा राइफल्स

राइफलमैन दिल बहादुर छेत्री, गोरखा राइफल्स की उस बटालियन में थे, जिसे पूर्वी मोर्चे के 'अतग्राम' क्षेत्र में से शत्रु का सफाया करने का काम सौंपा गया था। इस क्षेत्र की शत्रु ने मजबूती से किलाबंदी कर रखी थी और वह वहां बड़ी संख्या में मौजूद था। प्रहार करने के दौरान हमार सैन्यदलों पर शत्रु ने मंझली मशीनगनों से लगातार अचूक गोलाबारी की जिससें भारी संख्या में हमारे सैनिक हताहत हुए। राइफलमैन दिल

बहादुर छेत्री ने यह महसूस करके कि इस मशीनगन को खामोश करना कितना जरूरी है अपनी जान की परवाह किये बिना एक बंकर से दूसरे बकर में कूदकूद कर अपनी खुकरी से आठ शत्रु के सिर काट डाले और मीडियम मशीन गन पर कब्जा कर लिया। इनके दृढ़ निश्चय और साहस से सभी सैनिकों ने प्रेरित होकर उस लक्ष्य पर कब्जा कर लिया।

इस कार्यवाही में राइफलमैन दिल बहादुर छेत्री ने भारतीय सेन की उच्चतम परम्परा के अनुसार उत्कृष्ट वीरता और कर्त्तव्यपरायणता का परिचय दिया।

45. 2760401 सिपाही पांडुरंग सालुखे
मराठा लाइट इन्फैन्ट्री (**मरणोपरांत**)
(पुरस्कार की प्रभावी तिथि—6 **दिसम्बर** 1971)

बक्तर की मदद से बटालियन मराठा लाइट इन्फैन्ट्री द्वारा एक प्रहार के दौरान शत्रु के एक राकेट लाचर ने इन्फैन्ट्री के साथ प्रहार करते हुए हमारे टैंकों के लिये भारी खतरा पैदा कर दिया। अपने टैंकों के लिये खतरे को महसूस करके, सिपाही पांडुरंग सालुंखे अपनी जान को भारी जोखिम में डाल कर शत्रु की तरफ झपटे और लपक कर शत्रु से उस का राकेट लांचर छीन लिया हालांकि इस बीच उन पर बिल्कुल करीब से स्टेनगन की गोलियों की एक बौछार पड़ी। इस तरह उन्होंने राकेट लांचर को खामोश कर दिया, लेकिन सबसे बड़ी कुर्बानी दे गये।

इस कार्यवाही में सिपाही पांडुरंग पालुखे ने अदम्य साहस और उच्चकोटि के दृढ़ संकल्प का परिचय दिया।

46. 5037008 राइफलमैन पातीराम गुरंग
गोरखा राइफल्स (**मरणोपरांत**)

नं० 5037008 राइफलमैन पातीराम गुरंग पूर्वी मोर्चे पर राइफल कम्पनी से सम्बन्धित एक मंझली मशीन गन डिटेचमेंट के सदस्य थे। शत्रु के एक बंकर से उनकी कम्पनी पर भारी तोपें जोरदार और सही गोलाबारी कर रही थी। राइफलमन पातीराम गुरंग फौरन आगे बढ़े और उन्होंने मशीनगन को कूल्हे से लगा कर फायर करते हुए शत्रु की मशीन गन चौकी पर हमला कर दिया। ज्योंही, वह आगे बढ़े उन पर मशीन गन की गोलियों की बौछार पड़ी। यद्यपि वे बुरी तरह से जख्मी हो गये थे, फिर भी उन्होंने हमला जारी रखा और युद्धस्थल में वीरगति पाने से पहले शत्रु की मशीन गन को खामोश कर दिया।

इस कार्यवाही में राइफलमैन पातीराम गुरंग ने निजी सुरक्षा की तनिक भी परवाह न करते हुये उत्कृष्ट वीरता का परिचय दिया।

सं० 19-प्रेज/72—राष्ट्रपति निम्नांकित व्यक्तियों को पाकिस्तान के विरुद्ध हाल की संक्रियाओं में उत्कृष्ट वीरता के लिए 'महावीर चक्र" प्रदान करने का सहर्ष अनुमोदन करते हैं:—

1. कैप्टेन स्वराज प्रकाश ए० वी० एस० एम०,
भारतीय नौसेना

कैप्टेन स्वराज प्रकाश ने आई० एन० एस० विक्रान्त का कमान किया। यह जहांज बंगाल की खाड़ी में शत्रु के विरुद्ध संक्रिया करने वाला नौसैनिक विभंजन और मार करने वाला केन्द्र था। इन संक्रियाओं के दौरान, यह जहाज अत्यन्त खतरनाक समुद्र में संक्रिया करता रहा और शत्रु की पनडुब्बियों और हवाई जहाजों दोनों का ही मुख्य लक्ष्य बना रहा। अदम्य साहस के साथ इन्होंने शत्रु के विरुद्ध लगातार आक्रमक संक्रियायें कीं। विक्रान्त के सफल हवाई हमलों से बंगला देश के पूरे समुद्र तट के बन्दरगाहों पर विनाशकारी प्रभाव पड़ा और शत्रु समुद्री और जमीनों जलमार्गों के प्रयोग से वंचित हो गया। विक्रान्त के रूप में हमारी नौसेना की संपूर्ण सर्वोच्चता ने शत्रु को अपंग कर दिया, उसका हौसला तोड़ दिया और पूर्वी क्षेत्र में शत्रु को बहुत जल्दी आत्मसमर्ण करने के लिये बाध्य कर दिया।

कैप्टेन स्वराज प्रकाश ने भारतीय नौसेना की सर्वोच्च परम्पराओं के अनुकूल विशिष्ट शौर्य, प्रेरणादायक नेतृत्व, सैनिक दक्षता और कर्त्तव्यपरायणता का परिचय दिया।

2. कार्वाहक कैप्टेन महेन्द्रनाथ मुल्ला,
भारतीय नौसेना (**मरणोपरांत**)
(पुरस्कार की प्रभावी तिथि—9 **दिसम्बर** 1971)

फ्रिगेट स्क्वाड्रन ने वरिष्ठ अफसर कैप्टेन महेन्द्रनाथ मुल्ला की कमान के अधीन भारतीय नौसेना के दो जहाजों को उत्तरी अरब सागर में एक पकिस्तानी पनडुब्बी का पता लगाने और उसे नष्ट करने का काम सौंपा गया था। दिनांक 9 दिसम्बर 1971 की रात को इन कार्यवाहियों में शत्रु की पनडुब्बी ने आई० एन० एस० खुकरी को तारपीडो का निशाना बना कर डुबो दिया। जहाज को छोड़ने का फैसला कर के कैप्टेन मुल्ला ने स्वयं अपनी सुरक्षा की परवाह किये बिना अपने जहाज की कप्तनी को बचाने के प्रबंध की बहुत शांत, एकाग्र तथा क्रमबद्ध ढंग से देख-रेख की। बिल्कुल अंतिम समय में जब कि जहाज डूब रहा था कैप्टेन मुल्ला ने सूझबूझ का परिचय दिया और बचाव कार्यवाहियों का संचालन करना जारी रखा तथा अपना प्राण-रक्षीगियर एक नाविक को देकर अपनी जान बचाने से इंकार कर दिया। अधिक से अधिक जवानों को जहाज छोड़ देने का निर्देश देकर कैप्टेन मुल्ला पुल के पास यह देखने के लिये लौटे कि बचाव की अन्य क्या कार्यवाहियां की जा सकती थीं। ऐसा करते हुए कैप्टेन मुल्ला को अंत में जहाज के साथ समुद्र में डूबते देखा गया। उनका कार्य, बर्ताव तथा आदर्श जो उन्होंने स्थापित किया, सेवा की उच्चतम परम्पराओं के अनुकूल है। कैप्टेन महेन्द्र नाथ मुल्ला ने अदितीय शौर्य तथा आत्मोत्सर्ग का प्रदर्शन किया।

3. कमांडर बभ्रुवाहन यादव,
भारतीय नौसेना
(पुरस्कार की प्रभावी तिथि—5 **दिसम्बर**, 1971)

कमांडर बभ्रुवाहन यादव, युद्धपोतों की एक डिवीजन के स्क्वाड्रन कमांडर थे, जो पश्चिमी बेड़े के टास्क ग्रुप का एक अंग था। इसे 4/5 दिसम्बर, 1971 की रात को कराची के

समुद्र तट पर आक्रामक हमला करने का आदेश दिया गया। शत्रु के हवाई, नौसैनिक और पनडुब्बियों के हमलों के खतरे के बावजूद शत्रु के समुद्र में काफी भीतर तक घुसकर इन्होंने अपने जहाजों को डिवीजन का नेतृत्व किया और उसने शत्रु के विशाल युद्धपोतों के दो ग्रुपों से मुठभेड़ की। यद्यपि शत्रु के ध्वंसकों पर लगी तोपों की भारी गोलाबारी से उनके पोतों और कार्मिकों को काफी खतरा था फिर भी कमांडर यादव ने शत्रु पर तेज और जोरदार हमला करने के लिए अपनी स्क्वाड्रन का नेतृत्व किया। इस परिणामस्वरूप, शत्रु के दो ध्वंसक और एक सुरंग अपमार्जक डूब गया।

इस कार्यवाही में, कमांडर बभ्रुवाहन यादव ने भारतीय नौसेना की उच्चतम परम्पराओं के अनुकूल उत्कृष्ट वीरता और असाधारण नेतृत्व का प्रदर्शन किया।

4. कमांडर कासरगोड पटनाशेट्टी गोपाल राव, वी० एस० एम०, भारतीय नौसेना।

(पुरस्कार की प्रभावी तिथि—4 दिसम्बर 1971)

पश्चिमी बेड़े के एक छोटे टास्क-ग्रुप ने 4/5 दिसम्बर, 1971 की रात में करांची के निकट शत्रु के समुद्र तट पर आक्रामक कार्यवाही की। शत्रु की हवाई, नौसैनिक और पनडुब्बियों के खतरे के बावजूद कमान्डर कासरगोड पटनाशेट्टी गोपाल राव टास्क-ग्रुप को शत्रु के समुद्र तट में अन्दर तक ले गए और शत्रु के बड़े युद्धपोतों के दो ग्रुपों का पता लगाने में सफल हुए। शत्रु के ध्वंसक पोतों से भारी तोपों से गोलाबारी होने और अपने जहाजों और सैनिकों को खतरा होने के बावजूद कमान्डर राव ने दृढ़ संकल्प से जम कर हमला किया, जिससे शत्रु के दो ध्वंसक पोत और एक सुरंग अपमार्जक (माइनस्वीपर) डूब गए। शत्रु के युद्ध पोतों से निबटने के बाद कमांडर राव ने अपने टास्क ग्रुप को शत्रु के समुद्र तट क्षेत्र में और भीतर घुसने का आदेश दिया और करांची बन्दरगाह पर सफलतापूर्वक बम बरसाए जिससे बन्दरगाह के तेल और दूसरे संस्थापनों में आग लग गई।

इस संक्रिया में कमांडर कासरगोड पटनाशेट्टी गोपाल राव ने भारतीय नौसेना की उच्चत्तम परम्पराओं के अनुकूल विशिष्ट वीरता और उत्कृष्ट नेतृत्व का परिचय दिया।

5. कमांडर मोहन नारायण राव सामंत, भारतीय नौसेना

कमांडर मोहन नारायण राव सामंत उस चार क्राफ्ट वाले सैन्यदल के वरिष्ठ अधिकारी थे जिसने मोंगला और खुलना की बन्दरगाहों में शत्रु पर अत्यन्त साहसपूर्ण और बहुत सफल हमले किए थे। अपने स्क्वाड्रन को अत्यन्त कठिन तथा अपरिचित मार्ग से आगे बढ़ाते हुए कमांडर सामंत ने मोंगला में शत्रु को अचानक जा घेरा और उसे भारी जानी नुक्सान पहुंचा कर उसे रौंद डाला। उसके बाद कमांडर सामंत खुलन पर हमला करके बन्दरगाह में मोर्चे बनाकर डटी हुई बहुत बड़ी संख्या में शत्रु की सेना को नष्ट करने के लिये आगे बढ़े। घमासान युद्ध हुआ जिसमें सैन्यदल पर शत्रु ने लगातार हवाई हमले किए। सैन्यदल के साथ कार्यवाही में भाग लेने वाली मुक्ति वाहिनी की दो नौकाएं डूब गई। स्वयं अपनी सुरक्षा की तनिक भी परवाह न करते हुए इन्होंने न केवल जीवित जवानों की बड़ी संख्या को उठाने का प्रबंध किया बल्कि शत्रु पर भयानक हमले करके उसे भारी नुक्सान पहुंचाया। कमांडर सामंत कई बार बाल-बाल बचे लेकिन उन्होंने सुरक्षित जल-क्षेत्र में जाने से इंकार कर दिया। अपने व्यक्तिगत उदाहरण, असाधारण नेतृत्व से कमांडर सामंत ने अपने जवानों को स्थिति का मुकाबला करने और उत्कृष्ट वीरता से लड़ने के लिए प्रेरित किया।

इन कार्यवाहियों में कमांडर मोहन नारायण नराव सामंत ने अद्वितीय शौर्य, आत्मोत्सर्ग और नेतृत्व का प्रदर्शन किया।

6. लेफ्टिनेन्ट कमांडर जोजेफ पियस अल्फ्रेड नोरोन्हा, भारतीय नौसेना

(पुरस्कार की प्रभावी तिथि—8 दिसम्बर 1971)

लेफ्टिनेन्ट कमांडर जोजेफ पियस अल्फ्रेड नोरोहा, आई० एन० एस० पानवेल की कमान कर रहे थे। उनका जलपोत सैन्यदल का अंग था जिसे 8 दिसम्बर से 11 दिसम्बर 1971 की अवधि के दौरान मोंगला और खुलना क्षेत्रों में शत्रु के लक्ष्यों पर हमला करने का काम सौंपा गया था। खुलना क्षेत्र में कार्यवाही करते समय इस सैन्य दल पर शत्रु ने लगातार हवाई हमले किये और तट-स्थित शत्रु की रक्षा पंक्ति ने पानवेल पर भी हमला करना शुरू कर दिया। लेफ्टिनेन्ट कमांडर नोरोन्हो ने जलपोत का बहुत ही सीमित जल-क्षेत्र में बड़ी दक्षता तथा निर्भय होकर संचालन किया और तट-स्थित शत्रु के ठिकानों पर कारगर ढंग से आक्रमण किया। उन्होंने अपनी निजी मिसाल से अपने जवानों को प्रेरणा दी। उन्होंने और उनकी कम्पनी ने शत्रु के बिलकुल पास जाकर बड़ी लम्बी अवधि तक शत्रु से युद्ध किया। उनकी वीरता, स्वयं अपनी जान की बेपरवाही, उनके नेतृत्व तथा अथक शक्ति से उन के जवानों को प्रेरणा मिली और उन्होंने बड़े-बड़े काम किये। लेफ्टिनेन्ट कमांडर नोरोन्हा शत्रु की तट स्थित रक्षा सेना को खामोश करने में सफल हुए और उन्होंने शत्रु के महत्वपूर्ण संस्थापनों को भारी नुक्सान पहुंचाया।

पूरी कार्यवाही में लेफ्टिनेन्ट कमांडर जोजेफ पियस अल्फ्रेड नोरोन्हा ने उत्कृष्ट वीरता तथा असाधारण नेतृत्व का परिचय दिया।

7. लेफ्टिनेन्ट कमाण्डर संतोष कुमार गुप्ता, नौसेना मैडल भारतीय नौसेना

(पुरस्कार की प्रभावी तिथि—9 दिसम्बर 1971)

लेफ्टिनेन्ट कमान्डर संतोष कुमार गुप्ता उस भारतीय नौसेना के हवाई-स्क्वाड्रन की कमान में थे जो विमानवाही जहाज आई० एन० एस० विक्रान्त से संक्रामक कार्यवाही कर रहे थे। इन्होंने बमबारी की ग्यारह कार्यवाइयों की उड़ानों का बड़ी सफलता से नेतृत्व किया, जिसके फलस्वरूप शत्रु के पोतों को भारी नुक्सान पहुंचा और बंगलादेश के अनेक सेक्टरों में दुश्मन के मजबूती से रक्षित अनेक तटवर्ती संस्थापन बर्बाद हो गये। 9 दिसम्बर 1971 को लेफ्टिनेन्ट कमांडर

गुप्ता ने सी०-हाक वायुयानों से खुलना में शत्रु के स्थानों पर ठीक निशाने से सफल बमबारी की, जहां शत्रु की विमान-भेदी तोपें दनादन गोले बरसा रही थीं। इनके विमान पर गोला लगा और इससे इनका यान क्षतिग्रस्त हो गया। लेकिन फिर भी अपनी सुरक्षा की तनिक परवाह न करते हुए भारी खतरा उठा कर लेफ्टिनेन्ट कमांडर गुप्ता अदम्य संकल्प और बड़ी दक्षता से हमले का नेतृत्व करते रहे और इसके बाद अपनी डिवीजन को जहाज पर सुरक्षित लौटा लाये। लेफ्टिनेन्ट कमांडर गुप्ता ने अपने क्षतिग्रस्त यान को विमानवाही पोत पर सुरक्षित उतारने में महान साहस और सैनिक योग्यता का परिचय दिया। शेष कार्यवाहियों में भी लेफ्टिनेन्ट कमांडर गुप्ता ने हर अवसर पर बन्दरगाहों और तटीय संस्थानों और शत्रु के जहाजों पर हमला करने में अपने स्क्वाड्रन का नीचे से भारी गोलाबारी के बावजूद सफलतापूर्वक नेतृत्व किया। जिसके फलस्वरूप शत्रु एकदम अपंग हो गया और इससे चालना, खुलना और चटगांव क्षेत्र में शत्रु का विरोध कामयाबी से समाप्त करने में मदद मिली।

इन सभी संक्रियाओं में लेफ्टिनेन्ट गुप्ता ने विशिष्ट वीरता और उत्कृष्ट नेतृत्व का परिचय दिया।

8. लीडिंग सीमैन सी० सिंह (ओ० डी० 2)
नं० 87600

लीडिंग सीमैन सी० सिंह (ओ० डी०-2), नं० 87600 उस युद्ध पोत के सदस्य थे, जो उस जंगी बेड़ा का हिस्सा था जिसे 8 से 11 दिसम्बर, 1971 के दौरान मंगला और खुलना के इलाके में शत्रु के लक्ष्यों पर हमला करने का काम सौंपा गया था। जब यह बेड़ा खुलना से थोड़ी दूर कार्यवाही कर रहा था तो इस पर हवाई हमला हुआ और इनकी नाव डूब गई। वह गोले के टुकड़े से बहुत बुरी तरह घायल हो गए। शत्रु ने तट-वर्ती मोर्चों से पानी में बचे हुए इन जवानों पर गोला चलाना शुरू कर दिया। लीडिंग सीमैन सिंह ने देखा कि बचे हुए दो जवानों को, जिनमें एक घायल अफसर भी थे, तैरने में कठनाई हो रही है। घायल हो जाने के बावजूद, अपनी जान की परवाह न करते हुए वे उन्हें बचाने के लिये आगे बढ़े और शत्रु की भारी गोलाबारी में से होकर उन्हें किनारे तक ले आए। किनारे पर पहुंच कर घावों के बावजूद वे शत्रु की ओर लपके और अपने को शत्रु की गोलाबारी के सामने कर दिया, जिससे इनके दोनों साथी बचकर भाग गए। लीडिंग सीमैन सिंह को अंत में शत्रु ने पकड़ लिया और उन्हें बन्दी बना लिया। बंगला देश मुक्त हो जाने पर उन्हें छुड़ा लिया गया और अस्पताल में भरती कर दिया गया।

इस पूरी कार्यवाही के दौरान लीडिंग सीमैन सी० सिंह ने उत्कृष्ट वीरता और दृढ़ संकल्प का परिचय दिया।

सं० 20-पेज/72—राष्ट्रपति निम्नांकित व्यक्तियों को पाकिस्तान के विरुद्ध हाल की संक्रियाओं में उत्कृष्ट वीरता के लिये "महावीर चक्र" प्रदान करने का सहर्ष अनुमोदन करते हैं :—

ग्रुप कैप्टेन चंदन सिंह, ए वी एस एम, वी सी,
(3460), फ्लाइंग ब्रांच (पाइलट)
(पुरस्कार की प्रभावी तिथि—7 दिसम्बर, 1971)

ग्रुप कैप्टेन चंदन सिंह असम में वायुसेना स्टेशन के कमांडिंग आफिसर हैं। हाल ही में पाकिस्तान के साथ युद्ध के दौरान वह बंगला देश की मुक्ति के लिये संचालित वायु संक्रियाओं में सबसे आगे थे। वे फौजों की दो कम्पनियों को सिलहट क्षेत्र में वायुयान द्वारा ले जाने के लिये विशेष हेलिकाप्टर संक्रियाओं की योजना बनाने और उसे कार्यान्वित करने के लिए जिम्मेदार थे। जब ढाका की ओर सेना की प्रगति में आने वाली रुकावटों को दूर करना आवश्यक हो गया तब उन्होंने अपने नितांत सीमित हेलिकाप्टर बल के साथ 3000 जवानों और 40 टन उपस्कर और भारी गनों को ले जाने की योजना बनाई और उसे पूरा किया। इस संक्रिया में फौजों और उपस्कर को रात के समय पूरी तरह रक्षित क्षेत्र के अत्यन्त निकट उतारना था। प्रत्येक मिशन से पहले उन्होंने शत्रु की भारी गोलाबारी की बौछार में स्वयं टोह की। 7—8 दिसम्बर की रात को उन्होंने हेलिकाप्टर द्वारा ले जाने के कार्य की प्रगति और अपने पाइलटों को, जो भूमि से भारी गोलाबारी का मुकाबला कर रहे थे, प्रोत्साहित करने तथा पथप्रदर्शन करने के लिये शत्रु के क्षेत्र के भीतर आठ मिशन पूरे किये। बाद में इसी कार्यवाही में उन्होंने 18 मिशन पूरे किये और नये स्थानों पर वे स्वयं पहले ही उतरे। अनेक अवसरों पर उनके हेलिकाप्टर पर जमीनी गोलाबारी का प्रहार हुआ किन्तु इससे बाद के मिशनों को पूरा करने में वे विचलित नहीं हुये। इस मुख्य वायुवाहित संक्रिया की सफलता ने ढाका के पतन और बंगला देश में पाकिस्तानी सशस्त्र सेनाओं के आत्मसमर्पण में विशेष रूप से योगदान दिया।

इस पूरी कार्यवाही में, ग्रुप कैप्टेन चंदन सिंह ने उत्कृष्ट वीरता संगठनात्मक योग्यता, दृढ़ संकल्प और व्यावसायिक निपुणता का परिचय दिया।

2. विंग कमांडर एलन एलबर्ट डी कास्टा
(4580), फ्लाइंग ब्रांच (पाइलट)
(पुरस्कार की प्रभावी तिथि—4 दिसम्बर, 1971)

लड़ाकू बमबार स्क्वाड्रन के कमांडिंग अफसर विंग कमांडर एलन एलबर्ट डी कास्टा अपनी स्क्वाड्रन को संक्रियात्मक तैयारी के उच्चतम पराकाष्ठा तक ले गये। संक्रियाओं के दौरान अच्छी प्रकार रक्षित लक्ष्यों के सामने इन्होंने शत्रु के क्षेत्र के अन्दर कम से कम 15 मिशनों का नेतृत्व किया। और इस प्रकार अपने पाईलटों के सामने उज्ज्वल उदाहरण प्रस्तुत किया। विंग कमांडर डी-कास्टा 4 दिसम्बर, 1971 को शत्रु के रिसालवाला वायु मैदान पर आक्रमण करने वाले प्रथम अधिकारी थे। अगले दिन विंग कमांडर डी-कास्टा चिस्तियां मंडी की ओर मिशन ले गये और तीन टैंक तबाह किये। 6 दिसम्बर, 1971 को विंग कमांडर डी-कास्टा ने भारी विमान-भेदी गोलाबारी की परवाह न करते हुये डेरा बाबा नानक में टैंकों के जमाव पर आक्रमण किया। 7 दिसम्बर, 1971 को विंग कमांडर डी-कास्टा ने सुलेमानकी क्षेत्र में नीची उड़ान भर के फोटो टोह मिशन पूर्ण किया और उसी दिन नरोवा 1 के रेलवे स्टेशन पर आक्रमणकिया जहां उन्होंने व्यक्तिगत रूप से कई रेल वैगनों और संस्थापनाओं को क्षति पहुंचाई और उन्हें ध्वस्त किया। 8 से 12 दिस-म्बर, 1971 के दौरान उन्होंने कई टोह मिशनोंकी उड़ानें की जिनमें वे अपने साथ बहुत लाभदायक आसूचना लाये जिसके आधार पर वायु और थल संक्रियायें आयोजित की गई। तत्पश्चात लड़ाई के अन्त तक विंग कमांडर डी-कास्टा मुख्य रूप से रायबिड मार्शलिंग यार्ड,

कसूर-लाहौर रेलवे लाइन सहित रेलवे लक्ष्यों पर मिशनों का नेतृत्व करते रहे और भारी संख्या में वैगन बर्बाद किये तथा प्रत्येक लक्ष्य को विनाश-स्थल बना दिया। ये समस्त मिशन भारी विमान-भेदी गोला-बारी और कहीं-कहीं पाकिस्तानी वायु-प्रतिरोध के बावजूद पूरे किये गये।

इस पूरी कार्यवाही में विंग कमांडर एलन एलबर्ट डी-कास्टा ने उत्कृष्ट वीरता, दृढ़ संकल्प, असाधारण नेतृत्व और व्यावसायिक दक्षता का परिचय दिया।

3. विंग कमाण्डर सेसिल विवियन पार्कर
(4346).
फ्लाईंग ब्रांच (पाइलट)

विंग कमांडर सेसिल विवियन पार्कर ने, जोकि एक लड़ाकू बम वर्षक स्क्वाड्रन के कमान अधिकारी थे, ऐसे इलाकों में खूब अन्दर तक कई उड़ानों का नेतृत्व किया जो शत्रु के अधिकार में थे, और ऐसे ठिकानों पर प्रहार किये जिनकी सुरक्षा का शत्रु ने भारी प्रबन्ध कर रखा था। ऐसी ही एक उड़ान से लौटते समय, इनकी फार्मेशन पर शत्रु के सैबर जैट विमानों ने आक्रमण कर दिया। इस पर जो हवाई लड़ाई हुई उसमें विंग कमांडर पार्कर ने शत्रु के एक विमान को मार गिराया और दूसरे को भारी क्षति पहुंचाई। एक अन्य उड़ान के समय, विंग कमाण्डर पार्कर ने शत्रु के अटक स्थित तैल-शोधक कारखाने पर शत्रु की भारी विमानभेदी और छोटे हथियारों की गोलाबारी के बावजूद आक्रमण किया और कारखाने को भारी क्षति पहुंचाई।

इस पूरी कार्यवाही में, विंग कमाण्डर सेसिल विवियन पार्कर ने उत्कृष्ट वीरता और असाधारण नेतृत्व का परिचय दिया।

4. विंग कमाण्डर हरचरण सिंह मंगत
(4666), फ्लाईंग ब्रांच (पाइलट)

एक लड़ाकू बम्बार स्क्वाड्रन के कमान अधिकारी के रूप में, विंग कमाण्डर हरचरण सिंह मंगत ने शत्रु-विमानों को ऊपर जाकर घरने, थल-सेना को निकट से सहायता देने, और शत्रु के इलाके में दूर तक जाकर टोह लगाने के लिये कई उड़ानें भरी हैं। इन टोह उड़ानों से विंग कमाण्डर मंगत जो जानकारी लाये वह थलसेना और वायुसेना की संक्रियात्मक योजनायें बनाने में बहुत लाभदायक सिद्ध हुई। एक आक्रमक उड़ान के दौरान, विमानभेदी तोप की अन्धाधुन्ध गोलाबारी से उनके विमान पर तीन गोले लगे, परन्तु फिर भी उन्होंने आगे बढ़ना नहीं छोड़ा और तभी रुके जब उन्होंने देखा कि उनकी फार्मेशन के अन्य विमानों को भी भारी क्षति पहुंची है। इसी समय, शत्रु के विमानों ने उन्हें आ घेरा। इस पर भी वे अपनी फार्मेशन को खतरे से बाहर निकाल कर ले आये और उसे सुरक्षित अपने अड्डे पर पहुंचा दिया। नीचे उतरने पर यह पाया गया कि उनके विमान को व्यापक क्षति हुई है और नियन्त्रण सतहों के बड़े-बड़े भाग पूरे उड़ चुके हैं। ऐसे भारी क्षतिग्रस्त विमान को, केवल श्रेष्ठ उड़ान-दक्षता और उच्च कोटि के साहस से ही सकुशल वापिस लाया जा सकता था।

विंग कमांडर हरचरण सिंह मगत ने उत्कृष्ट वीरता, दृढ़ संकल्प, व्यावसायिकता दक्षता और असाधारण नेतृत्व का परिचय दिया है।

5. विंग कमांडर मन मोहन वीर सिंह तलवाड़
(4573) फ्लाईंग ब्रांच (पाइलट)

विंग कमांडर मन मोहन वीर सिंह तलवाड़ ने, जो कि एक बमवार स्क्वाड्रन के कमान अधिकारी थे, युद्ध के प्रथम 10 दिनों के शत्रु के अत्यन्त सुरक्षित ठिकानों पर पांच दिन और रात के मिशन पूरे किये। इन में से एक उड़ान के समय विंग कमांडर तलवाड़ ने सरगोधा में पाकिस्तानी वायुसेना की स्थापनाओं को भारी क्षति पहुंचाई। विंग कमांडर तलवाड़ ने छम्ब क्षेत्र में थल सेना की सहायता के लिये दिन के समय एक उड़ान भरी और मनव्बर तवी नदी के पास शत्रु के चार तोप-मोर्चों पर आक्रमण करके तीन को ठंडा कर दिया जिससे उस दुर्गम प्रदेश में हमारी सेना को आगे बढ़ने में आसानी हुई। इन दोनों ठिकानों पर सुरक्षा का भारी प्रबन्ध था, दूसरा ठिकाना तो शत्रु के एक लड़ाकू विमानों के अड्डे के पास था जहां से उड़कर वे हमारे विमान घेर सकते थे। इसके बावजूद, विंग कमांडर तलवाड़ ने, बड़ी दृढ़ता और सफलता से, शत्रु पर आक्रमण किये। उनके आचरण से, उनके नेतृत्व में चलने वाले दूसरे वायुयानों के कार्मिकों को प्रेरणा मिलती थी। विंग कमांडर मन मोहन वीर सिंह तलवाड़ ने जिस साहसिक नेतृत्व, संकल्प दृढ़ उड़ान दक्षता तथा उत्कृष्ट वीरता का परिचय दिया वे सब उनके स्क्वाड्रन की अनेक सफलताओं के मुख्य कारण हैं।

6. विंग कमांडर रमेश सखराम बनेगल, ए वी एस एम,
(4220), फ्लाईंग ब्रांच (पाइलट)

संक्रियात्मक टोह स्क्वाड्रन के कमान अधिकारी के रूप में, विंग कमाण्डर रमेश सखराम बेनेगल ने शत्रु की सीमा के ऊपर बहुत बड़ी संख्या में उड़ाने भरी और शत्रु की वायुसेना तथा अन्य संस्थानों के सम्बन्ध में अत्यन्त महत्वपूर्ण जानकारी प्राप्त की। इस के लिए, उन्हें शत्रु की सीमा के बहुत अन्दर तक और शत्रु के अत्यन्त सुरक्षित ठिकानों तक उड़ाने भरनी पड़ी। इन उड़ानों के फलस्वरूप प्राप्त सूचना के कारण न केवल थलसेना, वायु सेना और नौसेना की कार्यवाहियों की योजना बनाने में आसानी हुई बल्कि इस तरह पाकिस्तानी युद्ध-तंत्र को नष्ट करने में प्रत्यक्ष रूप से सहायता भी मिली। इसके अतिरिक्त विंग कमाण्डर बेनेगल को इस बात का भी श्रय मिला है कि वे इन असंख्य उड़ानों के दौरान कभी भी अपना काम पूरा किए बिना नहीं लौटे।

विंग कमाण्डर रमेश सखराम बेनेगल ने शत्रु की सीमा में बहुत अन्दर तक बार-बार उड़ान भर कर उत्कृष्ट कर्तव्यपरायणता, कर्तव्य निष्ठा और व्यावसायिक दक्षता का परिचय दिया।

7. विंग कमाण्डर स्वरूप कृष्ण कौल
(4721), फ्लाईंग ब्रांच (पाइलट)

(पुरस्कार की प्रभावी तिथि—4 दिसम्बर, 1971)

युद्ध आरम्भ होने पर लड़ाकू बमवार स्क्वाड्रन के कमांडिंग अफसर विंग कमाण्डर स्वरूप कृष्ण कौल ने फोटो लेने के महत्वपूर्ण कार्य के लिये अपनी सेवायें अर्पित कीं। हमारी सेना की प्रहार योजनाओं को अन्तिम रूप देने के लिये इसकी अत्यन्त आवश्यकता थी। कोमिल्ला, सिलहट और सैदपुर के भारी रक्षित खण्डों तक अफसर ने शत्रु के क्षेत्रों में दूर तक चार मिशन पूर्ण किए। कभी-कभी

विंग कमाण्डर कौल को अत्यन्त मजबूती से रक्षित शत्रु के इलाकों के ऊपर 200 फुट के नीचे पर भी उड़ानें करनी पड़ीं। उन्होंने इन बौछारों में निर्भयता के साथ हर मिशन में बार-बार उड़ाने की और सफलता के साथ कार्य पूर्ण किया। 4 दिसम्बर 1971 को विंग कमांण्डर कौल ने पुनः एक अन्य कार्य के लिए अपनी सवाएँ अर्पित कीं। वह था तेजगांव और कुरसी तोला हवाई अड्डों के फोटो लेना। शत्रु की लगातार और तीखी स्थल गोलाबारी के मुकाबले में इन दो हवाई अड्डो के ऊपर उनकी टोह उड़ानें उनकी उत्कृष्ट शूर वीरता, और कर्तव्यपरायणता के कारनामें हैं। उनके टोह उपलब्धियों के अतिरिक्त विंग कमाण्डर कौल ने ढाका के ऊपर सबसे पहले आठ वायुयानों वाले आक्रमण का नेतृत्व किया? इस आक्रमण में लक्ष्य क्षेत्र के समीप चार शत्रु वायुयानों ने उनकी फार्मेशन पर आक्रमण किया। विंग कमाण्डर कौल ने असाधारण नेतृत्व का परिचय देते हुए, अपने बल का इस ढंग से संचालन किया कि शत्रु के दो वायुयान मार गिराए और अन्य दो भाग खड़े हुए। इस प्रकार लक्ष्य योग आक्रमण के लिए साफ हो गया।

इस पूरी कार्यवाही में विंग कमाण्डर स्वरूप कृष्ण कौल ने उत्कृष्ट वीरता, दृढ़ संकल्प और व्यावसायिक दक्षता का परिचय दिया।

8. विंग कमाण्डर विद्या भूषण वसिष्ट,

(4584), फ्लाइंग ब्रांच (पाइलट),

(पुरस्कार की प्रभावी तिथि—3 दिसम्बर, 1971)।

संक्रियात्मक स्क्वाड्रन के कमांडिंग अफसर विंग कमांडिर विद्या भूषण वसिष्ट ने 3 दिसम्बर 1971 की रात को छांगा पांगा में शत्रु के महत्वपूर्ण ईंधन और गोला-बारूद ढेर पर आक्रमण करने के लिये अपने स्क्वाड्रन के भारी बममारों के ग्रुप का नेतृत्व किया। शत्रु की भारी स्थल गोला-बारी के बावजूद विंग कमाण्डर वसिष्ट ने जोर का आक्रमण किया और लक्ष्य को भारी क्षति पहुंचाई। पुनः अगली रात्रि, विंग कमाण्डर वसिष्ट ने उसी लक्ष्य पर एक अन्य आक्रमण किया और शत्रु की भारी स्थल-गोलाबारी के बावजूद उसे और भी भारी क्षति पहुंचाई। 5 दिसम्बर, 1971 की रात को पाकिस्तान अधिकृत कश्मीर के हाजीपीर दर्रे में शत्रु की स्थितियों पर आक्रमण करने के लिए विंग कमाण्डर वसिष्ट ने अपनी बममार फार्मेशन का नेतृत्व किया। इस संक्रिया की कठिनाइयों और संकट की वजह लक्ष्य-क्षेत्र की स्थल गोला-बारी के साथ साथ पर्वतीय भूखण्डों के भीतर नीचों उड़ानों की जोखिम भी थी। इन सब संकटों के बावजूद, विंग कमाण्डर वसिष्ट ने आक्रमण किया और शत्रु की स्थितियों पर प्रहार करने में उल्लेखनीय सफलता प्राप्त की। इनके अतिरिक्त विंग कमाण्डर वसिष्ट ने शत्रु के प्रदेश के भीतर तक अनेक मिशनों का नेतृत्व किया जहां लडाकू वायुयानों के मुकाबले की और विमान भेदी गोलाबारी की आशंका थी। इन सभी आक्रमणों में विंग कमाण्डर वसिष्ट ने अपने वायुयानों की किसी प्रकार की क्षति के बिना सौंप गये कार्य को पूरा किया।

विंग कमाण्डर विद्या भूषण वसिष्ट ने रात्रि-प्रति-रात्रि शत्रु के भारी रक्षित लक्ष्यों पर बार-बार आक्रमण का नेतृत्व करके उत्कृष्ट वीरता, असाधारण कर्तव्यपरायणता और नेतृत्व का परिचय दिया।

9. स्क्वाड्रन लीडर माधवेन्द्र बैनर्जी, वी० एम०,

(4898), फ्लाइंग ब्रांच (पाइलट)।

पाकिस्तान के साथ हाल के युद्ध के प्रथम सप्ताह के दौरान, लड़ाकू बमवार स्क्वाड्रन के वरिष्ठ पाइलट, स्क्वाड्रन लीडर माधवेन्द्र बैनर्जी ने शत्रु के ठिकानों पर पूरे 14 बार उड़ाने भरी। इनमें अधिकतर उड़ाने छम्ब की लड़ाइयों में अपनी थलसेना को सहायता देने के लिए थीं। इन उड़ानों के दौरान स्क्वाड्रन लीडर बैनर्जी के शत्रु के दो टैंकों और दो तोपों को नष्ट किया। तीन अवसरों पर स्क्वाड्रन लीडर बैनर्जी ने पहल करके शत्रु पर आक्रमण किया हालांकि शत्रु नीचे से ज़बर्दस्त गोलाबारी कर रहा था। इससे हमारी सेना पर शत्रु का दबाव कम हो गया।

स्क्वाड्रन लीडर बैनर्जी ने शत्रु द्वारा थल से अत्यन्त भारी गोलाबारी करने के बावजूद, शत्रु की सेनाओं पर बार-बार आक्रमण करके उत्कृष्ट वीरता और दक्षता का परिचय दिया।

10. स्क्वाड्रन लीडर रविन्दर नाथ भारद्वाज,

(5001), फ्लाइंग ब्रांच (पाइलट),

(पुरस्कार की प्रभावी तिथि—5 दिसम्बर, 1971)

स्क्वाड्रन लीडर रविन्द्र नाथ भारद्वाज ने, जो कि एक लड़ाकू बमवार स्क्वाड्रन में एक वरिष्ठ पाइलट हैं, शत्रु के विविध ठिकानों पर कई संक्रियात्मक उड़ानों का नेतृत्व किया है। 5 दिसम्बर, 1971 को उन्होंने शत्रु के एक हवाई अड्डे पर आक्रमण करने का नेतृत्व किया। यद्यपि वह हवाई अड्डों विमान भेदी तोपों और गोला बरसाने वाले छोटे अस्त्रों से मजबूती से सुरक्षित था, फिर भी उन्होंने आक्रमण को जारी रखा। अपने एक आक्रमण में उन्होंने स्वयं शत्रु के एक भारी परिवहन विमान को आग लगाई, और अन्त में अपनी टोली को सुरक्षित आपने अडे पर ले आये। 7 दिसम्बर, 1971 को उन्होंने एक और टोली का नेतृत्व किया। इस बार उन्हें एसे बिजली घर पर आक्रमण करना था जिसकी सुरक्षा का भारी प्रबन्ध किया गया था। यहां भी, उनकी टोली ने शत्रु को सफलतापूर्वक भारी क्षति पहुंचाई, परन्तु अपने किसी भी विमान की कुछ भी क्षति नहीं हुई। 10 दिसम्बर, 1971 को उन्होंने छम्ब क्षेत्र में स्थल सेना को सहायता प्रदान करने वाली टोली का नेतृत्व किया। पहले आक्रमण के दौरान उनके और उनके नम्बर दो के विमान को भूमि से गोले लगे और जैसे ही वे आक्रमण से अलग हटे शत्रु के सैबर विमान उनसे आ भिड़े। स्क्वाड्रन लीडर भारद्वाज ने अपने नम्बर दो को संकट से बाहर निकाला और फिर पलट कर आक्रमण किया और एक सैबर को निशाना बनाया जो ध्वस्त होकर छम्ब के पुल के पास हमारे क्षेत्र में आ गिरा। इस समय वे अकेले रह गये थे परन्तु फिर भी उन्होंने पाकिस्तानी टैंकों और सैनिकों की ओर अपना विमान मोड़ा और उन्हें व्यापक क्षति पहुंचाने के बाद, वे क्षतिग्रस्त विमान के साथ अपने अड्डे को लौट आये।

स्क्वाड्रन लीडर रविन्द्र नाथ भारद्वाज ने, भारी शत्रु स्थिति के मुकाबले में उत्कृष्ट वीरता और असाधारण नेतृत्व का परिचय किया जो वायुसेना की उच्चतम परम्पराओं के अनुरूप है।

सं० 21-प्रेज/72:—राष्ट्रपति निम्नांकित व्यक्ति को पाकिस्तान के विरुद्ध हाल की संक्रियाओं में उत्कृष्ट वीरता के लिये "महावीर चक्र" प्रदान करने का सहर्ष अनुमोदन करते हैं :—

1. सहायक कमांडन्ड राम कृष्ण वधवा ,
31वीं बटालियन,
सीमा सुरक्षा दल । (मरणोपरान्त)
(पुरस्कार की प्रभावी तिथि —10 दिसम्बर 1971) ।

5 दिसम्बर, 1971 को शत्रु ने राजा महोतम की सीमा सुरक्षा दल के पिकेट पर कब्जा कर लिया था । सहायक कमांडेन्ट श्री राम कृष्ण वधवा को इस पिकेट को अपने कब्जे में लेने का कार्य सौपा गया । उनके पास केवल दो प्लाटूनें थीं । शत्रु की भारी गोलाबारी और मशीनगन फायर के बावजूद वह अपनी प्लाटूनों को विरचना स्थान तक ले गए और उन्होने शत्रु की अछी तरह से मोर्चाबन्दी किए हुए तथा तादाद में कहीं ज्यादा सेना पर हमला कर दिया । हमले के दौरान उनके सैनिकों पर सब तरफ से गोलाबारी हो रही थी और हमला विफल होता दिखाई दे रहा था । अपनी जान की तनिक भी परवाह न करते हुए, श्री राम कृष्ण वधवा ने बहुत ज्यादा सुरंगों वाले क्षेत्र में शत्रु की भारी और सही गोलाबारी के बावजूद अपने सैन्यदलों का साहसपूर्ण नेतृत्व किया उनकी निजी मिसाल ने जवानों में जोश पैदा हुआ और उन्हें वीरता से लड़ने, शत्रु को भारी क्षति पहुंचाते हुए लक्ष्य को पुनः कब्जा करने की प्रेरणा मिली । 10 दिसम्बर, 1971 को भारी संख्या में शत्रु ने जोरदार आर्टिलरी और मोर्टार गोलाबारी की वजह आड़ में एक जवाबी हमला बोल दिया । श्री रामकृष्ण वधवा ने अपनी जान की तनिक भी परवाह न करते हुए एक बंकर से दूसरे बंकर में जाकर अपने जवानों को भारी क्षति के बावजूद शत्रु का सामना करने के लिए, अनुकरणीय साहस से, प्रोत्साहित और प्रेरित किया अन्ततः एक बंकर से दूसरे बंकर में जाते समय शत्रु की गोलाबारी से वे बुरी तरह घायल हुए और उनकी मृत्यु हो गई ।

इस कार्यवाही में सहायक कमांडेन्ट राम कृष्ण वधवा ने उत्कृष्ट वीरता अदम्य साहस और नेतृत्व का परिचय दिया ।

सं० 22-प्रेज०/72—राष्ट्रपति निम्नांकित व्यक्तियों को पाकिस्तान के विरुद्ध हाल की संक्रियाओं में उत्कृष्ट वीरता के लिए "महावीर चक्र का बार" प्रदान करने का सहर्ष अनुमोदन करते हैं :—

1. ब्रिगेडियर अरुण श्रीधर वैद्य, एम० वी० सी०, ए० वी० एम० एम०,
(आई० सी०—1701)

ब्रिगेडियर अरुण श्रीधर वैद्य पाकिस्तान के विरुद्ध संक्रियाओं के दौरान पश्चिमी मोर्चे पर "जफरवाल" सैक्टर में आर्मड ब्रिगेड के कमांडर थे । शत्रु के साथ मुठभेड़ के लिए उन्होंने अपनी ब्रिगेड को तेजी से आगे बढ़ाया, और शत्रु पर अचानक हमला कर दिया । उन्होंने पअपने टैंकों का लगातार और आक्रामक ढंग से प्रयोग किया और शत्रु के विरुद्ध निरन्तर दबाव डालने और आगे बढ़ने की गति बनाए रखने के लिए डिवीजन की सहायता की । "चक्रा" और "देहिरा" की लड़ाई में सुरंगें बिछे हुए और दुर्गम क्षेत्र के कारण कठिनाई पेश आई। धैर्य और विश्वास के साथ ब्रिगेडियर वैद्य ने सुरंग-क्षेत्र को पार करने का कार्य संभाला । निजी सुरक्षा की परवाह न करते हुए वे आगे बढ़े । उनके प्रेरणा भरे नेतृत्व से पूरा स्क्वाड्रन एक तंग रास्ते से होकर आगे बढ़ा और शत्रु के जवाबी हमलों के मुकाबले के लिए तेजी से अपनी कार्य-वाही आरम्भ कर दी । उनकी बुद्धिमता और बख्तर बन्द गाड़ियों के आक्रामक प्रयोग के बिना इतने थोड़े समय में, डिवीजन के लिए शत्रु के प्रदेश में लगभग 20 किलोमीटर आगे बढ़ना कठिन था । फिर उन्होने "बसन्तर" की लड़ाई में सैनिक कुशलता और शानदार नेतृत्व प्रदर्शित किया । वे अपने टैंकों को गहरे सुरंग-क्षेत्रों में से एक क्षेत्र के अन्दर ले गए, पुल पदाधार को चौड़ा किया और शत्रु के भारी जवाबी हमले को पीछे धकेल दिया । इस युद्ध में शत्रु के 62 टैंक नष्ट क हुए और बाकी गिरते-पड़ते पीछे हट गए ।

इस पूरे समय में ब्रिगेडियर अरुण श्रीधर वैद्य ने शत्रु के विरुद्ध लड़ते हुए भारतीय सेना की सर्वोत्तम परम्पराओं के अनुकूल उत्कृष्ट साहस, महान सैनिक कुशलता, अदम्य संकल्प, दूर-दर्शिता और कल्पनाशक्ति का परिचय दिया ।

2. ब्रिगेडियर सन्त सिंह, एम वी सी,
(आई सी—5479),

ब्रिगेडियर सन्त सिंह ने पूर्वी मोर्चे के एक सेक्टर की कमान करते समय महान सफलता प्राप्त की । कार्यवाही के दौरान उनके पास मिली-जुली सेना थी जिसमें केवल एक ही नियमित बटालियन थी । आठ दिन में मेमनसिंह और माधोपुर पर कब्जा करने के लिए वे 38 मील लगभग पैदल ही आगे बढ़ते रहे । आगे बढ़ते समय यद्यपि उन्हें शत्रु के प्रबल विरोध का सामना करना पड़ा फिर भी उन्होंने कई जगह शत्रु की सुरक्षित जगह खाली करवा ली । इस पूरी कार्यवाही के दौरान ब्रिगेडियर सन्त सिंह ने शत्रु के मीडियम मशीनगन की गोलाबारी की परवाह न करते हुये अपने जवानों का नेतृत्व और निर्देशन स्वयं किया । उनकी वीरता, नेतृत्व, कम साधनों से कुशलतापूर्वक काम लेने, दिलेरी, इलाके के साधनों से काम चलाऊ और ज्यादा से ज्यादा काम लेने की योग्यता के कारण ही उनकी सेना शत्रु के अच्छी तरह तैयार सुरक्षित मोर्चों में ज्यादा तादाद में तैनात सैनिकों से टक्कर लेकर सफलतापूर्वक और तेजी से आगे बढ़ सकी ।

पूरे समय में ब्रिगेडियर सन्त सिंह ने भारतीय सेना की उच्चतम परम्पराओं के अनुकूल उत्कृष्ट वीरता और प्रेरणादाय क नेतृत्व परिचय दिया ।

3. विंग कमाण्डर पद्मनाभ गौतम, एम वी सी, वी एम,
(4482), फ्लाईंग ब्रांच (पाइलट)
(पुरस्कार की प्रभावी तिथि—5 दिसम्बर, 1971)

विंग कमाण्डर पद्मनाभ गौतम ने , जो एक बमबार स्क्वाड्रन की कमान में थे, शत्रु के इलाके में खूब अंदर तक कई उड़ानें का नेतृत्व किया । इनमें 5 और 7 दिसम्बर, 1971 की रात को किए गए दो हमले उल्लेखनीय हैं । जब विंग कमांडर गौतम ने मियां-वाली हवाई अड्डे पर किए गए हमलों का नेतृत्व किया ।
इन दोनों ही मौकों पर उन पर और उनकी फार्मेशन पर शत्रु ने दनादन विमानभेदी गोले बरसाए । इसके बावजूद नीची उड़ान करते हुये शत्रु के ठिकानों पर ठीक निशाने के हमले किए गए और उसे भारी क्षति पहुंचाई, अन्य उड़ानों के दौरान विंग कमांडर

गौतम ने मिंटगुमरी-रायविड क्षेत्र के रेलवे मार्शलिंग यार्डों पर राकेटों और तोपों से उल्लेखनीय सफलता के साथ चतुमुखी आक्रमण किया।

सारी लड़ाई के दौरान, विंग कमांडर पउनाभ गौतम ने, वायुसेना की उच्चत्तम परम्पराओं के अनुरूप उत्कृष्ट वीरता अनुकरणीय उड़ान कौशल और नेतृत्व का परिचय दिया।

4. मेजर चेवंग रिनचैन, एम वी सी,

(आई सी–16224), लद्दाख स्काउट्स

(पुरस्कार की प्रभावी तिथि–8 दिसम्बर, 1971)

लद्दाख स्काउट्स के मेजर चेवंग रिनचैन उस सैन्य टुकड़ी के कमान्डर थे जिसे प्रतापपुर सेक्टर में चालुन्का के रक्षित शत्रु के इलाके पर कब्जा करने का काम सौपा गया था। शत्रु के 9 मजबूत मोर्चों में प्रत्येक पर 1 से 2 तक प्लाटूनें थी और सुरंगें और तार की रुकावटों द्वारा इन मोर्चों को सुरक्षित किया था। इस कार्यवाही की योजना फौजी कुशलता और उत्साह से बनाई गई थी और उसे पूरा किया गया था। खराब मौसम होने के बावजूद मेजर रिनचैन ने सैनिकों का नेतृत्व साहस और आक्रामक जोश के साथ किया। वे एक बंकर से दूसरे बंकर पर लड़ते रहे और अपने सैनिकों को शत्रु को नष्ट करने के लिए प्रोत्साहित करते रहे। इस तरह यह कार्यवाही पूरी तरह सफल हुई।

इस कार्यवाही में मेजर चेवंग रिनचैन ने भारतीय सेना की उच्चतम परम्पराओं के अनुकूल प्रेरणादायक नेतृत्व, अदम्य, साहस, पहल और कर्त्तव्य के प्रति असाधारण निष्ठा का परिचय दिया।

नई दिल्ली, दिनांक 4 फरवरी, 1972

सं० 33–ज/72:—राष्ट्रपति प्रादेशिक सेना के निम्नांकित आयुक्त अधिकारियों को सराहनीय सेवाओं के लिये "प्रादेशिक सेना अलंकृत" प्रदान करते है :—

मेजर एम० राममोहन राव (ज० टी०–40177', आर्टिलरी,
मेजर के नरसिंह विट्ठल (टी ए०–40499) आर्टिलियरी
कप्टान हरीभगवान तिवारी (टी० ए०–40592) आर्टिलरी
मेजर रायमन्ड रूबीन (टी० ए०–40006), इन्फैन्ट्री
मेजर रामपालसिंह मान (टी० ए०–40254, इन्फैन्ट्री
मेजर हरी मोहन चटर्जी (टी० ए० 40534), इन्फैन्ट्री
मेजर जगत सिह भल्ला (टी० ए०–(एम०)–1006, ए० एम० सी०।

सं० 24–प्रेज/72:–राष्ट्रपति सीम सुरक्षा दल के निम्नांकित अधिकारी को उसकी वीरता के लिए पुलिस पदक प्रदान करते हैं :–

अधिकारी के नाम तथा पद।

श्री प्रताप सिंह मेहत
सहायक कमांडेट,
19वीं बटालियन,
सीमा सुरक्षा दल।

2. यह पदक पुलिस पदक नियमावली के नियम 4 (1) के अन्तर्गत वीरता के लिए दिया जा रहा है।

सं० 25/प्रेज/82:—राष्ट्रपति सीमा सुरक्षा दल के निम्नांकित अधिकारी को उसकी वीरता के लिए पुलिस पदक प्रदान करते हैं :–

अधिकारी का नाम तथा पद
श्री राम महर सिंह,
हैड कांस्टेबल,
14 वीं बटालियन,

2. यह पदक पुलिस पदक नियमावली के नियम 4 (1) के अन्तर्गत वीरता के लिए दिया जा रहा है तथा फलस्वरूप नियम 5 के अन्तर्गत विशेष स्वीकृत भत्ता भी दिनाक 24 अप्रैल, 1971 से दिया जाये iii।

सं० 26/प्रेज/72:—राष्पट्रति आन्ध्र प्रदेश पुलिस के निम्नांकित अधिकारी को उसकी वीरता के लिए पुलिस पदक प्रदान करते हैं :–
अधिकारी का नाम तथा पद।

श्री दोडला नागभूषण राव,
पुलिस निरीक्षक ,
जिला गुन्टूर ,
आन्ध्र प्रदेश । (स्थानापन्न) ।

सेवाओं का विवरण जिनके लिये पदक प्रदान किया गया

1967 में उग्रवादियों ने गुन्टूर जिला को अपनी गतिविधियों का केन्द्र बना लिया था। अप्रैल,1970 में तलरलापल्ली गांव में उग्रवादियों ने एक सनसनीखेजडाका डाला जिसमें उन्होंने एक मालदार जमींदारको भालों से मार दिया और उसकी सम्पति लूट ली। श्रीदोडला नागभूषण राव को मामले की जांच करने तथा अधियुक्त को पकड़ने का आदेश दिया गया।

9 सितम्बर, 1970 की रात्रि को पुलिस को सूचना मिली कि उग्रवादियों का एक छोटा गिरोह नल्लामलाई वन में बम लिए हुए घूम रहा है। कुछ कांस्टेबलों को साथ ले श्री राव तुरन्त वन की ओर चल दिये। लगभग दो मील चलने के पचात् पुलिस दल ने अपने आपको दो टुकड़ियों में बांट लिया। श्री राव ने दक्षिण दिशा में भेजी गई पुलिस टुकड़ी का नेतृत्व संभाला। श्री राव के नेतृत्व वाली टुकड़ी जब एक नाले के समीप पहुंची तो उन्होंने कुछ लोगों को पगडंडी पर चलते देखा। श्री राव ने उन्हें ठहरने को कहा किन्तु उस गिरोह के सदस्यों ने पुलिस पर बम फेंके। श्री राव ने तुरन्त झाड़ियों के पीछे मोर्चा संभाला और उग्रवादयों को आत्मसमर्पण करने को कहा। परन्तु आत्मसर्म्पण के बजाये उग्रवादियों ने पुलिस पर और बम फेंके। श्री राव ने अपने रिवाल्वर से तीन बार गोलियां चलाई और तीन उग्रवादियों को मार दिया। घटनास्थल से पुलिस ने हथियार व गोला बारूद बरामद किया।

इस मुठभेड़ में श्री दोडला नागपण राव ने उदाहरणीय साहस, दृढ़संकल्प और उच्च कोटि के नेतृत्व का परिचय दिया।

2. यह पदक पुलिस नियमावलके नियम 4 (1) के अन्तर्गत वीरता के लिए दिया जा रहा है तथा फलस्वरूप नियम 4 के अन्तर्गत विशेषे स्वीकृत भत्ता भी दिनांक सितम्बर, 1970 से दिया जाएगा।

पे० ना० कृष्णमणि,
राष्ट्रपति के संयुक्त सचिव।

विधी और न्याय मंत्रालय

विधायी विभाग

नई दिल्ली, दिनांक 19 जनवरी 1972

संकल्प

सं० फा० 4(1)/70—रा० भा० विधि और न्याय मंत्रालय के लिए हिन्दी के बारे में सलाहकार समिति का पुनर्गठन करने वाले संकल्प संख्या फा० 4(1)/70-रा० भा०, दिनांक 10 जनवरी, 1972 के आंशिक उपान्तरण में, भारत सरकार ने विनिश्चय किया है कि श्री देवेन्द्र सत्यर्थी, संसद सदस्य (लोक सभा) भी, उन सदस्यों के अतिरिक्त जिनके नाम पहले ही अधिसूचित कर दिए गए हैं, उक्त समिति के सदस्य होंगे।

आदेश

आदेश दिया जाता है कि इस संकल्प की एक-एक प्रति सभी राज्यों सरकारों और संघ क्षेत्र प्रशासनों, प्रधान मंत्री सचिवालय, मंत्रिमंडल सचिवालय, संसदीय कार्य विभाग, लोक सभा सचिवालय, राज्य सभा सचिवालय, योजना आयोग, राष्ट्रपति सचिवालय, नियंत्रक महालेखा परीक्षक और महालेखापाल, केन्द्रीय राजस्व और भारत सरकार के सभी मंत्रालय और विभागों को भेज दी जाए।

यह भी आदेश दिया जाता है कि यह संकल्प सामान्य जानकारी के लिए भारत के राजपत्र में प्रकाशित कर दिया जाए।

ई० वैंकटेश्वरन, उप सचिव

वित्त मंत्रालय

आर्थिक कार्य विभाग

नई दिल्ली, दिनांक 18 जनवरी 1972

सं० फा० 2(19)एन०एस०/71—राष्ट्रपति, डाकघर बचत बैंक (संचयी सावधि निक्षेप) नियम, 1959 में और संशोधन करने के लिए एतद्द्वारा निम्नलिखित नियम बनाते हैं, अर्थात्:—

1. (1) इन नियमों का नाम डाकघर बचत बैंक (संचयी सावधि निक्षेप) संशोधन नियम, 1972 होगा।

(2) ये राजपत्र में प्रकाशन की तारीख को प्रवृत्त होंगे।

2. डाकघर बचत बैंक (संचयी सावधि निक्षेप) नियम, 1959 (जिसे इस में इस के पश्चात् उक्त नियमों कहा गया है) में, नियम 4 के उपनियम (2) में, खण्ड (ख) के पश्चात् निम्नलिखित खण्ड अन्त: स्थापित किया जाएगा, अर्थात्:—

'(ग) किसी 15 वर्षीय लेखा की दशा में, 10 वर्षीय लेखा में संपरिवर्तित किया जाएगा।"

3. उक्त नियम के नियम II के उपनियम (2) में, "लेखा में किए गए निक्षेपों" शब्दों के स्थान पर, "आवेदन की तारीख को अतिशेष" शब्द प्रतिस्थापित किए जायेंगे।

ए० वी० श्रीनिवासन, अवर सचिव

कृषि मन्त्रालय

(कृषि विभाग)

नई दिल्ली, दिनांक 24 जनवरी 1972

संकल्प

सं० 8-18/71-वन विकास—भारतीय वन उपज में चीड़ के बनों से प्राप्त 'रेजिनगम' एक महत्वपूर्ण लघु वन उत्पाद है, जोकि औद्योगिक क्षमता का एक असाधारण उदाहरण है तथा जिस पर कई रासायनिक उत्पाद आधारित हैं। यह व्यापारिक मदों जैसे बिरोजा, तारपीन, रेजिन तथा चीड़ से उत्पन्न वस्तुओं का परिक्षेत्र प्रदान करता है। बिरोजा तथा तारपीन की परिवर्तन क्षमता, विविध औद्योगिक उपयोग (जैसे कागज, रोगन, साबुन, शृंगार सामग्री, मुद्रण स्याही, आसंजक, तेल इत्यादि) के लिए विस्तृत क्षेत्र तथा नई बीथियों के लिये विविधता प्रस्तुत करती है। अत: दोनों क्षेत्रों अर्थात् उत्पादन और उपयोगिता के समूचे विकास के लिये, गहन अनुसंधान द्वारा समर्थित समन्वयक तथा एकीकृत नीति होना आवश्यक समझा गया है। इस प्रश्न के सभी पहुलुओं पर "सिमपाइन" सम्मेलन में विचार किया गया था, जिसका कि अप्रैल, 1971 को नई दिल्ली में कृषि मंत्री ने उद्घाटन किया था।

2. भारत सरकार ने अब इस विषय पर सम्मेलन की विभिन्न सिफारिशों के बारे में आवश्यक निर्देश देने के लिए एक समिति स्थापित करने का निर्णय किया है जिसको "बिरोजा और तारपीन उद्योग के लिये केन्द्रीय समन्वय समिति" कहा जायेगा।

केन्द्रीय समन्वय समिति का गठन

केन्द्रीय समन्वय समिति का गठन, जिसे अब समन्वय समिति कहा जायेगा, गठन निम्न प्रकार होगा:—

1. वन महानिरीक्षक	—	अध्यक्ष
2. अध्यक्ष, वन अनुसंधान संस्थान एवं महाविद्यालय, देहरादून।	—	उपाअध्यक्ष
3. कागज, रोगन, साबुन, शृंगार सामग्री, मुद्रण, स्याही, आसंजक, वाष्पी तेल तथा विनिर्माण एककों की संस्थायें।	—	प्रत्येक सस्था या विनिर्माण एकक से एक-एक प्रतिनिधि
4. रेजिन उत्पादक राज्यों के वन विभाग	—	जम्मू तथा काश्मीर, हिमाचल प्रदेश तथा उत्तर प्रदेश के महावनपाल

5. बिरोज़ा तैयार करने वाले एककों के महाप्रबन्धक	---	1. महाप्रबंधक, राजकीय बिरोजा फैक्टरी, नहान (हि० प्र०) 2. महाप्रबंधक, राजकीय बिरोजा, फैक्टरी, बिलासपुर, (ह० प्र०) 3. महाप्रबंधक, भारतीय तारपीन तथा बिरोजा कम्पनी, लिमिटेड कारखाना, कल्यूहरबकजंग, बरेली (उ० प्र०)
6. तारपीन रासायनिक उत्पादक एककों के प्रतिनिधिगण	---	एक प्रतिनिधि-अर्थात्-सर्वश्री कम्फर एण्ड एलाइड प्रोडक्टस
7. तकनीकी विकास के महानिदेशालय	---	एक प्रतिनिधि
8. सहायक वन महानिरीक्षक (वन उद्योग)	---	सचिव

समिति के कार्य

समिति के कार्य निम्नलिखित होंगे:—

(क) "सिमपाइन' सम्मेलन की विभिन्न सिफारिशों को कार्यान्वित करना;

(ख) देश के समग्र काम के लिए बिरोजा और तारपीन उद्योग की भली प्रकार उन्नति के लिए हुई प्रगति की आवधिक समीक्षा करना और समय समय पर आगामी कार्यवाही का निदेश करना।

(ग) अन्य सम्बन्धित विषय

प्रारम्भ में यह समिति, दिसम्बर, 1975 के अंत तक कार्य करेगी तथा उसकी बैठक छः महीने में एक बार होगी।

आदेश दिया जाता है कि समस्त सम्बन्धित व्यक्तियों को संकल्प की प्रति प्रेषित कर दी जाये : यह भी आदेश दिया जाता है कि संकल्प को भारत के राजपत्र में प्रकाशित कर दिया जाये।

रणजीत सिंह, उप सचिव

शिक्षा और समाज कल्याण मन्त्रालय

नई दिल्ली, दिनांक 24 जनवरी 1972

संकल्प

सं० एफ० 21-10/71 आई० एन० सी०—यूनेस्कों के महा-सम्मेलन ने अक्तूबर-नवम्बर, 1970 में, पेरिस में हुए अपने 16वें अधिवेशन में वर्ष 1972 को अन्तर्राष्ट्रीय पुस्तक वर्ष" के रूप में घोषणा की है।

मानव सभ्यता की प्रगति हेतु साहित्य के महत्व पर विचार करना।

इस बात पर भी विचार करना कि विचारों की अभिव्यक्ति अन्य सामग्री सहित पुस्तकें तथा पत्रिकाएं, भी सामाजिक जीवन तथा उसके विकास में आवश्यक भूमिका निभाती है।

यह विचार करते हुए कि वे युनेस्कों के उद्देश्यों अर्थात् शान्ति, विकास मानव अधिकारों को उन्नयन, और जातीयता तथा उपनिवेशवाद के विरुद्ध अभियान की प्राप्ति में मूल कार्य निष्पादित करते हैं।

यह नोट करते हुए कि युनेस्कों की इस क्षेत्र में मूल भूमिका पुस्तकों को लिखने निर्माण तथा संकीतरण, विशेषकर संयुक्त राष्ट्र संघ को प्रोत्साहन देना है, के चार्टर तथा यूनेस्कों के संविधान की भावना को प्रोत्साहन देना है।

यह नोट करते हुए कि समाज में पुस्तकों की भूमिका पर जनता का ध्यान केन्द्रित करने के लिए अन्तर्राष्ट्रीय गैर सरकारी सगठनों के लेखकों, प्रकाशकों, पुस्तकाध्यक्षों, पुस्तकाविक्रेता तथा अन्य व्यावसायिक निकायों ने एक अन्तर्राष्ट्रीय पुस्तक वर्ष में अपनी अभिरुचि वयक्त की है।

2. महा सम्मेलन ने सक्षम और रुचि रखने वाले अन्तरराष्ट्रीय गैर सरकारी संगठनों सहित पुस्तकों के लेखन, निर्माण परिचालन और सवितरण को प्रोत्साहन देने के लिए क्रिया कलापों के कार्यक्रमों को प्रारम्भ करने तथा कार्यान्वित करने के लिए और अन्तर्राष्ट्रीय पुस्तक वर्ष को राष्ट्रीय पढ़न वर्ष बनाने, राष्ट्रीय आधार पर अन्तर्राष्ट्रीय पुस्तक वर्ष को तैयार करने और संचालित करने के लिये राष्ट्रीय आयोगों के सहयोग से सीमतियां स्थापित करने यूनेस्कों के लक्ष्यों को और ज्ञान के प्रसार तथा विचारों के उद्दीपन के लिये साहित्य की विशिष्ट भूमिका को ध्यान में रखते हुए पुस्तक नीतियों के सिद्धान्तों को बनाने के लिये, और विशेष तौर पर युवकों में दर्शन शास्त्र तथा साहित्य की पुस्तकों को समान्तया सस्ते दामों पर उपलब्ध करने के उत्तम विचारों को प्रात्साहन करने के लिए सदस्य राज्यों को निमन्त्रित किया है।

3. भारत में पुस्तकों की प्रगति को विकास के महत्व को ध्यान में रखते हुए भारत सरकार ने अन्तर्राष्ट्रीय पुस्तक वर्ष के लिये एक सघन सक्रिय कार्यक्रम अपने हाथ में लेने का निर्णय किया है। गैर सरकारी संगठनों के सहयोग की सूची तैयार करने और भारत की प्रकाशन तथा मुद्रण उद्योगों तथा राज्य सरकारों की, और अन्तर्राष्ट्रीय पुस्तक वर्ष के समारोह के लिये क्रियाकलापों को समन्वय करने का ध्यान में रखते हुए युनेस्कों द्वारा सुझाये जाने पर भारत सरकार ने अन्तर्राष्ट्रीय पुस्तक वर्ष के लिये एक राष्ट्रीय समिति को गठन करने का निर्णय किया है।

4. समिति में निम्नलिखित व्यक्ति शामिल होंगे:—

1. **अध्यक्ष**

   शिक्षा तथा समाज कल्याण मंत्री, नई दिल्ली।

2. **उपाध्यक्ष**

   सूचना तथा प्रसारण राज्य मंत्री, भारत सरकार।

3. शिक्षा तथा समाज कल्याण राज्य मंत्री, भारत सरकार।

सदस्य

(क) भारत सरकार के प्रतिनिधि :—

4. सचिव शिक्षा तथा समाज कल्याण मंत्रालय । (शिक्षा विभाग)।

5. शिक्षा तथा समाज कल्याण मंत्रालय (शिक्षा विभाग) में पुस्तक प्रोत्साहन के इन्चार्ज संयुक्त सचिव।

6. निदेशक प्रकाशन प्रभाग, सूचना तथा प्रसारण मंत्रालय।

7. प्रधान सूचना अधिकारी, प्रेस सूचना ब्यरो।

8. सचिव, यूनेस्कों के साथ सहयोग के लिये भारतीय राष्ट्रीय आयोग।

9. पुस्तकाध्यक्ष, राष्ट्रीय पुस्तकालय, कलकत्ता।

10. पुस्तकाध्यक्ष, भारतीय संयुक्त सेवा संस्थान, रक्षा मंत्रालय, नई दिल्ली।

(ख) राज्यो के प्रतिनिधि

11. श्री एन० डी० सुन्दराबादीवेलू, कुलपति, मद्रास विश्वविद्यालय और अध्यक्ष, दक्षिण भाषा पुस्तकान्यास।

12. महाराष्ट्र सरकार का एक प्रतिनिधि।

13. पश्चिम बंगाल सरकार का एक प्रतिनिधि

(ग) स्वायत्त निकायों के प्रतिनिधि

14. अध्यक्ष विश्वविद्यालय अनुदान आयोग या उसका प्रतिनिधि।

15. अध्यक्ष, राष्ट्रीय पुस्तक न्यास-भारत-या उसका प्रतिनिधि।

16. निदेशक, राष्ट्रीय शिक्षा अनुसंधान, प्रशिक्षण परिषद या उसका प्रतिनिधि।

17. अध्यक्ष, भारतीय सांस्कृतिक सम्पर्क परिषद् या उसका प्रतिनिधि।

18. निदेशक, भारतीय राष्ट्रीय वैज्ञानिक प्रलेख केन्द्र या उसका प्रतिनिधि।

19. अध्यक्ष, साहित्य अकादमी या उसका प्रतिनिधि।

(घ) भारत में प्रकाशकों तथा पुस्तक बिक्रेता संघों के महासंघ के बाहर पुस्तक उद्योग तथा व्यापार के प्रतिनिधि।

20. श्री पी० एस० जयसिंधे, एशिया पब्लिशिंग हाऊस बम्बई।

(ङ) भारत में प्रकाशकों तथा पुस्तक बिक्रेता संघों के महासंघ से सम्बन्ध पुस्तक उद्योग तथा व्यापार के प्रतिनिधि।

उद्योग तथा व्यापार के प्रतिनिधि

21. श्री दीनानाथ मल्होत्रा, हिन्द पाकेट बुक, जी० टी० रोड, दिल्ली-32।

22. श्री जानकी नाथ बासु, बुकसलेण्डस् (पी०) लिमिटेड, कलकत्ता।

23. श्री एम० एन० राव, 14 खुनकुरामा चेटी स्ट्रीट, मद्रास।

लेखकों पाठकों बुधिजीवियों इत्यादि का प्रतिनिधित्व करने वाले अन्य सदस्य

24. डा० प्रेम कृपाल, अध्यक्ष, यूनेस्कों का कार्यकारी बोर्ड, 63एफ० सुजान सिंह पार्क, नई दिल्ली।

25. श्री रमेश थापर, संपादक "सेमिनार" अध्यक्ष, यूनेस्को के लिए भारतीय राष्ट्रीय आयोग का सांस्कृतिक कार्यकलापों तथा मानविकि उप-आयोग तथा निदेशक, भारत अन्तर्राष्ट्रीय केन्द्र, 40-बी० लोदी इस्टेट, नई दिल्ली।

26. श्री डी० आर० मानेकर, अध्यक्ष, यूनेस्कों के लिये भारतीय राष्ट्रीय आयोग का जन सम्पर्क उप-आयोग।

27. श्री प्राण चोपड़ा, दी सिटिजन एण्ड विकएण्ड रिव्यूह सी० 7, निजामुद्दीन पूर्व, नई दिल्ली-13

28. श्री यू० एस० मोहन राव, के-14, वेरिबल रोड, जंगपुरा, नई दिल्ली-14।

29. डा० जगजीत सिंह, अध्यक्ष तथा प्रबन्ध निदेशक, इंडियन ड्रग्ज एण्ड फर्माच्युटिकल मिमिरेड, एन०-12 नई दिल्ली, दक्षिण विस्तार, खण्ड-1 नई दिल्ली।

30. डा० के० ए० नकबी, दिल्ली स्कूल आफ इकनामिक्स दिल्ली विश्वविदयालय नई दिल्ली-7।

31. डा० एम० एस० गोरे, निदेशक, टाटा खनिजिक विज्ञान संस्थान, सायनट्राम्बे रोड, बम्बई-71।

32. डा० सी० शिवराममूर्ति, सलाहकार (संग्राहलय) राष्ट्रीय संग्राहलय, जनपथ नई दिल्ली-1।

33. प्रो० टी० एम० पी. महादेवन, निदेशक उच्च शिक्षा दर्शन शास्त्र केन्द्र विश्वविद्यालय सेन्टीनरी भवन, मद्रास विश्वविद्यालय मद्रास-5।

34. डा० प्रभाकर माचवे, सचिव, साहित्य अकादमी, रवीन्द्र भवन, फिरोजशाह रोड, नई दिल्ली।

सचिव

35 श्री अबुल हसन, विशेषाधिकारी (पुस्तक विकास) शिक्षा तथा समाज कल्याण मंत्रालय) शिक्षा विभाग।

36. समिति के अतिरिक्त सदस्यों के सहयोजन के लिये अध्यक्ष निदेश दे सकता है।

5. **बैठकें**

समिति की बैठकें तथा आवश्यक बुलाई जाएगी, परन्तु कम से कम चार मास में एक बार जरूर बुलाई जाएगी।

6. **कार्यकारी दल**

समिति ऐसे विशेष उद्देश्यों के लिए जिन्हें वह आवश्यक समझे अपने सदस्यों में से कार्यकारी दलों को नियुक्त कर सकती है। इन कार्यकारी दलों का गठन, कार्य तथा इस प्रकार का अन्य ब्यौरा प्रत्येक मामले में पृथक रूप से समिति द्वारा निर्धारित किया जाएगा।

7. इस समिति का अवधिकाल 31 मार्च, 1973 तक होगा।

आदेश

आदेश दिया जाता है कि इस संकल्प की एक एक प्रति समिति के अध्यक्ष, उपाध्यक्ष, सदस्यों, भारत सरकार के सभी मंत्रालयों और विभागों सभी राज्य सरकारों/संघ शासित क्षेत्रों/योजना आयोग मंत्री मण्डल सचिवालय, लोक सभा सचिवालय, राज्य सभा सचिवालय संसदीय कार्य विभाग, प्रधान मंत्री सचिवालय तथा राष्ट्रपति सचिवालय को भेजी जाए।

यह भी आदेश दिया जाता है कि सर्वसाधारण की सूचनार्थ इस संकल्प को भारत के राज पत्र में प्रकाशित किया जाए।

टी० आर० जयरामन, संयुक्त सचिव

समाज कल्याण विभाग

नई दिल्ली-1, दिनांक 22 जनवरी 1972

संकल्प

सं० 27/2/70-एन० एस०—इस विभाग के संकल्प संख्या 27/2/70-एन० एस० दिनांक 25 जनवरी, 1971 के सिलसिले में विशेष पोष्टिक आहार कार्यक्रम सम्बन्धी सलाहकार समिति को इस संकल्प की तारीख से एक वर्ष की अवधि के लिए निम्न-लिखित सदस्यों के साथ पुनर्गठित किया जाता है।

1. श्री पी० पी० आई० वैद्यानाथन — अध्यक्ष
   आई० सी० एस०,
   अपर सचिव, समाज कल्याण विभाग,
   भारत सरकार, नई दिल्ली।

2. डा० (श्रीमती) फूलरेणु गुह, — असदस्य
   अध्यक्ष,
   बाल कल्याण सम्बन्धी भारतीय
   परिषद्, नई दिल्ली।

3. श्रीमती मेरी क्लब्बाला जाधव, — सदस्य
   अध्यक्षा,
   समाज कल्याण की भारतीय परिषद्,
   बम्बई।

4. श्रीमती नीरा डोगरा, अध्यक्षा, — सदस्य
   केन्द्रीय समाज कल्याण बोर्ड,
   नई दिल्ली।

5. श्री वी० राधवायाह, — सदस्य
   अध्यक्ष, आंध्र प्रदेश आदिम जाति
   सेवक संघ, नेल्लोर।

6. डा० (श्रीमती) एम० खलकदीना, — सदस्य
   लेडी इर्विन कालेज, नई दिल्ली।

7. श्री मुशीर अहमद खां, — सदस्य
   अध्यक्ष मार्डन बेकरीज (भारत) लि०,
   नई दिल्ली।

8. श्री एस० नरगोलवाला — सदस्य
   अपर सचिव,
   वित्त मंत्रालय, नई दिल्ली।

9. डा० एन० ए० आगा, — सदस्य
   संयुक्त सचिव,
   सामुदायिक विकास विभाग,
   नई दिल्ली।

10. श्री जी० सी० एन० चाहल, — सदस्य
    संयुक्त सचिव, खाद्य विभाग,
    नई दिल्ली।

11. श्री टी० आर० जयरामन — सदस्य
    संयुक्त सचिव
    शिक्षा विभाग नई दिल्ली।

12. श्री एम० एम० राजेन्द्रन, — सदस्य
    सचिव तामिल नाडु सरकार,
    समाज कल्याण विभाग,
    मद्रास।

13. श्री वी० कुरियन, — सदस्य
    अध्यक्ष, भारतीय डेरी विकास निगम,
    7वां तल, यशकमल बिल्डिंग,
    बड़ौदा-5

14. श्री के० वी० नटराजन, — सदस्य
    प्रधान (खाद्य),
    योजना आयोग, नई दिल्ली।

15. डा० पी० के० केमल, — सदस्य
    कार्यकारी निदेशक,
    पूरक खाद्य तथा पोष्टिक आहार,
    खाद्य विभाग, नई दिल्ली।

16. श्री एम० सी० स्वामीनाथन — सदस्य
    सहायक निदेशक,
    पोष्टिक आहार का राष्ट्रीय संस्थान,
    हैदराबाद-7 (आंध्र प्रदेश)।

17. डा० (कुमारी) आर० करनद, सदस्य
उप सहायक महानिदेशक पोष्टिक आहार, स्वास्थ्य सेवाओं का महा-निदेशालय
नई दिल्ली ।

18. श्री पी० एन० अब्बी सदस्य
निदेशक, आदिम जाति कल्याण,
मध्य प्रदेश सरकार,
भोपाल ।

19. श्री ओ० के० मूर्ति, सदस्य
निदेशक,
समाज कल्याण विभाग,
भारत सरकार,
नई दिल्ली ।

आदेश

आदेश दिया जाता है कि उक्त संकल्प को भारत के राजपत्र में प्रकाशित किया जाए ।

पी० पी० आई० वैद्यनाथन, अपर सचिव

नौवहन तथा परिवहन मंत्रालय

(परिवहन पक्ष)

नई दिल्ली, दिनांक 24 जनवरी 1972

संकल्प

सं० 20 पी० जी० (13)/71—भारत सरकार ने नौवहन तथा परिवहन संकल्प संख्या 20-पी० जी० (9)/70 दिनांक 15 दिसम्बर 1970 के अंतर्गत जिसे नौवहन तथा परिवहन मंत्रालय के संकल्प संख्या 20-पी० जी० (9)/70 दिनांक 7 सितम्बर, 1971 यात 22 अक्तूबर 1971 द्वारा संशोधित किया गया है, पुनर्संगठितराष्ट्रीय बन्दरगाह बोर्ड के गैर सरकारी सदस्यों की अवधि 14 दिसम्बर, 1973 तक बढ़ाने का फैसला किया है ।

आदेश दिया जाता है कि संकल्प की एक प्रति बोर्ड के सदस्यों राष्ट्रपति के सचिव, प्रधान मंत्री के सचिवालय, मंत्रिमंडल सचिवालय, योजना आयोग, भारत सरकार के मंत्रालयों/विभागों और संबंधित राज्य सरकारों को भेज दी जाये ।

यह भी आदेश है कि सामान्य सूचना के लिये भारत के राजपत्र में संकल्प प्रकाशित किया जाये ।

के० शिवराज, संयुक्त सचिव

सिंचाई और विद्युत मंत्रालय

नई दिल्ली, दिनांक 25 जनवरी 1972

संकल्प

सं० वि० का० दो-34(2)/71—स्वतंत्रता मिलने के पश्चात् से देश में निर्माण के लिए एक बहुत बड़ी संख्या में सिंचाई और बहूद्देश्यीय परियोजनाएं हाथ में ली गई हैं । जबकि इन परियोजनाओं से प्राप्त सिंचाई के लाभों द्वारा देश में कृषि-उत्पादन बढ़ाने में बड़ी सहायता मिली है, परियोजना प्राक्कलनों के बार-बार संशोधन और बढ़ती हुई लागतों तथा उसके परिणामस्वरूप परियोजनाओं के पूर्ण होने एवं उनसे लाभ प्राप्त करने में विलम्ब सरकार की चिन्ता का विषय बने हुए हैं । अब तक उन कारणों का कोई वैज्ञानिक अन्वेषण नहीं हुआ है जिनसे परियोजना प्राक्कलनों के बड़ी तादाद में संशोधन हुए हैं । अतः भारत सरकार ने निर्णय किया है कि इस प्रश्न को एक विशेषज्ञ समिति को निर्दिष्ट किया जाए जिससे भविष्य में सिंचाई और बहूद्देश्यीय परियोजनाओं को तैयार और कार्यान्वित करने के लिए एक ठोस नीति बनाई जा सके ।

2. इस समिति में निम्नलिखित होंगे:—

1. श्री जे० पी० नएगामवाला, अध्यक्ष
सदस्य (पी० एण्ड पी०,
केन्द्रीय जल और विद्युत् आयोग जल स्कंधे)

2. श्री एन० सी० सक्सेना अभियंता प्रमुख सदस्य
उत्तर प्रदेश ।

3. श्री वी० सूर्यनारायण सदस्य
मुख्य अभियंता (परियोजना)
आन्ध्र प्रदेश ।

4. श्री सी० सी० पटेल, सदस्य
मुख्य अभियंता (सिंचाई परियोजना)
एवं संयुक्त सचिव सार्वजनिक निर्माण विभाग,
गुजरात सरकार

5. श्री स० के० वर्मा सदस्य
मुख्य अभियंता, मंडक परियोजना
बिहार ।

6. डा० के० सी० डामस सदस्य
मुख्य अभियंता
हिमाचल प्रदेश ।

7. श्री बी० ए० अंसारी, सदस्य
मुख्य अभियंता
जल विद्युत् परियोजना
महाराष्ट्र ।

8. श्री एस० एम० आपटे, सदस्य
मुख्य अभियंता (सिंचाई)
महाराष्ट्र ।

9. डा० एन० डील रेंगे, सदस्य
संयुक्त आयुक्त
(भूसंरक्षण एवं जल प्रबंध)
कृषि मंत्रालय ।

10. एक प्रसिद्ध अर्थशास्त्री सदस्य

11. श्री प्रेम कुमार, सदस्य
सदस्य (लेखा)
गुजरात राज्य बिजली बोर्ड ।

12. श्री ओ० पी० चड्ढा, सदस्य
मुख्याधिकारी (सिंचाई),
योजना आयोग नई दिल्ली ।

13. श्री एस० टी० वीरराघवन — सदस्य
वित्त अधिकारी,
वित्त मंत्रालय।

14. श्री बी० सेन — सदस्य-सचिव
निदेशक (आर० एण्ड सी०)
सी० डब्ल्यू० एण्ड पी० सी० (डब्ल्यू डब्ल्यू), नई दिल्ली

3. यह समिति निम्नलिखित की जांच करेगी :—

(क) सिंचाई एवं बहूद्देश्यीय परियोजनाओं का अन्वेषण करने तथा उन्हें तैयार करने और उनके बारे में व्यवहार्यता रिपोर्टें तथा प्राक्कलन और निर्माण कार्यक्रम, जिसमें लाभों का निर्धारण शामिल है तैयार करने के लिए मौजूदा प्रबन्धों की पर्याप्तता या अपर्याप्तता ;

(ख) परियोजनाओं की अनुमानित लागत में बढ़ोतरी के कारण जिनसे उनमें बार-बार संशोधन करना पड़ता है।

और निम्नलिखित की सिफारिश करेगी :—

(ग) परियोजना की व्यवहार्यता रिपोर्टें तथा प्राक्कलनों को अधिक यथार्थपूर्ण रूप में तैयार करने की पद्धतियों में उपांतरण या संशोधन और साथ ही परियोजनाओं के कार्यान्वयन की वर्तमान प्रणाली में सुधार ताकि यह सुनिश्चित हो जाए कि वे स्वीकृति अनुमानित लागतों के अन्तर्गत और उनके पूर्ण होने के अनुसूचित कार्यक्रमों के अनुसार पूर्ण हो जायेंगी।

4. जब भी कभी आवश्यक हो, समिति अन्य अधिकारियों को अपने विचार-विमर्श में भाग लेने के लिए निमंत्रित कर सकती है; यदि आवश्यक समझा जाए तो यह समिति राज्यों में सिंचाई और बहूद्देश्यीय परियोजनाओं का दौरा कर सकती है।

समिति अपनी रिपोर्ट 30 जून, 1972 तक प्रस्तुत करेगी।

आदेश

आदेश दिया जाता है कि इस संकल्प को भारत के राजपत्र के भाग-आई खण्ड-एक में प्रकाशित कर दिया जाए।

यह भी आदेश दिया जाता है कि संकल्प की एक प्रति भारत सरकार के सभी मंत्रालयों/विभागों, सभी राज्य सरकारों/संघीय क्षेत्रों तथा समिति के अध्यक्ष/सदस्यों को भेज दी जाए।

आनन्द स्वरूप शर्मा, संयुक्त सचिव

PRESIDENT'S SECRETARIAT

New Delhi, the 20th January 1972

No. 16-*Pres.*/72.—The President is pleased to approve the award of the Param Vishisht Seva Medal to the undermentioned personnel for distinguished service of the most exceptional order :—

Major General STANLEY LESLIE MENEZES, SC (IC-540), Grenadiers.

Major General WALTER ANTHONY GUSTAVE PINTO (IC-605), Guards.

Major General BEJOY MOHAN BHATTACHARJEA (IC-1338), MVC Garhwal Rifles.

Major General ARUN KUMAR BISWAS (IC-1185), AOC.

Major General VED PARKASH (MR-177), AMC.

Air Vice Marshal DEVIAH SUBIA, Vr. C.

Commodore DORAB RATANSHAW MERTA, IN.

Commodore JOHN THOMAS COSLIN PEREIRA, AVSM, IN.

Border Security Force

Shri GOLAK MAJUMDAR, Inspector General, Border Security Force.

No. 17-*Pres.*/72.—The President is pleased to approve the award of the *Bar* to the Param Vishisht Seva Medal for distinguished service of the most exceptional order to :—

Rear Admiral BANSH RAJ SINGH, PVSM, IN.

No. 18-*Pres.*/72.—The President is pleased to approve the award of the MAHA VIR CHAKRA for acts of conspicuous gallantry in the recent operations against Pakistan to :—

1. Brigadier ANANT VISHWANATH NATU (IC-4703).
(*Effective date of the award—3rd December,* 1971)

Brigadier Anant Vishwanath Natu was commanding an Infantry Brigade in the Poonch Sector on the Western Front. The enemy launched a massive attack on the night of 3rd/4th December, 1971 with two infantry brigades supported by three artillery regiments against the sector defended by his brigade. Thereafter, for four days and nights the enemy repeatedly attacked the Gurpur and Banwat features held by his brigade. Brigadier Natu planned, organised and conducted the defences with great skill and professional competence. Cool and collected, this officer inspired his command with exceptional courage and total disregard for his personal safety and repulsed the enemy attacks. In the process of heroic defence of Poonch Sector, his brigade inflicted heavy casualties on the enemy.

Throughout, Brigadier Anant Vishwanath Natu displayed exemplary courage, outstanding leadership and commendable devotion to duty.

2. Brigadier ANTHONY HAROLD EDWARD MICHIGAN (IC-4190).

Brigadier Anthony Harold Edward Michigan was commanding a Mountain Brigade on the Eastern Front during the recent operations against Pakistan. He was given the task of capturing strongly fortified and heavily defended enemy positions at Uthali and Darsana. In the attack on Uthali, when his troops were surrounded by enemy automatic and tank fire from three sides, he took personal control of the situation under a withering hail of enemy fire, stabilised the battle and put his troops in a position from where the offensive could be resumed. He conducted the battle with cool courage and disregard of his life and so inspired his troops that they took the objective by storm. Subsequently, he reintegrated his force for capturing the strongly fortified defences of Darsana, and after personally reconnoitering the area in the face of small arms and artillery fire, carried out a preliminary operation breaking through the outer crust of enemy defences. Later, he launched the main offensive and by sheer offensive spirit and motivation of troops, mounted a crushing attack on well prepared defensive positions through an extensive mine-field. He was again in the thick of the battle and with personal example inspired his troops who broke through a devastating hail of Machine Gun, Artillery and Mortar fire and gained a decisive victory. After the capture of Darsana, he advanced towards Jehinda and covering 50 kilometres in 48 hours he captured Jehinda. The enemy was taken completely by surprise and due to the speed of the advance several bridges were taken intact.

During these actions, Brigadier Anthony Harlod Edward Michigan commanded his brigade with professional skill and displayed conspicuous gallantry and exemplary leadership in keeping with the highest traditions of the Army.

3. Brigadier HARDEV SINGH KLER (IC-493) Signals.

Brigadier Hardev Singh Kler was commanding a Mountain Brigade on the Eastern Front during the recent operations against Pakistan. He led the advance from Kamalpur upto river Turag, which involved clearing of enemy opposition at Kamalpur, Bakshiganj, Jamalpur, Tangail, Mirzapur and the

west bank of River Turag, in addition to several delaying action by the enemy in between. During all these actions, Brigadier Hardev Singh Kler was personally present with the leading troops and directed the operations with complete disregard for his life. His handling of the troops during Jamalpur battle showed great professional skill and by personally going into the thick of the battle, he provided great inspiration of his troops who had laid seige behind enemy positions south of Jamalpur. Despite heavy casualties, he directed the operations so skilfully and courageously that all attempts by the enemy to break through were foiled. He inflicted heavy casualties on the enemy and captured 379 prisoners as well as large quantities of weapons and ammunition.

Throughout these operations, Brigadier Hardev Singh Kler displayed outstanding courage, inspiring leadership and complete disregard of personal safety in the face of the enemy in keeping with the best traditions of the Army.

4. Brigadier JOGINDER SINGH BAKSHI. (IC-4870).

(*Effective date of the award—7th December*, 1971)

Brigadier Joginder Singh Bakshi was commanding a Mountain Brigade during the operations against Pakistan on the Eastern Front. Between the 7th December and 16th December, 1971, the Brigade under his leadership launched a series of successful attack and captured a number of well prepared enemy localities, culminating in the capture of 'Bogra'. Brigadier Bakshi displayed professional competence of a high order and by his daring execution out-witted the opposing forces, breaking the enemy's resistence and resulting in the capture of a large number of men and equipment including the commander of 205 Brigade of the Pakistan Army.

Throughout the operation, Brigadier Joginder Singh Bakshi displayed conspicuous gallantry, determination and professional skill.

5. Brigadier JOGINDER SINGH GHARAYA (IC-1984), KC, VSM.

(*Effective date of award—6th December* 1971)

Brigadier Joginder Singh Gharaya was commanding an infantry brigade in the Eastern Front. As Brigade Commander, he planned operations with great professional skill and launched his Brigade into operations with commendable swiftness in the Jessore sector. His Brigade was attacked on four successive occasions and despite heavy casualties, his troops stood the ground due largely to his excellent tactical handling, outstanding courage, constant presence and guidance. His conduct of this operation was responsible for heavy enemy losses and their withdrawal. During the subsequent offensive operations, Brigadier Gharaya was with the leading troops when he was severely wounded by enemy fire. He refused to be evacuated till he had seen the attack through as the success of this attack was vital to our further advance in Bangla Desh.

Throughout this operation, Brigadier Joginder Singh Gharaya conducted himself with extra-ordinary courage and through his personal example inspired such spirit and confidence among troops as led to the complete success of the difficult operations.

6. Brigadier KRISHNASWAMI GOWRI SHANKAR (IC-3999).

(*Effective date of award—5th December* 1971)

Brigadier Krishnaswami Gowri Shankar was commanding an infantry brigade which was responsible for the defence of Dera Baba Nanak on the Western Front. His brigade was given the task of capturing a well prepared and heavily fortified enemy locality, which was held in strength by the enemy. He showed boldness and originality in the planning of the attack. During the attack he was always in the forefront, directing operations and exercising personal control, undeterred by heavy enemy tank, medium machine gun and artillery fire. By his presence with the forward troops, sharing their hardships and dangers, he not only inspired confidence but was able to modify the plans to ensure speed and maintain the momentum of the attack. His skill and inspiring presence ensured success of this attack with heavy losses to the enemy.

During this action, Brigadier Krishnaswami Gowri Shankar displayed conspicuous gallantry, outstanding leadership and determination.

7. Brigadier MOHINDER LAL WHIG (IC-3940).

(*Effective date of award—6th December* 1971)

Brigadier Mohinder Lal Whig was the Commander of an infantry brigade group in the Kargil Sector on the Western Front. His Brigade was assigned the task of capturing the complex of enemy posts overlooking Kargil and to advance to 'Olthing Thang'. These pickets located on dominating heights were well fortified and protected with wire obstacles and mines. Brigadier Mohinder Lal Whig planned the operation with professional competence and skill. Inspite of the altitude being over 12000 feet and the temperature twenty degrees below zero, he led his troops with determination and by his presence and cool courage inspired his men to brave the enemy shelling and small arm fire and capture thirty six enemy posts within a short period of ten days inflicting heavy losses on the enemy and capturing large quantities of arms and ammunition.

During this operation Brigadier Mohinder Lal Whig displayed conspicuous gallantry and outstanding leadership in keeping with the highest traditions of the Army.

9. Colonel UDAI SINGH (IC-4868) GR.

(*Effective date of the award—8th December* 1971)

Colonel Udai Singh was incharge of a force consisting of three companies of the Ladakh Scouts and a section each of Mortars and Medium Machine Guns which had been assigned the task of capturing the area from Chalunka to Turtok in the Kargil Sector on the Western Front. The task involved movement on manpack and animal transport mostly by night in sub-zero temperatures at an altitude up to 18000 feet through unreconnitered area. Colonel Udai Singh planned and executed the operation in meticulous detail and with professional competence. He completely out-manoeuvred the enemy, far superior in numbers, causing heavy casualties and capturing a large number of persons and considerable arms and equipment at a very little loss to his own troops. Despite no line of communication and without artillery support, he followed up the enemy and pressed home his attack against well entrenched enemy positions till Turtok and a considerable area beyond was captured. Throughout this period Colonel Udai Singh was in the fore-front sharing the discomfort and danger with his troops. By his presence and cool courage be inspired his force to attack and capture a series of formidable posts after bitter fighting and often at the point of bayonet.

Throughout the operations, which lasted ten days, Colonel Udai Singh displayed conspicuous gallantry, outstanding leadership, cool courage in the face of the enemy and also professional skill of a high order in keeping with the highest traditions of the Army.

9. Lieutenant Colonel Swai BHAWANI SINGH (IC-9015) The Parachute Regiment.

(*Effective date of award—5th December*, 1971)

On the night of 5th/6th December, 1971, Lieutenant Colonel Swai Bhawani Singh, who was commanding a battalion of the Parachute Regiment (Commandos), led his men deep into the enemy territory and for four days and nights, with complete disregard for his personal comfort and safety made skilful and relentless raids on the enemy held posts at Chachro and Virawah. He displayed great determination and zeal and directed his command with cool courage and confidence in a difficult terrain against heavy enemy small arms fire. Lieutenant Colonel Bhawani Singh's inspired leadership and personal courage led to the capture of large areas of the enemy territory, created panic and confusion among the enemy, forcing him to retreat leaving large number of prisoners and equipment.

In this operation, Lieutenant Colonel Swai Bhawani Singh set an example of personal courage, exceptional qualities of leadership and devotion to duty in the highest traditions of the Indian Army.

10. Lieutenant Colonel CHITOOR VENUGOPAL (IC-5096) Gorkha Rifles.

(*Effective date of the award—7th December*, 1971)

Lieutenant Colonel Chitoor Venugopal was commanding a battalion of the Gorkha Rifles during the operations on the Eastern Front. On the 4th December, 1971, the battalion came up against well fortified enemy defences at 'Utrali' and

'Darsana'. The position had a series of concrete pill-boxes interconnected with elaborate communication trenches. Lieutenant Colonel Chitoor Venugopal planned the attack with great professional skill. Showing complete disregard for his personal safety, he led the attack and by his presence inspired his men to achieve the objective. After the capture of these two positions, the battalion relentlessly pursued the withdrawing enemy giving him no rest or time to regroup till 'Jhenida' was captured three days later.

Throughout, Lieutenant Colonel Chitoor Venugopal displayed conspicuous bravery and devotion to duty in the best traditions of the Army.

11. Lt. Col. HANUT SINGH
(IC-6126), 17 Horse.

(*Effective date of the award—16th December*, 1971)

Lt. Col. Hanut Singh was commanding 17 Horse in the 'Shakargarh' Sector of the Western Front. On the 16th December, 1971, his regiment was inducted into the 'Basantar' river bridge-head and took up positions ahead of the infantry. The enemy launched a number of armoured attacks in strength on 16th and 17th December, 1971. Undeterred by enemy medium artillery and tank fire, Lt. Col. Manut Singh moved from one threatened sector to another with utter disregard for his personal safety. His presence and cool courage inspired his men to remain stead fast and perform commendable acts of gallantry.

Throughout this period, Lt. Col. Hanut Singh displayed conspicuous gallantry and leadership in keeping with the best traditions of the Army.

12. Lieutenant Colonel HARISH CHANDRA PATHAK
(IC-7114), Sikh Light Infantry.
(*Effective date of award—11th December*, 1971)

Lieutenant Colonel Harish Chandra Pathak was commanding a battalion of the Sikh Light Infantry. His battalion was given the task of capturing the enemy post at 'Pak Fatehpur' on the Western Front. This was a well fortified position held in strength by the enemy. During the attack, the enemy brought down very intense and accurate artillery and small arms fire on the assaulting troops inflicting heavy casualties. Lieutenant Colonel Pathak, with complete disregard for his personal safety and displaying rare courage, moved forward and led the charge and captured the objective after a fierce hand to hand fight. As soon as the objective was captured, the enemy launched two fierce counter-attacks from different directions. Lieutenant Colonel Pathak moved from one locality to another despite heavy shelling and small arms fire and encouraged his men to hold their ground and beat back the enemy attack inflicting heavy casualties.

In this action, Lieutenant Colonel Harish Chandra Pathak displayed conspicuous gallantry, exemplary leadership and devotion to duty in the best traditions of the Army.

13. Lieutenant Colonel KASHMIRI LAL RATTAN
(IC-7661), Sikh Regiment.
(*Effective date of award—3rd December*, 1971)

Lieutenant Colonel Kashmiri Lal Rattan was commanding a battalion of the Sikh Regiment in 'Punch' in the Jammu and Kashmir Sector. His battalion was assigned the task of holding a feature, which was the key to our defences in this sector. He organised the defences with professional competence and skill. From 3rd December to 6th December, 1971, the nemy launched a series of fierce attacks in strength against his defended area. On each of these occasions, Lieutenant Colonel Kashmiri Lal Rattan positioned himself in the most threatened locality and unmindful of the heavy enemy shelling and small arms fire, moved from bunker to bunker encouraging and inspiring his men to beat back the enemy attacks inflicting heavy losses.

Throughout this action, Lieutenant Colonel Kashmiri Lal Rattan displayed conspicuous bravery and exemplary leadership.

14. Lieutenant Colonel KULWANT SINGH PANNU
(IC-16-6213), Parachute Regiment.
(*Effective date of award—11th December*, 1971)

Lieutenant Colonel Kulwant Singh Pannu was commanding a battalion of the Parachute Regiment on the Eastern Front. On the 11th December, 1971 his battalion was air dropped near Tangail with the task of cutting enemy routes of withdrawal and preventing his build up at Tangail. This involved the capture of an enemy position on a vital bridge at Poongli. The drop of the battalion was widely dispersed and Lieutenant Colonel Kulwant Singh Pannu had to move from one location to another under enemy small arms fire to collect his platoons. It was entirely due to his cool courage, utter disregard for his personal safety and his timely and skilful directions that his battalion captured the enemy position on Poongli. The enemy launched a number of counterattacks in strength to recapture the Poongli position but on each occasion, under his able leadership, the battalion repulsed the attack inflicting heavy casualties on the enemy.

In this action, Lieutenant Colonel Kulwant Singh Pannu displayed conspicuous gallantry, exemplary leadership, determination and devotion to duty in keeping with the best traditions of the Army.

15. Lieutenant Colonel PREM KUMAR KHANNA
(IC-7380), Sikh Regiment.
(*Effective date of award—3rd December*, 1971)

Lieutenant Colonel Prem Kumar Khanna was commanding a battalion of the Sikh Regiment occupying a defended area in the Chhamb sector. During the battle of Chhamb, his battalion was subjected to incessant attacks in overwhelming strength by enemy Infantry and Armour, both by day and night, between the 3rd and 6th December, 1971. Lieutenant Colonel Khanna handled his battalion with cool courage. He acted with skill and imagination and displayed exemplary aggressive spirit in restoring the situation.

Throughout, Lieutenant Colonel Prem Kumar Khanna displayed conspicuous bravery and exemplary leadership.

16. Lt. Col. RAJ MOHAN VOHRA
(IC-6121), 4 Horse.

Lt. Col. Raj Mohan Vohra was commanding his troops in the 'Shakargarh' Sector of the Western Front. His regiment spear-headed the advance capturing in its wake 'Bhairo Nath', 'Thakurdwara', 'Bari Lagwal', 'Chamrola', 'Darman', 'Chakra' and 'Dehlra'. Each of these positions was fortified with tanks, missiles and mine-fields. With complete disregard for his personal safety, Lt. Col. Vohra moved well forward and provided inspiring leadership to his regiment. During the battle of 'Basantar' river, his regiments, inspired by his personal example and courage stood fast against repeated attacks by the enemy armour and destroyed 27 enemy tanks with minimal casualties to the unit.

Throughout the operations, Lt. Col. Raj Mohan Vohra displayed conspicuous gallantry and inspiring leadership in keeping with the highest traditions of the Army.

17. Lieutenant Colonel RAJKUMAR SINGH
(IC-7113), Punjab Regiment.

Lieutenant Colonel Rajkumar Singh, who was commanding a battalion of the Punjab Regiment, was assigned the task of occupying a defended position in the area Garibpur-Jaganathpur on the Eastern Front to contain the enemy intruding into the Indian territory. He planned and organised the defences held by his battalion with great skill and professional competence. The enemy attacked the area defended by his battalion, with two infantry battalions and a squadron of tanks. Lieutenant Colonel Rajkumar Singh directed his troops with great courage and confidence. With utter disregard for his personal safety, he moved from one company locality to another inspiring his junior commanders and troops. The enemy launched three determined attacks but all were beaten back with heavy losses.

Throughout, Lieutenant Colonel Rajkumar Singh displayed conspicuous courage, exemplary leadership and professional skill.

18. Lieutenant Colonel RATTAN NATH SHARMA
(IC-5270), Punjab Regiment.

(*Effective date of award—10th December*, 1971)

Lieutenant Colonel Rattan Nath Sharma was commanding a battalion of the Punjab Regiment in the Punch area in the Jammu and Kashmir Sector. His battalion was assigned the task of capturing an important enemy locality situated on a dominating feature. This was a well prepared locality held in strength by the enemy. During the assautl, the enemy brought down intense artillery and small arms fire inflicting heavy casualties on our troops. Undeterred and with complete disregard to his personal safety, Lieutenant Colonel Rattan Nath Sharma encouraged his men and by his presence and cool courage inspired them to achieve the objective.

During this action, Lieutenant Colonel Rattan Nath Sharma displayed exemplary courage and outstanding leadership.

19. Lieutenant Colonel SURINDER KAPUR
(IC-7684), Jammu and Kashmir Rifles.

Lieutenant Colonel Surinder Kapur was commanding a battalion of the Jammu & Kashmir Rifles on the Eastern Front. His battalion was given the task of taking up a defensive position in the Jessore Sector to blunt enemy attacks and inflict maximum casualties on him. Lieutenant Colonel Kapur displayed great professional acumen and leadership in deploying his battalion inspite of being under enemy artillery and small arms fire. The enemy launched five attacks, in strength, on his battalion position in three days. On each occasion Lieutenant Colonel Kapur, showing utter disregard to his personal safety moved from one locality to another exhorting his men to stand fast. Inspired by his presence and cool courage, his battalion repulsed all enemy attacks inflicting heavy casualties.

Throughout, this period, Lieutenant Colonel Surinder Kapur displayed exemplary courage and outstanding leadership.

20. Lieutenant Colonel SUKHJIT SINGH
(IC-6704), Scinde Horse.

(*Effective date of award*—11*th December* 1971)

Lt. Colonel Sukhjit Singh, was commanding an Armoured Regiment during the recent operations against Pakistan on the Western Front. On the 10th December, 1971 his regiment was deployed west of Naina Kot when the enemy launched an armoured attack in strength under cover of intense medium artillery and heavy mortar fire. In utter disregard of his own safety, Lieutenant Colonel Sukhjit Singh placed himself in the most threatened sector and directed the fire of his tanks with utmost courage and skilful leadership. Although under heavy shelling and tank fire, he opened the dupola of his tank so that he could observe and direct the fire of his tanks effectively. Due to his presence and inspiring leadership, the enemy attack was beaten off without any loss to own troops. On the 11th December, 1971, Lieutenant Colonel Sukhjit Singh personally commanded an out-flanking force and tried to surround enemy tanks. His force came under heavy medium artillery and mortar fire and the enemy tanks opened up from well prepared positions. Remaining completely unruffled, he closed in with the enemy and succeeded in destroying 8 tanks and captured one officer, two junior commissioned officers and two other ranks.

Throughout this period, Lieutenant Colonel Sukhjit Singh displayed exemplary leadership, outstanding courage and firm determination in the face of the enemy in the best traditions of the Army.

21. Lt. Col. VED PARKASH AIRY
(IC-7750), Grenadiers.

Lt. Col. Ved Parkash Airy was commanding a battalion of the Grenadiers in the battles of Bhairo Nath and Basantar river in the 'Shakargarh' Sector of the Western Front. He led his battalion with cool courage and was always in the fore-front encouraging and inspiring his men. In the battle of the 'Basantar' river, his battalion under his able leadership not only captured the enemy positions after a fierce fight but held on to them despite massive counter-attacks launched by the enemy. Lt. Col. Airy displayed utter disregard for his personal safety and despite the heavy shelling and enemy small arms fire, he went from trench to trench motivating his men. Due to his personal example and bold leadership his battalion was stead-fast and resolute.

Throughout this action Lt. Col. Ved Parkash Airy displayed conspicuous gallantry, determination and inspiring leadership in keeping with the best traditions of the Army.

22. Lieutenant Colonel VED PRAKASH GHAI
(IC-7199), Madras Regiment. (*Posthumous*)

(*Effective date of award*—15*th December* 1971)

Lieutenant Colonel Ved Prakash Ghai was commanding a Battalion of the Madras Regiment in the Shakargarh Sector of the Western Front. During the battle of 'Basantar River' having crossed the river and the mine obstacle in the face of heavy enemy opposition, his Battalion was occupying the bridge-head when the enemy mounted fierce counter-attacks. Lieutenant Colonel Ghai rallied his men and beat off repeated enemy attacks during the night. As the day dawned, the enemy again mounted a counter-attack supported by tanks. Having been under constant heavy shelling during the night, the Battalion had not completely reorganised but, as soon as the main direction of the enemy attack crystalised, Lieutenant Colonel Ved Prakash Ghai moved to the Company localities with utter disregard to his personal safety. He moved fearlessly from one position to another, directing and encouraging his men. Inspired by his personal example, bravery and leadership, the Battalion, supported by tanks, repulsed the counter attacks with heavy losses to the enemy. When, after stabilising the situation, Lieutenant Colonel Ved Prakash Ghai was returning to his Headquarters, he was seriously wounded by an enemy sheel, but he continued to direct the battle neither caring for medical attention nor for personal safety. He died of his wounds on the battle field.

In this action, Lieutenant Colonel Ved Prakash Ghai displayed conspicuous gallantry and made the supreme sacrifice in the call of duty in keeping with the highest traditions of the Army.

23. Major AMARJIT SINGH BAL
(IC-13377), 17 Horse.

(*Effective date of the award*—15*th December*, 1971)

Major Amarjit Singh Bal was commanding 'B' squadron, 17 Horse during the battles of the 'Basantar' river in the 'Shakargarh' Sector of the Western Front. On the 5th and 16th December, 1971, the enemy launched a number of armoured counter-attacks against the 'Jarpal' position. Though heavily outnumbered, Major Amarjit Singh Bal displayed exemplary courage, determination and aggressive spirit and by his personal example motivated his troops to remain steadfast and resolute and to repulse all enemy attacks inflicting heavy casualties.

Throughout this action, Major Amarjit Singh Bal displayed conspicuous gallantry, outstanding leadership and exceptional devotion to duty in keeping with the best traditions of the Army.

24. Major ANUP SINGH GAHLAUT
(IC-13792), Dogra Regiment. (*Posthumous*)

(*Effective date of award*—3*rd December*, 1971)

Major Anup Singh Gahlaut was given the task of establishing a road block deep within enemy held territory in the Laksam sector on the Eastern Front. He infiltrated his company through enemy lines, established a road block and inflicted heavy casualties on the enemy in their attempt to dislodge him from the road block. Subsequently a Company of his battalion came under heavy enemy pressure and Major Anup Singh Gahlaut volunteered to go to the assistance of the Company. In this mission, he led a platoon and successfully pinned down one enemy company by bringing effective small arms fire on them. His position was however attacked by the enemy from a different direction. Undeterred by the overwhelming superiority of the enemy, he rallied his men and succeeded in breaking the enemy attack. Having been mortally wounded in hand to hand fighting, he expired shortly after this heroic battle.

Throughout, Major Anup Singh Gahlaut displayed conspicuous bravery and exemplary leadership.

25. Major BASDEV SINGH MANKOTIA
(IC-14221), Punjab Regiment.

(*Effective date of award*—3*rd December* 1971)

Major Basdev Singh Mankotia was commanding a mixed Group of Regular Infantry and Border Security Force holding a screen position at Ranian on the Western Front. Between the 3rd and the 5th December, 1971, the enemy launched seven attacks in strength against this position, but they were repulsed with heavy casualties to the enemy. When a portion of the screen was over-run, he personally led a counter attack and regained the lost ground. Even though he was seriously wounded in the shoulder on the 3rd December, 1971, he refused to be evacuated in view of the importance of this screen position. By personal example of courage and disregard to personal safety, he inspired the man under his command to perform acts of commendable gallantry.

Throughout, Major Basdev Singh Mankotia displayed conspicuous gallantry, exemplary leadership and determination.

26. Major DALJIT SINGH NARAG
(IC-8140), Cavalry. (*Posthumous*)

Major Daljit Singh Narag was commanding a squadron of Cavalry grouped with an infantry battalion. He was assigned the task of containing the Pakistani intrusion into the Indian territory on the Eastern Front. When attacked by two enemy battalions, supported by a squadron of chaffee tanks, he skilfully and boldly manoeuvred his squadron under heavy enemy fire and engaged and destroyed the enemy tanks. With utter disregard for his personal safety and undeterred by heavy enemy fire, he directed the fire of his squadron standing on the turret of his tank. When one of the tanks of his squadron was hit, he immediately, at immense risk to himself, rushed to assist its crew in pulling out, returned to his own tank and continued to direct his squadron effectively. His courage and fearlessness so inspired his command that they successfully decimated the enemy squadron of chaffee tanks and stemmed the enemy advance. Major Narag died atop his tank due to hits from machine gun fire while leading his squadron.

Throughout this action, Major Daljit Singh Narag displayed outstanding leadership and determination. His conspicuous bravery, devotion to duty and supreme sacrifice are in the highest traditions of the Army.

27. Major DHARAM VIR SINGH
(IC-14123) Grenadiers.
(*Effective date of award—10th December* 1971)

A Battalion of the Grenadiers was given the task of capturing the enemy position at 'Chakra' on the Western Front. This was a well prepared position held in strength by the enemy and protected by wire obstacles and mine fields of 800 meters depth. During the attack, the enemy brought down intense artillery and small arms fire inflicting heavy casualties on our assaulting troops. Major Dharam Vir Singh, commanding the left forward company, undaunted by the enemy fire and his depleted strength, led his company through the minefield and by his personal example and exemplary courage inspired his men to rush the objective and capture it after a fierce hand to hand fight. The enemy subjected this position to heavy artillery bombardment and launched a counter attack in strength on the 11th December 1971. Major Dharam Vir Singh, with utter disregard for his personal safety, moved from trench to trench encouraging his men and motivating them to stand fast and repulse the attack inflicting heavy casualties. On an earlier occasion also, on the 5th December 1971, Major Dharam Vir Singh led his company with confidence and cool courage in a successful attack on a strongly entrenched enemy post at Chaman Khurd.

Throughout, Major Dharam Vir Singh displayed exemplary courage, leadership and devotion to duty in keeping with the highest traditions of the Army.

28. Major JAIVIR SINGH
(IC-14509) Sikh Regiment.
(*Effective date of award—3rd December* 1971)

Major Jaivir Singh was commanding a Rifle Company of a Battalion of Sikh Regiment holding a battalion defended area on Phagla Ridge in the Chhamb Sector on the Western Front. On the night of 3rd/4th December 1971, the enemy launched three battalion attacks supported by heavy and well coordinated artillery fire. With commendable courage, and determination, and with total disregard for his personal safety, he moved from one defended locality to another inspiring his men to beat back the enemy. On the 4th December 1971, his company locality was under heavy pressure. The enemy launched repeated attacks supported by armour and artillery but under his inspiring leadership his company stood fast and repulsed the enemy attacks inflicting heavy casualties. On the night of the 4th December, 1971, the enemy launched another battalion attack and managed to penetrate into the defences. Major Jaivir Singh immediately led a counter attack and after hand to hand fighting threw back the enemy, who withdrew leaving behind twelve dead. Undeterred by the large number of casualties among his company, he made a determined stand against another attack on the 5th December 1971. Throughout this battle, he not only kept his command intact but also aided in the recapture of a neighbouring post which had been overrun by the enemy.

Major Jaivir Singh displayed exemplary courage, determination, leadership and exceptional devotion to duty in the highest traditions of the Indian Army.

29. Major KULDIP SINGH CHANDPURI
(IC-18067), Punjab Regiment.
(*Effective date of award—5th December* 1971)

Major Kuldip Singh Chandpuri was commanding a company of a battalion of the Punjab Regiment occupying a defended locality in Laungnewala in the Rajasthan Sector. On the 5th December, 1971, in the early hours of the morning the enemy launched a massive attack on this locality with infantry and tanks. Major Chandpuri exhibited dynamic leadership in holding his command intact and steadfast. Showing exceptional courage and determination, he inspired his men moving from bunker to bunker, encouraging them in beating back the enemy till reinforcement arrived. In this heroic defence, he inflicted heavy casualties on the enemy and forced them to retreat leaving behind twelve tanks.

In this action, Major Kuldip Singh Chandpuri displayed Conspicuous gallantry and leadership.

30. Major VIJAY RATTAN CHOWDHARY
(IC-11004), Engineer Regiment (*Posthumous*)
(*Effective date of award—11th December* 1971)

Major Vijay Rattan Chowdhary was incharge of minefield clearance at 'Chakra' on the Western Front. The safe lanes had to be made with great speed to enable our tanks and anti-tank weapons to reach 'Chakra' which was in imminent danger of a counter-attack by enemy armour. With utter disregard for his personal safety, Major Chowdhary personally supervised the operation inspiring and motivating his men to their optimum efficiency. Throughout this period, the area was subjected to intense artillery, mortar and automatic fire but Major Chowdhary worked round the clock till the lanes were cleared and tanks and anti-tanks weapons reached 'Chakra'. Throughout the advance, from the 5th December onwards, Major Chowdhary displayed exemplary devotion to duty and was responsible for clearance of minefields of 1000-1500 yards depth at 'Thakurdwara' 'Lohra' and 'Basantar river'. While supervising the minefield lane near 'Basantar river' this gallant officer was killed due to enemy artillery fire.

Major Vijay Rattan Chowdhary's exceptional devotion to duty, extraordinary bravery, inspiring leadership and supreme sacrifice was in the highest traditions of the Army.

31. Captain DEVINDER SINGH AHLAWAT
(IC-19161), Dogra Regiment. (*Posthumous*)
(*Effective date of the award—5th December* 1971)

Capt. Devinder Singh Ahlawat was leading a company of a Battalion of The Dogra Regiment during an attack on the night of 5th and 6th December, 1971, for the capture of 'Dera Baba Nanak' bridgehead. His battalion had been allotted the task of capturing the East end of the bridge, the enemy defences on which were based on a series of concrete embankments having anti-tank guns and heavy and light automatics. The company led by Capt. Ahlawat came under heavy Medium Machine Gun fire from a concrete pill-box. With complete disregard to his life, Capt. Ahlawat charged the pill-box, grabbed the burning Machine Gun barrel with his right hand and threw a grenade into pillbox and silenced the gun, thus making it possible to continue the momentum of the attack and over-run the objective. In this action Capt. Ahlawat lost his life. His body was found with six bullet wounds still clutching the Machine Gun barrel.

In this operation, Capt. Devinder Singh Ahlawat displayed conspicuous gallantry, outstanding leadership and determination in the best tradition of the Army .

32. Captain PRADIP KUMAR GOUR
(IC-16177), Artillery. (*Posthumous*)
(*Effective date of award—14th December*, 1971)

Captain Pradip Kumar Gour was an air observation post pilot with an Air Observation Post Squadron, deployed on the Western Front. Throughout the operations, he flew round the clock missions deep inside enemy territory, directing artillery fire and obtaining vital information about the enemy undeterred by heavy small arms and artillery air burst fire. On the 14th December, 1971, Captain Gour was given the task of locating and registering targets deep inside enemy territory. This was an important mission vital to the success of an impending attack by own troops. While on this mission, Captain Gour saw three enemy Sabre jet aircraft operating in the area. Instead of returning to the base and avoiding the danger, he decided to continue with the mission in view of

its vital nature. He carried on with his mission evading the sabre jets who attacked him but was eventually shot down by them.

In this action, Captain Pradip Kumar Gour displayed conspicuous gallantry and extraordinary devotion to duty and made the supreme sacrifice.

33. Captain SHANKAR SHANKHAPAN WALKAR (IC-23473), Madras Regiment. (*Posthumous*)

(*Effective date of award—16th December*, 1971)

Captain Shankar Shankhapan Walkar was the Mortar Officer of a battalion of the Madras Regiment during the recent operations against Pakistan on the Western Front. On the 16th December, 1971 when the battalion reached Hingore Tar after advancing 42 miles it came under very heavy shelling from enemy positions. With utter disregard to his personal safety, Captain Walkar went to each rifle company position to tie up defensive fire tasks. In doing so, he was hit twice by splinters and sustained injuries, but he refused to be evacuated and carried on with his taks displaying outstanding courage and devotion to duty. Heavy enemy shelling continued during the night and early next morning the enemy assaulted two Company positions. Although wounded, Captain Shankar Shankhapan Walkar stuck to his job and brought very accurate mortar fire on the enemy and inflicted heavy casualties. During a subsequent attack, Captain Shankar Shankhapan Walkar inspired his men to hold fast; he himself shot at least four enemy personel and forced the enemy to pull back. He was, however, fatally wounded in this action After firing the last round, he succumbed to the injuries

Throughout, Captain Shakar Shankhapan Walkar displayed conspicuous gallantry, inspiring leadership and exemplary devotion to duty. He fought bravely to the last.

34. 2nd/Lt. SHAMSHER SINGH SAMRA (SS-22826), Guards. (*Posthumous*)

Second Lieutenant Shamsher Singh Samra was a platoon commander in a battalion of the Brigade of the Guards. His battalion was engaged in action in the Eastern Front as part of our defensive action. During the action our troops came under heavy and accurate fire from automatic weapons. Undaunted by the heavy volume of fire, Second Lieutenant Shamsher Singh Samra encouraged his men to press home the attack. When the officer was about 25 yards from the position, he received a Medium Machine Gun burst in the chest. Undeterred, he charged and destroyed the Medium Machine Gun bunker with a grenade; he then rushed to a second bunker, when he was hit by another burst as a result of which he died with the grenade in his hand. His action inspired his command and ensured success on the objective.

In this action, 2nd/Lt. Shamsher Singh Samra displayed conspicuous bravery and determination and made the supreme sacrifice.

35. JC-39248 Subedar MALKIAT SINGH Punjab Regiment. (*Posthumous*)

JC-39248 Subedar Malkiat Singh was commanding a platoon of a battalion of the Punjab Regiment which was occupying an important defended area on the Eastern Front. His position was attacked in strength by Pakistan Infantry and Armour. Subedar Malkiat Singh moved from trench to trench encouraging his men The enemy came within 50 yards and subjected his position to effective Light Machine Gun fire and grenades from covered positions. With utter disregard to his own safety, he crawled forward to engage the enemy and even though wounded, he killed two machine gunners before he was hit by an enemy tank as a result of which he died.

Throughout, Subedar Malkiat Singh displayed conspicuous bravery and leadership.

36. IC-33029 Subedar MOHINDER SINGH Punjab Regiment.

(*Effective date of award– 7th December*, 1971)

Subedar Mohinder Singh was commanding a platoon of a battalion of Punjab Regiment, in an attack on a well fortified enemy post supported by Medium Machine Guns in the Kargil Sector The attack was held up by enemy Medium Machine Guns which were effectively bringing down a heavy volume of fire. He exhorted and inspired his men by personal example to maintain the momentum of the attack, With utter disregard to his personal safety, he charged forward, destroyed one of the Medium Machine Gun bunkers and inflicted casualties on the enemy in close combat. His personal example and gallantry so inspired his men as to ensure success of the attack.

Throughout, Subedar Mohinder Singh displayed conspicuous gallantry and leadership.

37. 5032571 Havildar BIR BAHADUR PUN Gorkha Rifles

(*Effective date of award—4th December*, 1971)

The 1st Gorkha Rifles were assigned the task of capturing the enemy positions at Darsana on the Eastern Front. The enemy was holding well fortified position reinforced with machine guns and extensive mine fields. Havildar Bir Bahadur Pun was part of a Company who were given the task of capturing village Chandpur East of Darsana. On the 4th December, 1971, as the assaulting troops were moving towards the objective, they came under heavy enemy artillery and small arms fire from the entire frontage inflicting heavy casualties on own troops. Havildar Bir Bahadur Pun moved ahead of his platoon inspiring and motivating his men to advance towards the objective. On seeing the heavy machine gun post of the enemy which was responsible for causing most of the casualties amongst his men he rushed towards it through a nullah, crawled about 100 yards under heavy enemy fire, closed on to the bunker, lobbed two grenades and silenced the post. This act so inspired and motivated his men that the objective was taken within minutes.

In this action, Havildar Bir Bahadur Pun displayed conspicuous bravery, outstanding devotion to duty and complete disregard of his personal safety in the face of the enemy in keeping with the highest traditions of the Army.

38. 2550166 Havildar THOMAS PHILIPOSE Madras Regiment.

(*Effective date of award—15th December*, 1971)

Havildar Thomas Philipose was a platoon Havildar in a Battalion of the Madras Regiment during the battle of Basantar on the night of the 15th/16th December, 1971. During the assault, his platoon Commander received a bullet wound and could not proceed further Havildar Thomas Philipose then took over the command of the platoon. Casualties in the platoon were so heavy that, by the time the objective was captured, the Company strength had been considerably reduced. At this time, they were counter-attacked by enemy Infantry. Notwithstanding the depleted strength of his Platoon Havildar Thomas Philipose displayed conspicuous bravery, devotion to duty and leadership of the highest order: he led a brave counter charge with fixed bayonets with his meagre strength. He enthused and inspired this small force Although he received a severe bullet wound himself, the charge led by him was so determined and brave that the enemy got demoralised and fled.

Throughout, Havildar Thomas Philopose displayed resolute leadership under adverse conditions and set a brilliant example of courage and devotion to duty in keeping with the highest traditions of the Army.

39. 2960050 Lance Naik DRIG PAL SINGH Rajput Regiment. (*Posthumous*)

(*Effective date of award—13th December*, 1971)

Lance Naik Drig Pal Singh was commanding a section of a battalion of the Rajput Regiment during an attack on an enemy post on the Western Front. After the capture of he objective by the battalion, two enemy medium machine guns from pill boxes were still interfering with the reorganisation and inflicting casualties on our troops. Realising the importance of silencing these guns, Lance Naik Drig Pal Singh took two other ranks with him and with utter disregard for his life and safety crawled 200 yards upto the first bunker and silenced the Medium Machine Gun by lobbing a grenade. He then started crawling to the next bunker but in the process received a burst from the machine gun on his left shoulder Although bleeding profusely, he crawled to within six feet of the second bunker and was about to lob a grenade when he received a second burst of automatic fire on his chest killing him on the spot. His daring act however made the enemy to abandon the second bunker, leaving behind the machine gun and a large quantity of ammunition.

In this action Lance Naik Drig Pal Singh displayed outstanding courage and determination and made the supreme sacrifice in keeping with the highest traditions of the Army.

40. 13664646 Lance Naik NAR BAHADUR CHHETRI
Guards.

(*Effective date of award—4th December*, 1971)

Lance Naik Nar Bahadur Chhetri was part of a platoon of a battalion of the Brigade of Guards deployed at the 'Chhamb' crossing over the 'Manawar Tawi' on the Western Front. On the 4th December, 1971, the enemy launched a massive attack with a combined force of infantry and armour. Lance Naik Nar Bahadur Chhetri's position was subjected to intense artillery, mortar and automatic fire by the enemy. With complete disregard for his personal safety, Lance Naik Chhetri engaged the enemy and knocked out five enemy tanks.

In this action Lance Naik Nar Bahadur Chhetri displayed conspicuous gallantry and devotion to duty in keeping with the highest traditions of the Army.

41. 13657079 Lance Naik RAM UGRAH PANDEY
Guards. (*Posthumous*)

13657079 Lance Naik Ram Ugrah Pandey was commanding a section of a company of a battalion of the Brigade of the Guards which was engaged in an attack on an enemy post as part of our defensive action on the Eastern Front. The assaulting troops were held up by heavy and accurate fire from well fortified enemy positions. Lance Naik Pandey crawled up and destroyed in succession two enemy bunkers with hand grenades. He then took up a rocket launcher and destroyed a third bunker where he was mortally wounded and died on the spot.

Lance Naik Ram Ugrah Pandey showed exemplary valour and leadership and made the supreme sacrifice.

42. 3355332 Lance Naik SHANGHARA SINGH
Sikh Regiment. (*Posthumous*)

(*Effective date of award—17th December* 1971)

On 17th December 1971, during the attack on 'Pul Kanjri' a strong enemy position surrounded by anti-personnel and anti-tank mine, and supported by a number of Machine Guns, his platoon came under very heavy ground and Artillery fire, particularly from two Machine Guns on the left flank. Lance Naik Shanghara Singh was second-in-command of the left-flanking section which got pinned down by continuous fire from these Machine Guns. In utter disregard to personal safety, Lance Naik Shanghara Singh made a dash through the mine-field towards the Machine Gun post and hurled a grenade inside the bunker successfully silencing the gun. Then he charged to the second Machine Gun post, leapt over the loop-hole and succeeded in physically snatching the Gun. In doing so, he received a burst of fire in his abdomen, but undeterred he continued to hold the Machine Gun. The enemy was completely unnerved and fled from the bunker leaving the Machine Gun in Lance Naik Shanghara Singh's hands. Elimination of these Machine guns enabled our troops to over-run the enemy post, but Lance Naik Shanghara Singh succumbed to his injuries.

In this heroic action, Lanch Naik Shanghara Singh displayed conspicuous gallantry and exemplary dedication to duty in the face of the enemy and made the supreme sacrifice in the highest traditions of the Army.

43. 9212865 Sepoy ANSUYA PRASAD
Mahar Regiment. (*Posthumous*)

Sepoy Ansuya Prasad was a young soldier who had recently joined a battalion of the Mahar Regiment, on completion of his recruit training. His battalion was given the task of capturing an enemy position on the Eastern Front. The enemy was occupying a well fortified building which dominated the entire area around it. During the attack, the assaulting troops were held up by heavy automatic fire from enemy Machine Guns. It soon became apparent that the building would have to be neutralised before our troops could close in on the enemy bunkers surrounding it. It was decided to send a squad to get into the enemy defences and to set the building on fire. Sepoy Ansuya Prasad volunteered for the task and taking a few grenades, with utter disregard for his personal safety, crawled towards the enemy position. During the process, he was shot in both his legs but he did not abandon his mission. He succeeded in crawling up to the building and noticing a stock of ammunition in one of the rear rooms of the building selected it as his target and started crawling towards it. While doing so he received a Machine Gun burst in his shoulder. Undeterred by his wounds and though bleeding profusely he crawled up to the room with great difficulty and lobbed the grenades, setting the building on fire before succumbing to his wounds. His action forced the enemy to abandon the building and enabled our troops to capture the objective.

In this action Sepoy Ansupya Prasad displayed conspicuous gallantry and determination and made the supreme sacrifice in the call of duty.

44. 5439887 Rifleman DIL BAHADUR CHETTRI
Gorkha Rifles.

Rifleman Dil Bahadur Chettri was in a battalion of Gorkha Rifles which was given the task of clearing the enemy from Atgram on the Eastern Front. This was a well fortified position and was held in strength by the enemy. During the assault, the enemy brought down sustained and accurate fire from Medium Machine Guns inflicting heavy casualties. Rifleman Dil Bahadur Chettri, realising the importance of silencing the machine gun, in complete disregard to his personal safety, fought fearlessly charging from bunker to bunker killing eight enemy troops with his Khukri and physically capturing the Medium Machine Gun. His determination and cool courage was a source of inspiration to all ranks in his company and led to the capture of the objective.

In this action Rifleman Dil Bahadur Chettri displayed conspicuous gallantry and devotion to duty in the highest traditions of the Indian Army.

45. 2760401 Sepoy PANDU RANG SALUNKHE
Maratha Light Infantry. (*Posthumous*)

(*Effective date of award—6th December*, 1971)

During an assault by a battalion of the Maratha Light Infantry, supported by Armour, an enemy rocket launcher posed a threat to the tanks assaulting with the Infantry. Realising the danger to our tanks, Sepoy Pandu Rang Salunkhe, at great risk to his life, charged towards the rocket launcher, jumped on the enemy and physically snatched away the rocket launcher even though he received a burst of sten-gun fire at point blank ranke. He silenced the rocket launcher and made the supreme sacrifice.

In this action, Sepoy Pandu Rang Salunkhe displayed indomitable courage and determination of a very high order.

46. 5037008 Rifleman PATI RAM GURUNG
Gorkha Rifles. (*Posthumous*)

5037008 Rifleman Pati Ram Gurung was a member of a Medium Machine Gun detachment attacked to a rifle company on the Eastern Front. His company was attacked by intense and accurate Heavy Machine Gun fire from an enemy bunker. Rifleman Pati Ram Gurung immediately rushed forward and single handed charged the machine gun post firing his machine gun from the hip. As he rushed forward, he was hit by a burst from the machine gun. Though mortally wounded, he continued the charge and silenced the enemy machine gun before he fell down dead.

In this action, Rifleman Pati Ram Gurung displayed outstanding bravery in total disregard to his personal safety.

No. 19-*Pres*/72.—The President is pleased to approve the award of the MAHA VIR CHAKRA for acts of conspicuous gallantry in the recent operations against Pakistan to :—

1. Captain SWARAJ PARKASH, AVSM, IN.

Captain Swaraj Parkash Commanded INS VIKRANT which was the nucleus of the Naval interdiction and strike force operating against the enemy in the Bay of Bengal. Throughout the period of these operations, the ship was operating in most hazardous waters and was the principal target both for the enemy Submarines and Aircraft. With indomitable spirit, he launched ceaseless offensive operations against the enemy. The successful air strikes from the VIKRANT had devastating effect on ports all along the Bangla Desh coast and completely denied the enemy the use of sea and inland waterways. The complete supremacy of our Naval force symbolised by the VIKRANT paralysed the enemy, shattered his morale and considerably expedited the enemy's capitulation in the Eastern Theatre.

Captain Swaraj Parkash displayed conspicuous gallantry inspiring leadership, professional skill and devotion to duty in keeping with the highest traditions of the Indian Navy.

2. Acting Captain MAHENDRA NATH MULLA, IN.

(*Posthumous*)

(*Effective date of the award—9th December*, 1971)

Two ships of the Indian Navy under the command of Captain Mahendra Nath Mulla, Senior Officer of a Frigate Squadron were assigned the task of locating and destroying a Pakistan Submarine in the North Arabian Sea. During these operations on the night of 9th December, 1971, IN Ship KHUKRI was hit by torpedoes fired by an enemy submarine and sank. Having decided to abandon ship, Captain Mulla without regard to his own personal safety supervised the arrangements for the rescue of his ship's company in a very cool, calm and methodical manner. Even at a later stage whilst the ship was sinking, Captain Mulla showed presence of mind and continued to direct rescue operations and refused to save himself by giving his own life saving gear to a sailor. Having directed as many of his men as possible to leave the ship, Captain Mulla went back to the bridge to see what further rescue operations could be performed. In doing so, Captain Mulla was last seen going down with his ship. His action and behaviour and the example he set, has been in keeping with the highest traditions of the Service. Captain Mahendra Nath Mullah has displayed conspicuous gallantry and dedication.

3. Commander BABRU BAHAN YADAV, IN.

(*Effective date of the award—5th December*, 1971)

Commander Babru Bahan Yadav was the Squadron Commander of a division of ships which formed part of the Task Group of the Western Fleet ordered to carry out an offensive sweep on the enemy coast off Karachi on the night of 4th/5th December, 1971. Notwithstanding the threat of enemy air, surface and submarine attack, the officer led his division of ships deep into the enemy waters and encountered two groups of large enemy warships. Despite the heavy gun fire from the enemy destroyers and at great risk to his ships and personnel, Commander Yadav led his Squardon towards the enemy in a swift and determined attack. As a result, two enemy destroyers and one Mine sweeper were sunk.

In this operation, Commander Babru Bahan Yadav displayed conspicuous gallantry and leadership of a high order in the best traditions of the Indian Navy.

4. Commander KASARGOD PATNASHETTI GOPAL RAO, VSM, IN.

(*Effective date of the award—4th December*, 1972)

A small Task Group of the Western Fleet carried out an offensive sweep on the enemy coast off Karachi on the night of 4th/5th December, 1971. Notwithstanding the threat of enemy air, surface and submarine attack, Commander Kasargod Patnashetti Gopal Rao led his Task Group deep into enemy waters and succeeded in locating two groups of large enemy warships. Despite heavy gun fire from enemy destroyers, and at great risk to our ships and personnel, Commander Rao resolutely pressed home a determined attack which resulted in the sinking of two enemy destroyers and one minesweeper. After the surface engagement with enemy war ships, Commander Rao ordered his Task Group to penetrate deeper into enemy waters and successfully bombarded the port of Karachi setting fire to oil and other installations in the harbour.

In this operation, Commander Kasargod Patnashetti Gopal Rao displayed conspicuous gallantry and outstanding leadership in the best traditions of the Indian Navy.

5. Commander MOHAN NARAYAN RAO SAMANT IN.

Commander Mohan Narayan Rao Samant was the Senior Officer of a Force consisting of 4 Craft, which carried out most daring and highly successful attacks on the enemy in Mongla and Khulna Ports. Manoeuvring his Squadron through a most hazardous and unfamiliar route, Commander Samant achieved complete surprise and routed the enemy in Mongla inflicting very heavy losses. Commander Samant then proceeded to attack Khulna to destroy the enemy entrenched in strength in the port. A bitter fight ensued in which the force was subjected to incessant air attacks. Two boats belonging to the Mukti Bahini operating with the Force were sunk. In utter disregard of his personal safety, the officer not only managed to pick up a large number of the survivors but persisted with fierce attacks on the enemy with devastating results. Commander Samant had a number of narrow escapes, but refused to withdraw to safer waters. By his personal example and high qualities of leadership, Commander Samant inspired his men to rise to the occasion and fight most gallantly.

Throughout the operations, Commander Mohan Narayan Rao Samant displayed conspicuous gallantry, dedication and leadership.

6. Lieutenant Commander JOSEPH PIUS ALFRED NORONHA, IN.

(*Effective date of the award—8th December*, 1971)

Lieutenant Commander Joseph Pius Alfred Noronha was in Command of INS PANVEL. His ship formed part of the force which was entrusted with the task of attacking enemy targets in Mongla and Khulna areas during the period 8th to 11th December, 1971. The force was subjected to incessant air attacks while operating off Khulna, and the enemy shore defences also began to engage PANVEL. Lieutenant Commander Noronha handled his ship in most competent and fearless manner in very restricted waters and managed to effectively engage the enemy positions on the water front. He inspired his men by personal example. He and his ship's company fought the enemy in a close quarters situation for a prolonged period. His bravery, utter disregard to his personal safety, leadership and untiring energy inspired his men to rise to great heights. Lt. Commander Noronha succeeded in silencing enemy's shore defences and caused very extensive damage to vital enemy installations.

Throughout the operations Lt. Commander Joseph Pius Alfred Noronha, displayed conspicuous gallantry and leadership.

7. Lieutenant Commander SANTOSH KUMAR GUPTA, N.M. IN.

(*Effective date of the award—9th December*, 1971)

Lieutenant Commander Santosh Kumar Gupta, Commanding Officer of an Indian Navy Air Squadron, operating from the Aircraft carrier INS VIKRANT, led a total of eleven very successful strike missions with devastating effects on enemy ships and heavily defended shore facilities in various sectors of Bangla Desh. On 9th December, 1971, Lt. Commander Gupta pressed home a strike of Sea Hawk aircraft against enemy targets in Khulna in face of a fierce barrage of anti-aircraft gun fire. His aircraft was hit and damaged by the enemy fire. However, regardless of his personal safety and in the face of extreme danger, Lt. Commander Gupta continued to lead the attack with indomitable determination and skill and then led his divisions on board, back safety. Lt. Commander Gupta showed great courage and professional ability in landing his damaged aircraft safely on board the carrier. On the remaining missions, Lt. Commander Gupta on all occasions successfully led his squadron to attack harbour and shore installations and against enemy shipping with crippling effect, in spite of heavy ground opposition. This eventually assisted in the successful termination of resistance from the enemy in Chalna, Khulna and Chittagong area.

Throughout the operations Lt. Commander Gupta displayed conspicuous gallantry and outstanding leadership.

8. Leading Seaman C. SINGH, (OD 2), No. 87600.

Leading Seaman C. Singh (OD 2), No. 87600 was a member of a ship which formed part of a force, entrusted with the task of attacking enemy targets in MONGLA and KHULNA area during the period 8th to 11th December, 1971. The force was subjected to air attack while operating off Khulna and his boat was sunk. He was very badly wounded by shrapnel. The enemy shore defences opened fire at the survivors in the water. Leading Seaman Singh noticed that two survivors including an injured officer were finding it difficult to keep afloat. In spite of the injuries and unmindful of his personal safety, he went to their rescue and escorted the mto the shore through heavy enemy fire. On reaching the shore, inspite of his wounds, he rushed at the enemy exposing himself to the enemy fire, thereby making it possible for his two colleagues to escape from being captured by the enemy. Leading Seaman Singh was even-

tually overpowered and taken prisoner by the enemy. On the liberation of Bangla Desh, he was recovered and admitted to hospital.

Throughout, Leading Seaman C. Singh displayed conspicuous gallantry and determination.

No. 20-Pres/72.—The President is pleased to approve the award of the MAHA VIR CHAKRA for acts of conspicuous gallantry in the recent operations against Pakistan to :—

1. Group Captain CHANDAN SINGH, AVSM, Vr.C (3460), Flying Branch (Pilot).

(Effective date of the award—7th December, 1971)

Group Captain Chandan Singh is the Officer Commanding of an Air Force Station in Assam. During the recent conflict with Pakistan, he was in the forefront of the air operations conducted for the liberation of Bangla Desh. He was responsible for the planning and execution of the special helicopter operations to airlift two companies of troops to the Sylhet area. When it became necessary to overcome the obstacles in the advance of the Army towards Dacca, he planned and executed the move of nearly 3000 troops and 40 tons of equipment and heavy guns with the extremely limited helicopter force at his disposal. This operation entailed landing the troops and equipment very near heavily defended areas by night. Prior to each mission, he personally carried out reconnaissance in the face of heavy enemy fire. On the night of 7th/8th December he flew eight missions, deep into enemy territory, to supervise the progress of the helicopter airlift and to guide and inspire his pilots who were facing heavy opposition from ground fire. Later he undertook a further 18 missions in the same operation, always leading the landings at new places. On many occasions, his helicopter was hit by ground fire, but this did not deter him from further missions. The success of this major airborne operation contributed significantly to the fall of Dacca and the capitulation of the Pakistan armed forces in Bangla Desh.

Throughout, Group Captain Chandan Singh displayed conspicuous gallantry, organising ability, determination and professional skill.

2. Wing Commander ALLAN ALBERT D'COSTA, (4580), Flying Branch (Pilot).

(Effective date of award—4th December, 1971)

Wing Commander Allan Albert D'Costa, the Commanding Officer of Fighter Bomber squadron, had brought his squadron upto the highest pitch of operational preparedness. During the operations, the officer led no fewer than 15 missions deep into enemy territory against heavily defended targets, thus setting a fine example to his pilots. On 4th December, 1971, Wing Commander D'Costa was first to strike at the enemy's RISALWALA airfield. On the next day, Wing Commander D'Costa led a mission to CHISTIAN MANDI, and destroyed three tanks. On 6th December, 1971, Wing Commander D'Costa led an attack on a concentration of tanks at Dera Baba Nanak, notwithstanding intense anti aircraft fire. On 7th December 1971, Wing Commander D'Costa carried out a low leval photographic reconnaissance mission, in the SULEMANKE area and followed this up by leading an attack on the same day, on the railway station at Narowa 1, where he personally destroyed and damaged many railway wagons, as well as some installations. From 8th to 12th December, 1971, he flew a number of reconnaissance missions, bringing back a large volume of intelligence based on which air and ground operations were conducted. Thereafter, upto the end of the fighting, Wing Commander D'Costa led missions mainly against Railway targets, including the marshalling yards at RAIWING the KASUR-LAHORE railway track, destroying a large number of wagons and causing devastation at each target. All these missions were flown in the face of intense anti aircraft fire, and in some cases against Pakistani air opposition.

Throughout the operations, Wing Commander Allan Albert D'Costa displayed conspicuous gallantry, determination leadership and professional skill.

3. Wing Commander CECIL VIVIAN PARKER, VM, (4346), Flying Branch (Pilot).

Wing Commander Cecil Vivian Parker, the Officer Commanding of a fighter-bomber squadron led many deep penetration missions into enemy held territory attacking strongly defended targets. While returning from one such mission, his formation was attacked by enemy Sabre aircraft. In the ensuing fight, Wing Commander Parker shot one Sabre and heavily damaged another. In another mission, Wing Commander Parker attacked the enemy oil refinery at ATTOCK, in the face of intense anti-aircraft and small arms fire, and caused serious damage to it.

Throughout the operations Wing Commander Cecil Vivian Parker displayed conspicuous gallantry and outstanding leadership.

4. Wing Commander HARCHARAN SINGH MANGET (4666), Flying Branch (Pilot).

As the Commanding Officer of a fighter bomber squadron, Wing Commander Harcharan Singh Manget has undertaken a number of interdiction and close support missions and also many reconnissance sorties, deep into enemy territory. The information brought by Wing Commander Manget from the reconnaissance sorties has been of great value to the Army, and the Air Force in their operational planning. While on a strike mission, his aircraft was hit thrice by intense anti-aircraft fire but he pressed forward until he found that the other aircraft in his formation had also suffered serious damage. At this point, enemy interceptors came on the scene. Despite this, he extricated his formation from the hazardous situation and led it safely back to base. On landing, it was found that this aircraft was extensively damaged and major portions of their control surfaces completely shot away. Only superb flying skill a badly damaged aircraft back to a safe landing.

Wing Commander Harcharan Singh Manget has displayed conspicuous gallantry, determination, professional skill and leadership of a very high order.

5. Wing Commander MAN MOHAN BIR SINGH TALWAR (4573), Flying Branch (Pilot).

Wing Commander Man Mohan Bir Singh Talwar, Commanding Officer of a Bomber Squadron led five day and night bombing missions against very heavily defended enemy targets within the first 10 days of operations. On one of these missions, Wing Commander Talwar inflicted very severe damage to the Pakistani Air Force installations at Sargodha. In a daylight mission in the Chhamb area, in support of the army, Wing Commander Talwar attacked four enemy gun positions near the Munawar Tawi river and effectively silenced three of them facilitating the advance of our troops in difficult terrain. Both these targets were heavily defended; the latter was close to an enemy fighter base from where interception was also likely. Despite this, Wing Commander Talwar pressed home his attacks with great determination and much success. His conduct was an inspiration to the crews of the other aircraft, which he was leading.

The bold leadership, tenacity of purpose, flying skill and conspicuous gallantry displayed by Wing Commander Man Mohan Bir Singh Talwar were largely responsible for the many successes of his squadron.

6. Wing Commander RAMESH SAKHRAM BENEGAL, AVSM, (4220), Flying Branch (Pilot).

As the Officer Commanding of an operational reconnaissance squadron, Wing Commander Ramesh Sakhram Benegal has carried out a very large number of missions over enemy territory and obtained vital information about enemy Air Force and other installations. These missions entailed flying deep into enemy territory and to heavily defended targets. The information brought back from these missions facilitated the planning of army, Air Force and Naval operations and thus directly contributed to the attrition of the Pakistani war machine. It is further to the credit of Wing Commander Benegal that he never returned from any of these innumerable missions without having achieved his object in full measure. While flying repeatedly deep into enemy territory Wing Commander Ramesh Sakhram Benegal displayed conspicuous devotion to duty and professional skill of a very high order.

7. Wing Commander SWAROOP KRISHNA KAUL, (4721), Flying Branch (Pilot).

(Effective date of the award—4th December 1971)

At the outbreak of hostilities, Wing Commander Swaroop Krishna Kaul, the Commanding Officer of a fighter bomber squadron volunteered for an urgent task to photograph certain areas which were badly needed in order to finalised our Army'

snassault plans. The officer carried out four missions deep into enemy territories to cover the heavily defended sectors of Comilla, Sylhet and Saidpur. At times, Wing Commander Kaul had to fly as low as 200 feet over the most heavily defended enemy locations. Undaunted, he flew through these barrages, making repeated runs in each of his missions, and successfully completed the task. On 4th December, 1971, Wing Commander Kaul again volunteered for another task, to photograph the Tezgaon and Kurmitola airfields. His reconnaissance flights over these two airfields, in the face of the most sustained and heavy enemy ground fire stand out as acts of heroism, extreme gallantry and devotion to duty. In addition to his reconnaissance exploits, Wing Commander Kaul led the very first eight aircraft strike mission over Dacca. In this raid, his formation encountered four enemy aircraft near the target area. With exemplary leadership, Wing Commander Kaul manoeuvred his force in such a manner that two of the enemy aircraft were shot down and the other two fled. The target thus became clear for attack.

Throughout the period of operations Wing Commander Swaroop Krishna Kaul displayed conspicuous gallantry, determination and professional skill.

8. Wing Commander VIDYA BHUSHAN VASISHT, (4584), Flying Branch (Pilot).

(*Effective date of the award—3rd December* 1971)

Wing Commander Vidya Bhushan Vasisht, the Commanding Officer of an operational squadron, led a group of heavy bombers of his squadron to attack an important enemyfuel and ammunition dump at Changa Manga forest on the night of 3rd December, 1971. In spite of very heavy enemy ground fire, Wing Commander Vasisht pressed home the attack, and caused severe damage to the target. Again, on the next night, Wing Commander Vasisht led another raid to the same target and succeeded in causing further heavy damage in the face of intense enemy ground fires. On the night of 5th December, 1971, Wing Commander Vasisht led a formation of his bombers, this time to attack enemy positions in the Haji Pir Pass in Pakistan-occupied Kashmir. The difficulties and dangers of this operation were due as much to the great volume of ground fire in the target area, as to the hazards of flying and leading his formation at low level through mountainous terrain. Inspite of these hazards, Wing Commander Vasisht pressed home the attack and achieved marked success in hitting the enemy's positions. In addition to these, Wing Commander Vasisht led many other missions deep into enemy territory where opposition could be expected from fighter aircraft and anti-aircraft fire. In all these raids, Wing Commander Vasisht completed the tasks assisgned to him without any loss to our aircraft.

Wing Commander Vidya Bhushan Vasisht has displayed leadership, exceptional devotion to duty, and conspicuous bravely in repeatedly leading attacks against heavily defended enemy targets, night after night.

9. Squadron Leader MADHAVENDRA BANERJI VM, (4898), Flying Branch (Pilot).

Squadron Leader Madhavendra Banerji, a senior pilot in a fighter bomber squadron, led no fewer than 14 missions within the first week of the recent conflict with Pakistan against enemy targets, most of them in support of our Army in the Chhamb battles. During these missions, Squadron Leader Banerji destoryed two enemy tanks and two guns On these occasions, Squadron Leader Banerji was personally responsible for attacking the enemy in the face of heavy ground fire, thus relieving pressure on our own troops.

Squadron Leader Madhavendra Banerji has displayed conspicuous gallantry and skill in repeatedly attacking enemy forces in the face of extremely heavyground fire.

10. Squadron Leader RAVINDER NATH BHARDWAJ, (5001), Flying Branch (Pilot).

(*Effective date of award—5th December*, 1971)

Squadron Leader Ravinder Nath Bhardwaj, a senior pilot in a fighter-bomber squadron, has led a number of operational missions against a variety of enemy targets. On 5th December, 1971, he led a raid on an enemy airfield. Although the target was heavily defended by anti-aircrft, and small arms fire, he pressed home the attack. Sqn. Ldr. Bhardwaj himself set fire to an enemy heavy transport aircraft in one of his attacks, and eventually led his mission safely back to base. On 7th December, 1971, he led another mission, this time to a heavily defended power station. Here too, his missions succeeded in causing heavy damage, without any loss to our aircraft. On 10th December, 1971, he led a close support mission in the Chhamb area. During the first attack, his aircraft as well as that of his number two were hit by ground fire, and as they pulled out of the attacks they were engaged by enemy Sabres. Sqn. Ldr. Bhardwaj guided his number two out of danger and then returned to the fray, shooting down a Sabre which crashed inside our lines near the Chhamb bridge. By this time he was alone, but he returned to the attack against Pakistani tanks and troops and caused extensive damage to these targets before bringing his damaged aircraft back to base.

Squadron Leader Ravinder Nath Bhardwaj has displayed conspicuous gallantry and leadership in the face of heavy odds which are in the highest traditions of the Air Force.

No. 21-Pres./72.—The President is pleased to approve the award of the MAHA VIR CHAKRA for acts of conspicuous gallantry in the recent operations against Pakistan to :—

1. Assistant Commandant RAM KRISHNA WADHWA, 31st Battalion, Border Security Force (*Posthumous*)

(*Effective date of the award—10th December*, 1972)

The Border Security Force picket at Raja Mohtam on the Western Front had been occupied by the enemy on the 5th December, 1971. Shri Ram Krishna Wadhwa, Assistant Commandant, was assigned the task of recapturing the picket. He has only two platoons at his disposal. He moved his platoons to the forming up place inspite of very heavy enemy shelling and machine gun fire and led the force in an attack against a much larger and well entrenched enemy force. During the assault, his troops were fired upon from all sides and his attack seemed to be failing. Undaunted and with utter disregard for his personal safety, Shri Ram Krishna Wadhwa led his troops gallantly through heavily mined area and under intense and accurate fire. His courage and personal example inspired his men to close in with the enemy and capture the objective inflicting heavy loss on the enemy. On the 10th December 1971, the enemy launched a determined counter attack in strength under cover of intense artillery and mortar fire. Shri Ram Krishna Wadhwa showed exemplary courage and utter disregard to his personal safety in going from trench to trench encouraging his men in repulsing the enemy attack with heavy losses. However, while moving from bunker to bunker he was mortally wounded by enemy shelling and succumbed to his injuries.

In this action Assistant Commandant Ram Krishna Wad displayed exemplary courage, leadership and indomitable s and devotion to duty of a very high order.

No. 22-Pres./72.—The President is pleased to approve award of the *BAR* to MAHA VIR CHAKRA, for conspicu gallantry in the recent operations against Pakistan to :—

1. Brigadier ARUN SHRIDHAR VAIDYA, MVC, AVSM, (IC-1701)

Brigadier Arun Shridhar Vaidya was Commander of an Armoured Brigade in the 'Zafarwal' Sector during the operations against Pakistan on the Western Front. He moved his Brigade swiftly to get to grips with the enemy, and took the enemy tanks by surprise. He employed his tanks relentlessly and aggressively and helped the division to maintain contant pressure and momentum of advance against the enemy. In the battle of 'Chakra' and 'Dehira' the going was difficult due to deep minefield and terrain. In a cool and confident manner, Brigadier Vaidya undertook the crossing through the minefield. He personnally moved forward, disregarding personal safety. Through his inspired leadership, the entire squadron pushed through the lane and quickly deployed itself to meet the enemy's counter-attacks. But for his judicious yet aggresive employment of armours, it would have been difficult for the division to advance about 20 Kilometres in enemy territory in so short a time. During the battle of 'Basantar' he again displayed his professional skill and superb leadership. He got his tanks through one of the deepest mine-fields, expanded the bridgehead and repulsed a strong enemy counterattack. In this battle, 62 enemy tanks were destroyed and the rest limped back in retreat.

Throughout, Brigadier Arun Shridhar Vaidya displayed outstanding courage, great professional skill, indomitable will, foresight and immagination in fighting against the enemy in keeping with the best traditions of the Army.

2. Brigadier SANT SINGH, MVC, (IC-5479)

Brigadier Sant Singh, MVC, while commanding a sector on the Eastern Front achieved spectacular results with a mixed force having only one regular battalion, advancing thirty-eight miles almost on foot, to secure Mymensingh and Madhopur in eight days. During this advance, inspite of very stiff opposition from the enemy, he cleared heavily defended positions at several places. Throughout these actions, Brigadier Sant Singh personally led and directed the troops, exposing himself to enemy Medium Machine Gun fire and shelling. His personal gallantry, leadership, skilful handling of meagre resources, audacity, improvisation and maximum use of local resources were responsible for the successful and rapid advance against much stronger enemy in well prepared defensive positions.

Throughout, Brigadier Sant Singh displayed conspicuous gallantry and inspiring leadership in keeping with the highest traditions of the Army.

3. Wing Commander PADMANABHA GAUTAM, MVC, VM, (4482),

Flying Branch (Pilot)

(*Effective date of the award—5th December*, 1971)

Wing Commander Padmanabha Gautam, Commanding Officer of a bomber squadron led many missions deep into enemy territory. Notable among these are two raids, on the night of the 5th and 7th December, 1971 when Wing Commander Gautam led attacks on Mianwali airfield. On both these occasions, he and his formation were met with intense anti-aircraft fire. Despite that, the target was attacked with great precision, at low level, and heavy damage was inflicted. On the other missions, Wing Commander Gautam carried out rocket and four gun attacks on railway marshalling yards in the Montgomery-Raiwin area with conspicuous success

Throughout the operations, Wing Commander Padmanabha Gautam displayed conspicuous gallantry exemplary flying skill and leadership in the highest traditions of the Air Force.

4. Major CHEWANG RINCHEN, MVC, (IC-16224),

The Ladakh Scouts

Effective date of the award—8th December, 1971)

Major Chewang Rinchen of the Ladakh Scouts was commander of the force assigned the task of capturing the Galunka complex of enemy defences in the Partappur Sector. Each of these nine enemy strong points were held by one to two platoons and fortified with mines and wire obstacles. This operation was planned and executed with professional competence and great zeal. Under most adverse weather conditions, Major Rinchen led his command displaying aggressive spirit and cool courage, fighting from bunker to bunker, exhorting and encouraging his men to destroy the enemy, making the operation a complete success.

In this action, Major Chewang Rinchen displayed inspiring leadership, indomitable courage, initiative and exceptional devotion to duty in the highest traditions of the Indian Army.

The 4th February 1972

No. 23-*Pres.*/72.—The President is pleased to confer the "Territorial Army Decoration" for meritorious service on the undermentioned commissioned officers of the Territorial Army :—

Major M. RAMAMOHAN RAO (TA-40177), Artillery.

Major K. NARASIMHA VITTAL (TA-40499), Artillery.

Captain HARIBHAGWAN TIWARI (TA-40592), Artillery.

Major RAYMOND REUPEN (TA-40006), Infantry.

Major RAMPAL SINGH MANN (TA-40254), Infantry

Major HARI MOHAN CHATTERJEE (TA-40534), Infantry.

Major JAGAT JIT SINGH BHALLA (TA-(M)-1006), A.M.C.

No. 24-*Pres.*/72.—The President is pleased to award the Police Medal for gallantry to the undermentioned officer of the Border Security Force :—

Name and rank of the officer

Shri Pratap Singh Mehta,

Assistant Commandant,

19th Battalion,

Border Security Force

2. This award is made for gallantry under rule 4(i) of the rules governing the award of the Police Medal.

No. 25-*Pres.*/72.—The President is pleased to award the Police Medal for gallantry to the undermentioned officer of the Border Security Force :—

Name and rank of the officer

Shri Ram Mehar Singh,

Head Constable

104th Battalion,

Border Security Force

2. This award is made for gallantry under rule 4(i) of the rules governing the award of the Police Medal and consequently carries with it the special allowance admissible under rule 5, with effect from the 24th April, 1971.

No. 26-*Pres.*/72.—The President is pleased to award the Police Medal for gallantry to the undermentioned officer of the Andhra Pradesh Police :—

Name and rank of the officer

Shri Dodla Nagabhushana Rao,

Inspector of Police, (*Officiating*)

District Guntur,

Andhra Pradesh

Statement of services for which the decoration has been awarded.

In 1967, the extremists had made Guntur as the centre of their activities. In April, 1970, the extremists committed a sensational dacoity in Talarlapalli village in which a rich Zamindar was killed with spears and his property was looted. Shri Dodla Nagabhushana Rao was detailed for conducting investigations and to arrest the accused.

On the night of 9th September, 1970, information was received by the police that a small gang of the extremists armed with bombs was roaming about in Nallamalai forest. Shri Rao immediately marched to the forest with some Constables. After traversing a distance of about two miles, the police party divided itself into two groups. Shri Rao took over the command of the police party which was sent to the Southern side. When the police party headed by Shri Rao reached near a rivulet, they saw some persons going on a footpath. Shri Rao asked these persons to stop, but the members of the gang threw bombs on the police. Shri Rao immediately took position behind the bushes and asked the extremists to surrender. But the extremists, instead of surrendering themselves, threw more bombs on the police. Shri Rao fired three bullets from his revolver and killed three extremists. Police recovered arms and ammunition from the place of the incident.

In the above incident, Shri Dodla Nagabhushana Rao exhibited exemplary courage, determination and outstanding leadership.

2. This award is made for gallantry under rule 4(i) of the rules governing the award of the Police Medal and consequently carries with it the special allowance admissible under rule 5, with effect from the 9th September, 1970.

P. N. KRISHNA MANI, *Jt. Secy to the President*

MINISTRY OF LAW AND JUSTICE

(Legislative Department)

New Delhi, the 19th January 1972

RESOLUTION

No. F.4(1)/70-OL.—In partial modification of the Resolution No. W.4(1)/70-OL, dated the 10th January, 1972, reconstituting the Advisory Committee in Hindi for the Ministry of Law and Justice, the Government of India have decided that Shri Devendra Satpathy, M.P. Lok Sabha, should also be a Member of the said Committee in addition to the Members whose names have already been notified.

ORDER

ORDERED that a copy of this Resolution be communicated to all State Governments and Union Territory Administrations, Prime Minister's Secretariat, Cabinet Secretariat, Department of Parliamentary Affairs, Lok Sabha Secretariat, Rajya Sabha Secretariat, Planning Commission, President's Secretariat, Comptroller and Auditor General, Accountant General, Central Revenues and all Ministries and Departments of the Government of India.

ORDERED also that the Resolution be published in the Gazette of India for general information.

E. VENKATESWARAN, Dy. Secy.

MINISTRY OF FINANCE

(Department of Economic Affairs)

New Delhi, the 18th January 1972

No. F.2(19)-NS/71.—The President hereby makes the following rules further to amend the Post Office Savings Bank (Cumulative Time Deposits) Rules, 1959, namely :—

1 (1) These rules may be called the Post Office Savings Bank (Cumulative Time Deposits) Amendment Rules, 1972.

(2) They shall come into force on the date of their publication in the official Gazette.

2. In the Post Office Savings Bank (Cumulative Time Deposits Rules, 1959 (hereinafter referred to as the said rules), in sub-rule (2) of rule 4, after clause (b), the following clause shall be inserted, namely :—

"(c) In the case of a 15-year account, be converted into a 10-year account."

3. In sub-rule (a) of rule 11 of the said rules, for the words "deposits made into the account" the words "balance as on date of application"shall be substituted.

A. V. SRINIVASAN, Under Secy.

MINISTRY OF AGRICULTURE

(Department of Agriculture)

RESOLUTION

New Delhi, the 24th January 1972

No. 8-18/71-FD.—The Indian Forests yield the important minor forest produce 'Resin Gum' from the pine forests which is an outstanding example of an industrial potential on which a number of chemical products are based, giving a range of commercial items like rosin, turpentine and rosin and pinene derivatives. The versatility of rosin and turpentine for diverse industrial uses (such as paper, paint, soaps, cosmetics, printing inks, adhesives oils etc.) opens up wide horizons and new vistas for diversification. A coordinated and integrated approach supported by intensive research is, therefore, considered necessary for the overall development on both fronts, *i.e.* production and utilization. This question was considered in all its aspects at the 'Sympine' Conference which was inaugurated by Minister for Agriculture in New Delhi on the 13th April, 1971.

2. The Government of India have now decided to set up a Committee to be called the "Central Coordination Committee for Rosin and Turpentine Industry' to give necessary direction to the various recommendations of the Conference on the subject.

3. *Composition of the Central Coordination Committee*

The composition of the Central Coordination Committee hereafter called the Coordination Committee shall be as under :—

1. Inspector General of Forests—*Chairman.*
2. President, F.R.I. & Colleges, Dehra Dun—*Vice-Chairman*
3. Associations of paper, paint soaps, cosmetics, printing inks, adhesives, essential oils & manufacturing units.—One representative from each association or manufacturing unit.
4. Forest Departments of resin producing States—Chief Conservators of Forests of J&K, H.P. & U.P.
5. General Managers of Resin processing units—1. General Manager of Government Rosin Factory, Nahan (H.P.). 2. General Manager of Government Rosin Factory, Bilaspur (H.P.). 3. General Manager, Indian Turpentine & Rosin Co., Ltd. P.O. Clutterbeukjung, Bareilly (U.P.)
6. Representatives of terpene chemical producing units—One representative *viz.* M/s. Camphor and Allied Products.
7. Directorate-General of Technical Development—One representative.
8. Asstt. Inspector-General of Forests (Forest Industries)—*Secretary.*

Functions of the Committee

The functions of the Committee will be as under :—

(a) Implementation of different recommendations of the "Sympine Conference;

(b) Reviewing periodically the progress made and the future action proposed from time to time, for the healthy growth of the rosin and turpentine industry for the overall benefit of the country.

(c) Any other related matter.

Intially the Committee will function till the end of December, 1975, and would meet once in six months.

ORDER

ORDERED that a copy of the Resolution be communicated to all concerned.

ORDERED also that the Resolution be published in the Gazette of India.

RANJIT SINH, Dy. Secy.

MINISTRY OF EDUCATION & SOCIAL WELFARE

(Department of Education)

New Delhi, the 24th January 1972

RESOLUTION

No. F.21-10/71-INC.—The General conference of Unesco, at its 16th session, held in Paris in October-November 1970, proclaimed 1972 as "International Book Year"

considering the importance of the written word for the progress of human civilization,

considering also that books and periodicals, along with the other material means of expressing thought, play an essential role in social life and its development,

considering that they perform a fundamental function in the realization of Unesco's objectives namely peace, development, the promotion of human rights, and the campaign against racialism and colonialism,

noting that Unesco's basic role in this field is to promote the writing, production and distribution of books, particularly on the spirit of the United Nations Charter and the Constitution of Unesco,

noting that international non-governmental organizations of authors, publishers, librarians, booksellers and other professional bodies have expressed interest in an International Book Year to focus public attention on the role of books in society,

2. The General Conference invited Member States, together with competent and interested internation non-governmental organisations to initiate and carry out programmes of activities designed to promote the writing, production, circulation and distribution of books and to make International Book Year a national reading year; to establish committees, in co-operation with National Commissions for the preparation and conduct of International Book Year on a national basis; to formulate the principles of book policies, taking into account the objectives of Unesco and the particular role of the printed word for the transmission of knowledge and the stimulation of ideas; to encourage appreciation, particularly among young people, of the best in thought, philosophy and literature by making books generally and cheaply available.

3. In view of the importance of the promotion and development of Books in India, the Government of India have decided to undertake a comprehensive programme of action for the International Book Year. As suggested by UNESCO, with a view to enlist the co-operation of non-governmental organisations, and the publishing and printing industries in India as well as State Governments, and to co-ordinate the activities for the celebration of International Book Year the Government of India have decided to constitute a "National Committee for the International Book Year, 1972".

4. The Committee will consist of the following :—

Chairman

1. Minister of Education & Social Welfare, Government of India.

Vice-Chairman

2. Minister of State for Information & Broadcasting Government of India.

3. Minister of State for Education & Social Welfare, Government of India.

Members

A. *Rep esentatives of the Government of India*

4. Secretary, Ministry of Education & Social Welfare, (Department of Education).

5. Joint Secretary in charge of Book Promotion in the Ministry of Education & Social Welfare (Departmen of Education).

6. Director, Publications Division, Ministry of Information and Broadcasting.

7. Principal Information Officer, Press Information Bureau.

8. Secretary, Indian National Commission for Cooperation with Unesco.

9. Librarian, National Library, Calcutta.

10. Librarian, United Service Institute of India, Ministry of Defence, New Delhi.

B. *Representatives of the States*

11. Shri N. D. Sundaravadivelu, Vice-Chancellor, Madras University and Chairman, Southern Languages Book Trust.

12. One representative of the Government of Maharashtra.

13. One representative of the Government of West Bengal.

C. *Representatives of Autonomous Bodies*

14. Chairman, University Grants Commission or his nominee.

15. Chairman, National Book Trust—India, or his nominee.

16. Director, National Council of Educational Research and Training or his nominee.

17. Chairman, Indian Council for Cultural Relations or his nominee.

18. Director, Indian National Scientific Documentation Centre, or his nominee.

19. Chairman, Sahitya Akademi or his nominee.

D. *Representatives of the Book Industry and Trade outside the Federation of publishers & Booksellers Associations in India*

20. Shri P. S. Jayasinghe, Asia Publishing House, Bombay.

E. *Representatives of the Book Industry & Trade affiliated to the Federation of Publishers & Booksellers Associations in India*

21. Shri Dina Nath Malhotra, Hind Pocket Books, G. T. Road, Delhi-32.

22. Shri Janki Nath Basu, Booklands (P) Ltd., Calcutta.

23. Shri M. N. Rao, 14. Sunkurama Chetti Street, Madras-1.

F. *Other members representing authors, readers, intellectuals, etc.*

24. Dr. Prem Kirpal, Chairman, Executive Board of Unesco, 63-F, Sujan Singh Park, New Delhi.

25. Shri Romesh Thapar, Editor, "Seminar", Chairman, Cultural Activities and Humanities Sub-Commission of the Indian National Commission for Unesco, and Director, Indian International Centre, 40-B, Lodi Estate, New Delhi.

26. Shri D. R. Mankekar, Chairman, Mass Communication Sub-Commission of the Indian National Commission for Unesco, 64-F, Sujan Singh Park, New Delhi.

27. Shri Pran Chopra, The Citizen and Weekend Review, C-7, Nizammuddin East, New Delhi-13.

28. Shri U. S. Mohan Rao, K-14, Birbal Road, Jangpura, New Delhi-14.

29. Dr. Jagjit Singh, Chairman and Managing Director, Indian Drugs and Pharmaceuticals Limited, N-12, New Delhi Southern Extension Part I, New Delhi-49.

30. Dr. K. A. Naqvi, Delhi School of Economics, University of Delhi, Delhi-7.

31. Dr. M. S. Gore, Director, Tata Institute of Social Sciences, Sion-Trombay Road, Chembur, Bombay-71.

32. Dr. C. Sivaramamurti, Adviser (Museums), National Museums, Janpath, New Delhi-1.

33. Prof. T. M. P. Mahadevan, Director, Centre of Advanced Studies in Philosophy, University Centenary Building, Madras University, Madras-5.

34. Dr. Prabhakar Machwe, Secretary, Sahitya Akademi, Rabindra Bhawan, Feroz Shah Road, New Delhi.

Secretary

35. Shri Abul Hasan, Special Officer (Book Promotion) Ministry of Education & Social Welfare (Department of Education).

The Chairman may direct the co-option of additional members to the Committee

5. *Meetings*

The Committee shall meet as often as may be necessary but not less than once in four months.

6. *Working Groups*

The Committee may appoint Working Groups from out of its membership for such special purposes as it may consider necessary. The composition, terms of reference, and such other details about the Working Groups shall be prescribed by the Committee separately in each case.

7. The term of the Committee will be up to 31st March 1973.

ORDER

ORDERED that the Resolution be communicated to Chairman/Vice-Chairman, Members of the Committee, all Ministries and Departments of the Government of India, All the State Governments/Union Territories, Planning Commission, Cabinet Secretariat, Lok Sabha Secretariat, Rajya Sabha Secretariat, Department of Parliamentary Affairs, Prime Minister Secretriat and President's Secretariat.

ORDERED also that the Resolution be published in the Gazette of India for general information.

T. R. JAYARAMAN, Jt. Secy.

(Department of Social Welfare)

New Delhi-1, the 22nd January 1972

RESOLUTION

No. 27/2/70-*NS*.—In continuation of this Department Resolution No. 27/2/70-NS, dated the 25th January, 1971, the Advisory Committee for the Special Nutrition Programme is reconstituted with the following members for a period of one year from the date of this Resolution.

Chairman

1. Shri P. P. I. Vaidyanathan, ICS Additional Secretary, Department of Social Welfare, Government of India, New Delhi.

Members

2. Dr. (Smt.) Phulrenu Guha, President, Indian Council for Child Welfare, New Delhi.
3. Smt. Mary Clubwala Jadhav, President, Indian Council of Social Welfare, Bombay
4. Smt. Neera Dogra, Chairman, Central Social Welfare Board, New Delhi.
5. Shri V. Raghavaiah, President, Andhra Pradesh Adimjati Sevak Sangh, Neelore.
6. Dr. (Mrs.) M. Khalakdina, Lady Irwin College, New Delhi
7. Shri Musheer Ahmed Khan, Chairman Modern Bakeries (India) Ltd, New Delhi.
8. Shri Nargolwala, Additional Secretary, Ministry of Finance, New Delhi.
9. Dr. N. A. Agha, Joint Secretary, Department of Community Development, New Delhi.
10. Shri G. C. N. Chahal, Joint Secretary, Department of Food, New Delhi.
11. Shri T. R. Jayaraman, Joint Secretary, Department of Education, New Delhi.
12. Shri M. M. Rajendran, Secretary to the Government of Tamil Nadu, Social Welfare Department, Madras.
13. Dr. V. Kurien, Chairman, Indian Diary Development Cooperation, 7th Floor, Yashkamal Building, Baroda-5.
14. Shri K. V. Natarajan, Chief (Food), Planning Comission, New Delhi
15. Dr. P. K. Kymal, Executive Director, Subsidiary Food & Nutrition, Department of Food, New Delhi
16. Dr. M. C. Swaminathan, Assistant Director, National Institute of Nutrition, Hyderabad-7 (Andhra Pradesh).
17. Dr. (Miss) R. Karnad, Deputy Assistant Director General (Nutrition), Directorate General of Health Services, New Delhi.
18. Shri P. N. Abbi, Director, Tribal Welfare, Government of Madhya Pradesh, Bhopal.
19. Shri O. K Moorthy, Director, Department of Social Welfare, Government of India, New Delhi.

ORDER

ORDERED that the above Resolution be published in the Gazette of India.

P. P. I. VAIDPANATHAN, Addl. Secy.

MINISTRY OF SHIPPING AND TRANSPORT

(Transport Wing)

New Delhi, the 24th January 1972

RESOLUTION

No. 20*PG*(13)71.—The Government of India have decided to extend up to the 14th December, 1973 the term of the non-official members of the National Harbour Board as reconstituted *vide* Ministry of Shipping and Transport Resolution No. 20PG(9)/70, dated the 15th December, 1970, and modified by Ministry of Shipping and Transport Resolutions No. 20PG(9)/70, dated the 7th September, 1971 and the 22nd October, 1971.

ORDER

ORDERED that a copy of this Resolution be communicated to the members of the Board, Secretary to the President, Prime Minister's Secretariat, Cabinet Secretariat, Planning Commission, Ministries/ Departments of the Government of India and the State Governments concerned.

ORDERED also that the Resolution be published in the Gazette of India for general information.

K. SIVARAJ, Jt. Secy.

MINISTRY OF IRRIGATION AND POWER

New Delhi, the 26th January 1972

RESOLUTION

No. DW.II-34(2)/71.—Since Independence, a large number of irrigation and multipurpose Projects have been taken up for construction in the country. While the benefits of irrigation accruing from these projects have greatly helped in increasing agricultural production in the country, the mounting costs and the frequent revision of the project estimates and consequent delay in the completion of the projects and accrual of the benefits there from have been causing great concern to Government. There has been no scientific investigation so far into the causes leading to the large number of revisions in project estimates. The Government of India have, therefore, decided to refer this question to a Committee of experts so that a sound policy could be framed for formulation and implementation of future irrigation and multipurpose projects.

2. The Committee will consist of the following :

Chairman

1. Shri J. P. Naegamvala, Member (P&P), CW&PC (WW).

Members

2. Shri N. C. Saksena, Engineer in Chief U.P.
3. Shri V. Suryanarayana, Chief Engineer (Projects), Andhra Pradesh.
4. Shri C. C. Patel, Chief Engineer (Irrigation Projects) and Joint Secretary to Government, PWD, Gujarat.
5. Shri U. K. Varma, Chief Engineer, Gandak Project Bihar.
6. Dr. K. C. Thomas, Chief Engineer, Himachal Pradesh.
7. Shri B. A. Ansari, Chief Engineer, Hydro Projects, Maharashtra.
8. Shri S. S. Apte, Chief Engineer, (Irrigation), Maharashtra.
9. Dr. N. D. Rege, Joint Commissioner (Soil Conservation & Water Management), Ministry of Agriculture.
10. A well known economist.
11. Shri Prem Kumar, Member (Accounts), Gujarat State Electricity Board.
12. Shri O. P. Chadha, Chief (Irrigation), Planning Commission, New Delhi.
13. Shri S. T. Veeraraghavan, F.O., Ministry of Finance.

Member-Secretary

14. Shri B. Sen, Director (R&C), CW&PC (W.W), New Delhi.

3. The Committee will examine :

(a) the adequacy or otherwise of the existing arrangements for investigation and formulation of irrigation and multipurpose projects, preparation of feasibility reports and estimates thereof and construction programme including assessment of benefits;

(b) the reasons for rise in the estimated costs of projects leading to their frequent revision; and recommend.

(c) modification or revision in procedures for more realistic preparation of project feasibility reports and estimates as also improvement in the present system of implementation of projects to ensure their completion within the sanctioned estimated costs and according to the scheduled programmes of completion.

4. The Committee may invite, as and when necessary, other officers to participate in its discussions; it may visit irrigation and multipurpose projects in the States, if considered necessary. The Committee will submit its report by 30th June, 1972.

ORDER

ORDERED that the Resolution be published in the Gazette India, Part I, Section 1.

ORDERED also that a copy of the Resolution be communicated to all Ministries/Departments of the Government of India, all State Governments/Administration of Union Territories and the Chairman/Members of the Committee.

A. S. SHARMA, Jt. Secy.

PRINTED BY THE MANAGER, GOVERNMENT OF INDIA PRESS, FARIDABAD
AND PUBLISHED BY THE MANAGER OF PUBLICATIONS, DELHI, 1972